इतिहाससंग्रह ॥

संक्षिप्तशब्द ॥

दे० = देखो

क० = कथा

भूमिका ॥

हिन्दी भाषा की पुस्तकों में बहुधा स्थानोंपर इतिहास और वंशावली की आवश्यकता होती है और बहुत से पारिभाषिक शब्द पड़ते हैं जिनके समझाने के हेतु गुरु की आवश्यकता होती है यातो पढ़नेवाला आपही बहुतसी पुस्तकोंका वेत्ताहो तो काम चलसक्ता है इस कारण सुगमता के हेतु इस पुस्तक (इतिहाससंग्रह) की रचना बड़े परिश्रम से कीगई-इस पुस्तक में देवताओं और पौराणिक पुरुषों का संक्षेपवृत्तान्त और वंशावली और बहुतसे पारिभाषिक शब्दों, भूलोक, स्वर्गलोक और व्रतोंका वर्णन है और सुगमता यह है कि इसका सूचीपत्र वर्णमालानुसार लिखागया है-

वर्णमालानुसार इतिहाससंग्रह का सूचीपत्र॥

इतिहाससंग्रह॥

श्रीगणेशजी॥

नाम–गणराज, गजमुख, लम्बोदर, विनायक, द्वैमातुर, एकदन्त, हेरम्ब, विघ्नविनाशक–

भुजा–चार पिता–शिव माता–पार्वती भाई–षण्मुख, कृतमुख–

स्त्री–बुद्धि, सिद्धि (विश्वरूप की कन्या)–

पुत्र–क्षेम (सिद्धिसे), लाभ (बुद्धिसे) वाहन–मूषक–

जब गणेशजी का जन्म हुआ तो सर्व देव स्तुत्यर्थ आये उनके साथ शनैश्चर भी था सबने गणपति का दर्शन किया परन्तु शनि अपना मुख पृथ्वी की ओर किये बैठा रहा इसका कारण पार्वतीजी ने पूछा शनिने उत्तर दिया कि जब मैं विष्णुतप करता था तो अपनी स्त्री को भी नहीं देखताथा इसकारण से मेरी भार्याने शाप दिया कि जिसको तुम देखोगे वह शिररहित होकर मृतक होजायगा–इस को सुनकर श्रीपार्वतीजी ने कहा तुम गणपति मुख

देखो कुछ हानि नहीं शनिने ज्योंही गणेश मुख देखा त्योंही उनका शिर कट कर गिरपड़ा—पार्वती जी विलाप करने लगीं देवगण पुष्पभद्रा नदी के तट पर गये और सोते ऐरावत का शिर लाकर गणेश के धड़ पर जोड़दिया तभी से गजमुख कहलाये—और शनि पार्वती के शापसे लंगड़े होगये—

एक समय गणेश जी पवँरि पर बैठेथे परशुराम शिवशिष्य हरके दर्शनार्थ अन्तःपुरमें जायाचाहतेथे गणेशने उनको जानेसे रोका इसकारण दोनों में युद्ध हुआ और गणेशजी का एक दांत इसी युद्ध में टूटा और एकदन्त कहाये—

एक समय श्रीशिवने स्वामिकार्त्तिक और गणेशजी से कहा कि जो पृथ्वी का परिक्रमा करके प्रथम मेरे पास पहुँचेगा वह प्रथम पूज्य होगा जब अपने अपने वाहन पर आरूढ़ होकर भूमिकी परिक्रमा के अर्थ दौड़े गणेशजी पीछे रहकर सशोच हुये और दयालु नारदके उपदेश से रामनाम लिखकर और उसका परिक्रमा करके शिवनिकट प्रथम पहुँचे और प्रथम पूज्य हुये और स्वामिकार्त्तिक तिसके पश्चात् पहुँचे और निराशहोकर क्रौंचपर्वत को अपना निवासस्थान नियत किया—

विष्णु ॥

नाम—हरि, कमलापति, केशव, चक्री, गदाधर, शार्ङ्गधर, गरुड़ध्वज, भगवान्, पद्मनाभ, विश्वम्भर, श्रीधर, नारायण आदि सहस्रनाम—

भुजा—चार चिह्न—भृगुलता (भृगुकथा देखो) वर्ण—श्याम

वसन—पीताम्बर शय्या—शेषनाग स्त्री—लक्ष्मी

स्थान—क्षीरसागर, वैकुण्ठ— वाहन—गरुड़, रथ (चार घोड़ोंका जिनके नाम यह हैं शैव्य, सुग्रीव, मेघपुष्प, वलाहक और सारथी दारुक हैं)

अस्त्र—सुदर्शनचक्र, शार्ङ्गधनुष, कौमोदकी गदा, नन्दक खड्ग—

वर्णित है कि जब भगवान् की इच्छा सृष्टि उत्पन्न करने की हुई तो प्रथम कालमें उनकी नाभि से कमल उत्पन्न हुआ और इससे सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा हुये– और कर्णमल अर्थात् खूंट से मधु और कैटभ दैत्य हुये और हरिकरसे वध हुये और इसीसे मधुसूदन और कैटभजित् नाम हुआ–

अवतार–२४ जिनमें १० मुख्य हैं और जिनमें यह (*) चिह्न है–

१ सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, सनातन जिनकी अवस्था उनके पिता ब्रह्मा के वरसे सदा ५ वर्षकी रहतीहै और ब्रह्मचर्यपूर्वक सदा योगाभ्यासी रहते हैं–

२ * वाराह–इस रूपसे पाताल से पृथ्वी को लाये (वाराहकथा देखो)

३ यज्ञपुरुष–यह रूप धरकर राजाओं को यज्ञमार्ग (यज्ञविधि) दिखलाया–

४ हयग्रीव–(शरीर मनुष्यवत् और मुख अश्ववत्) यह अवतार ब्रह्माको वेद पढ़ाने के अर्थ हुआ था–

५ * नरनारायण–यह अवतार तपमार्ग दिखाने के अर्थ बद्रिकाश्रममें हुआ (रुचि–पिता, आकूती–माता)

६ कपिलदेव–सांख्यशास्त्र का उपदेश अपनी माताको लोक हितार्थ किया (कपिलकथा देखो)

७ दत्तात्रेय (अत्रिसुत)–राजा अलर्क और प्रह्लाद को वेदान्त पढ़ाने के अर्थ हुआ–

८ ऋषभदेव (इन्द्रकी कन्या चित्रदेवीसे)–यह रूपधर जड़ सृष्टिका वृत्तान्त वर्णन किया–

९ पृथु–गऊरूप पृथ्वीसे ओषधी और अन्नादि दुहा–(पृथुकथा देखो)

१०* मत्स्य–राजा सत्यव्रत और सप्तऋषियोंको नौकापर बिठालकर ज्ञानोपदेश किया–(मत्स्यकथा दे०)

११ * कच्छप—समुद्र मथते समय मन्दराचल निज पृष्ठपर धारण किया—
(कच्छप क० दे०)

१२ धन्वन्तरि—(देववैद्य)—एक घट अमृतसे पूर्ण लियेहुये समुद्र से निकले
(कच्छप क० दे०)

१३ मोहिनी—इस रूपसे असुरों से अमृत ले देवों को दिया—और उनको मदिरा पिलाया—(क० दे०)

१४ * नृसिंह—हिरण्यकशिपु को वध प्रह्लाद की रक्षाकिया (क० दे०)

१५ * वामन—राजाबलि को छला (क० दे०)

१६ हंस—सनत्कुमार को ज्ञानोपदेश किया—

१७ नारद—पंचरात्र की रचनाकी जिसमें वैष्णव धर्म वर्णित है—(क० दे०)

१८ हरि—गजको ग्राहसे बचाया—

१९ * परशुराम—दुष्ट क्षत्रियों के वधार्थ (क० दे०)

२० * रामचन्द्र—रावणवधार्थ (क० दे०)

२१ वेदव्यास—१८ पुराण और महाभारतादि रचनार्थ (क० दे०)

२२ * कृष्ण—कंसवधार्थ (क० दे०)

२३ बौद्ध—जीवहिंसानिषेधार्थ (क० दे०)

२४ * कल्की—म्लेच्छवधार्थ होगा (क० दे०)

ब्रह्मा ॥

नाम—विधि, चतुरानन, धाता, परमेष्ठी, हिरण्यगर्भ, आत्मभूत, स्वयम्भू, आदिकवि, सावित्रीपति, कमलज (विष्णु नाभि कमलसे उत्पन्नहुये)

भुजा—चार—

मुख—चार—४ वेदके कथनार्थ हुआ—ब्रह्माके प्रथम एक शीशथा जब सावित्री

को उत्पन्न करके उससे भोगकी इच्छाकी तो द्विशिर हुये जब उसके पीछे दौड़े तो त्रिशिरहुये–इसी भांति चतुरानन और पंचानन भी हुये अर्थात् जितनी वार कुदृष्टि की उतनेही मुखहुये–पांचवें शिरको भैरवरूप शिवने अपने अंगुष्ठ से काट डाला (भैरव क० दे०)

वाहन–हंस स्त्री–सरस्वती–जिसके नाम–शारदा, गिरा, विधात्री, सावित्री, ब्राह्मी आदिहैं–और वाहन इनका हंसिनी है जिससे काकभुशुंडिकी उत्पत्ति है–
पुत्री–सरयू नदी (जिसको वशिष्ठ याचनपर उत्पन्न किया) गंगा नदी (भगीरथ के प्रार्थना से भूतल में आई)

वंशावली

- नारायण की नाभि से
  - कमलदल
    - ब्रह्मा
      - सनकादि ४ पुत्र
      - भृकुटीसे
        - शिव
          - गणेश
          - षण्मुख
          - कृतमुख
      - नारद
      - भृगुआदि ७ ऋषि
      - कश्यप
        - हिरण्यकशिपु
          - प्रह्लाद
            - विरोचन
        - हिरण्याक्ष
        - आदित्य १२
        - देवगण
      - कामदेव
      - दक्षराज
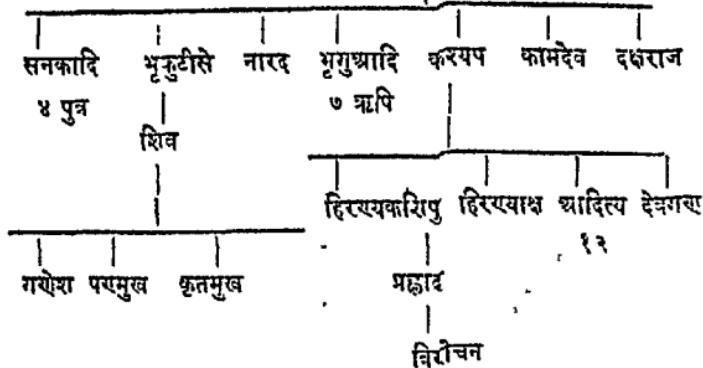
महादेव ॥

नाम—हर, महेश, भव, त्रिपुरारि, शूली, चन्द्रमौलि, गंगाधर, पंचानन, रुद्र, गिरीश, नीलकंठ आदि सहस्र नाम हैं—

पिता—ब्रह्मा—जब ब्रह्माके कहनेपर सनकादि पुत्रोंने सृष्टि रचना अंगीकार नहीं किया तो क्रोधयुक्त होकर अजने एक पुरुष अपनी भृकुटी से उत्पन्न किया और वह उत्पन्न होतेही रुदन करनेलगा—इस कारण इनका नाम रुद्र हुआ और सृष्टिके उत्पत्ति की आज्ञा पाया—और भूत प्रेतादि सृष्टि उत्पन्न किया परन्तु उनसे अप्रसन्नहो ब्रह्माके निकटगये और कहा कि मेरी सन्तान दुःखद होतीहै ब्रह्माने आज्ञा दिया कि तपके पश्चात् सृष्टि करो तो सन्तान उत्तम होगी—

रुद्र ११ हैं—पशुपति, भैरव, रुद्र, विश्व, विशेष, अघोर, रूप, त्र्यम्बक, कपर्दी, शूली, ईशान इन अवतारों को शिवने दैत्यवधार्थ धारणकिया जब देवता उनसे परास्त होगये थे—

रुद्राणी ११ हैं—धी, धृति, उष्णा, उमा, न्यूना, श्रुति, इला, अम्बा, इरावती, सिद्धा, दीक्षा—

नाम	कारणनाम—

त्रिपुरारि—त्रिपुरके दैत्योंका वध करना—(त्रिपुर क० दे०.)

कपाली—एक समय पार्वतीजीने नारद के कहनेपर शिवजी से पूछा कि आपके कंठमें मुंडमाला क्योंहै शिवजीने उत्तरदिया कि तुम मेरी भक्ताहो जब २ तुम्हारा देहान्त होता है तब २ प्रेमवश तुम्हारे मुंडों को पहिनता जाताहूं—पार्वतीजीने विनय किया कि तुम्हारा शरीर क्यों नहीं छूटता उत्तर दिया कि मैं बीजमंत्र जानताहूं पार्वती

जी भी उस मंत्रको विनयपूर्वक सीखकर अमर हुई और इसी मंत्रको श्रीशुकदेवजी शुकशरीर में सुनकर अमर हुये–

गंगाधर–जब भगीरथ गंगाजी को भूतल में लाये तो उसके धार के वेग रोकने के हेतु अपने शिरपर शिवने धारण किया–

नीलकंठ–जब समुद्र मथने से हलाहल उत्पन्न हुआ तो देवगण को विकल देख शिवजी ने रा अक्षर कहकर पीलिया और मकार कहकर परमानन्द को प्राप्तहुये और ,वह कालकूट राम नाम प्रभाव से कंठदेश में स्थितरहा और शिवकंठ नीलाहुआ–

चन्द्रमौलि–चन्द्रमा तिलक में है इससे यह नाम हुआ–

मुख–पांच–

नयन–प्रतिशिर तीन–परन्तु तीसरा नेत्र जो ब्रह्मांड में है क्रोध समय खुलताहै जिसका तेज सूर्य समान है–

जनेऊ–सर्प तिलक–चन्द्रमा वाहन–नन्दी नाम वृप

अस्त्र–त्रिशूल, वज्र, धनुप, परशु, नागपाश–

स्त्री–पार्वती (पार्वती क० दे०)

पुत्र–गणेश, स्वामिकार्तिक, कृतमुख (सती से) महावीर (अंजनी से)

लिंगपूजनका कारण यह है–सती के देहान्त पश्चात् मुनिवनों में नग्न विचरतेथे मुनियों की स्त्रियां कामातुर हो उनसे लिपटगईं इस कारण मुनियों के शापसे लिंग गिरपड़ा जगत्पूज्य होनेके कारण उनके लिङ्गकी भी पूजा होने लगी–

१२ ज्योतिर्लिङ्गोंकेनाम– प्रतिष्ठा कारण–

१ सोमनाथ–सौराष्ट्र नगर (काठियावार) में जब चन्द्रमा का तेज दक्ष शापसे न्यून होगया तब इस लिङ्गको स्थापितकर चन्द्रकुण्ड भी बनाया–

२ मल्लिकार्जुन–श्रीनगर (कश्मीर) में पर्वतके ऊपर स्कन्धने स्थापित किया–

३ महाकाल–उज्जयिनी में यह रूप धारण कर दूषण दैत्यका वधकिया–
इसकारण इस लिङ्गको लोगोंने स्थापित किया–

४ ॐकारनाथ–विंध्याचल पर्वत पर नर्मदा तटपर विंध्यगिरिने सुमेरु प-
र्वतको परास्त करने हेतु स्थापित किया–(अगस्त्य क० दे०)

५ केदारेश्वरनाथ–केदारस्थान में जो हिमालय पर्वत पर है नरनारायण ने
स्थापन किया–

६ भीमशंकर–कामरूप देशमें भीम दैत्य वधार्थ शिवने रूप धारण किया
और भीमशंकर नाम लिङ्गसे मपूजित हुये–

७ विश्वेश्वरनाथ–यह रूप शिवने महाप्रलयकाल में धारणकर काशी को
त्रिशूल पर उठाकर बचाया–

८ त्र्यम्बक–यह अवतार गौतमी नदीके तीर गौतमके पापनाशार्थ हुआ–

९ वैद्यनाथ–(बैजनाथ)–यह लिङ्ग चिताभूमि अर्थात् वीरभूमि में है
(वरुण क० दे०)

१० नागेश्वर–वैश्यपति शिवभक्तने यह लिङ्ग दारुकवन (अरब) में स्थापन
किया (दारुक दैत्य क० दे०)

११ रामनाथ–(रामेश्वरनाथ)–श्रीराम ने सेतुबंध के समय स्थापित किया–

१२ घुस्मेश्वर–दक्षिणमें देवगिरि पर्वत पर एकग्राम में यह लिङ्ग स्थापित
है–(सुधर्मा नामी ब्राह्मणके दो स्त्री थीं छोटी घुस्मा नामी
के पुत्रको उसकी सवतिने वधन किया और घुस्मेश्वर ने
सजीव कर दिया)–

नाम उपलिङ्ग १२	स्थान–
१ सोमेश्वर, अनेकेश–	मही सागर पर (अरबसमुद्र)

नाम उपलिङ्ग–	स्थान
२ रुद्र–	भृगुकक्षा में
३ दुग्धेश–	तथा
४ कर्दमेश–	तथा
५ भूमेश–	तथा
६ भीमेश्वर–	तथा
७ लोकनाथ–	तथा
८ त्र्यम्बक–	तथा
९ वैजनाथ–	तथा
१० भूतेश्वर–	तथा
११ गुप्तेश्वर–	तथा
१२ व्याघ्रेश–	तथा

नाम लिङ्गोंका पूर्वमें ॥

काशीमें–अविमुक्तेश्वर, वृद्धकाल, कृत्तिवासेश्वर, नितभांडेश्वर, दशहयमेधेश्वर, मणिकर्णेश्वर, तारेश्वर, गोप्रेक्षेश्वर, महाभूतेश्वर, केदारेश्वर, रामेश्वर, वटकेश्वर, पूरेश्वर, सिद्धनागेश्वर–

काशीकेमुख्य लिंग–विश्वेश्वरनाथ, त्रिपुरासुर, केशवमुख, लोकार्कहर, कृत्तिवासेश्वर, वृद्धकालकेश्वर, कालेश्वर, कालेशेश्वर, पर्वतेश्वर, पशुपति, केदारेश्वर, कामेश्वर, शंभुत्रिलोचन, चंडेश्वर, गरुडेश्वर, गोकर्णेश्वर, नन्दिकेश्वर, भीतिकेश्वर, भारभूतिपति, मणिकर्णेश्वर, रत्नेश्वर, नर्मदेश्वर, लांगलेश्वर, वरुणेश्वर, शनीश्वर, सोमेश्वर, जीवेश्वर, रवीश्वर, संगमेश्वर, हरीश्वर, हरिकेश्वर, शैलपर्वेश्वर, कुंडकेश्वर, यक्षेश्वर, सुरेश्वर, शक्रेश्वर, मोक्षेश्वर, रमेश्वर, तिल

भांडेश्वर, गुप्तेश्वर, मध्यमेश्वर, भूमीश्वर, वुभेश्वर, शुक्रेश्वर, तटकेश्वर, धन्वे-श्वर, त्रिसंध्येश्वर, ऋषीश्वर, भुवेश्वर, महादेवेश्वर, कपर्देश्वर, नीलेश्वर, शरे-श्वर, ललितेश्वर, त्रिपुरेश्वर, हरेश्वर, वाणेश्वर, श्रीश्वर, रामेश्वर-

प्रयाग में लिंग-ब्रह्मेश्वर, सोमेश्वर, भारद्वाजेश्वर, माधवेश, नागेश्वर, संकठेश्वर—

पत्तनमें-मृगेश्वर, दूरेश्वर, वैजनाथ, नागेश्वर, सिद्धेश्वर, कामेश्वर त्रिमले-श्वर, व्यासेश्वर, भांडेश्वर, हुंकारेश्वर, कुमारेश्वर, शुक्रेश्वर, वटेश्वर, सूर्येश्वर, भूमेश्वर, भूतेश्वर, ज्ञानेश्वर, पुरेश्वर, कोटेश्वर, स्वभेश्वर, कर्दमेश्वर, अचलेश्वर-

पुरुषोत्तमपुरी में-भुवनेश्वर-

दक्षिण में ॥

चित्रकूट में मंदाकिनी पर-मत्तगयन्द, अत्रीश्वरनाथ-

संकर्षण पर्वतपर-कोटेश्वर- गोदावरीपर-पशुपति-

कालींजरपर्वतपर-नीलकण्ठ-

नर्मदातटपर-अवतारेश्वर, परमेश्वर, सुरेश्वर, ब्रह्मेश्वर, रमेश्वर, विमले श्वर, मदनेश्वर, कुमारेश्वर, पुंडरीकपति, मंडपेश्वर, तीक्ष्णेश्वर, धनुर्द्धरेश्वर, शूलेश्वर, कुम्भेश्वर, कुवेरेश्वर, भीमेश्वर, सूर्येश्वर, नागेश्वर, रामेश्वर, नन्दे-श्वर, कंटकेश्वर, चन्द्रेश्वर, घृतकेश, सुरतेश्वर, वरचलेश्वर, सोमेश्वर, मंगले-श्वर, हरेश्वर, इन्द्रेश्वर, दयेश्वर, नन्दिकेश्वर, कपीश्वर (पवनेश्वर)—

पश्चिम में ॥

द्रुपदपुरी में-रामेश्वर, कालेश्वर- मथुरा में-गोपेश्वर, रंगेश्वर-

कान्यकुब्ज अर्थात् कन्नौज के निकट-मदारेश्वर-

द्वारका में–द्वारकेश्वर–
पश्चिम समुद्र तटपर–गोकरण अर्थात् महाबल–

उत्तरमें॥

नैमिपक्षेत्रमें–ललितेश्वर– गोकर्णक्षेत्रमें–दधीचेश्वर–चन्द्रभाल–
सुरप्रयागमें–ललितेश्वर, देवेश्वर– सुरप्रयाग के उत्तर–रुद्रेश्वर–
कनखल क्षेत्र में–दक्षेश्वर, विल्वेश्वर—
नील शैल पर–नीलेश्वर–त्रिमूर्तेश्वर, नन्दीश्वर, भैरवेश्वर, शालिहोत्रेश्वर, चन्द्रेश्वर, सोमेश्वर, पवनेश्वर, लक्ष्मणनाथ—
नैपाल में–पशुपति नाथ, मुक्तनाथ—

शिवके दश मुख्य अवतारों के नाम–

नाम अवतार–	नाम शक्ति–
१ महाकाल–	महाकाली–
२ तार–	तारा–
३ बालि–	भुवनेश्वरी–
४ विघ्नेश–	विद्या–
५ भैरव–	भैरवी–
६ छिन्नमस्तक–	छिन्नमस्तका–
७ धूमावत–	धूमावती–
८ वगलामुख–	वगलामुखी–
९ मातंग–	मातंगी–
१० कमल–	कमला–

अवतारों के नाम ॥

नाम–	कारण वा संक्षेपवृत्तान्त–
१ रुद्र–	देवगण दुःखनाशार्थ–
२ स्कन्ध–	तारक, अंधक और त्रिपुरवधार्थ–
३ सद्योजात–(बालरूप)	ब्रह्माको सृष्टि करने की आज्ञादी और उनके चारपुत्र–सनन्दन, नन्दन, विश्वनन्द, उपनन्द थे–
४ श्यामरूप–	ब्रह्माजी के दर्शनार्थ–
५ रूप–	यह अष्ट अवतार पृथ्वी, अग्नि, आकाश, यज्ञ, वायु, चन्द्रमा, सूर्य और जल रूपसे स्थित हैं–
६ ईशान	
७ शर्व	
८ भव	
९ उग्र	
१० भीम	
११ पशुपति	
१२ महादेव–	
१३ वैवस्वतमनु–	ब्रह्मारक्षार्थ वाराह कल्प में–
१४ सारभ–	जीवसुखार्थ
१५ जगाक्ष–	तथा
१६ दधिवाहन–	तथा
१७ सोमसुरमा–	तथा
१८ लोकलेश–	तथा
१९ नन्दीश्वर–	क० दे०

नाम-	कारण-वा कथासंक्षेप वृत्तान्त-
२० भैरव-	क० दे०
२१ वीरभद्र-	क० दे०
२२ शरभरूप-	क० दे०
२३ यक्षरूप-	क० दे०
२४ प्रह्लादमुनि-	विष्णुमद शान्तार्थ-
२५ महावीर अथवा कपीश-	क० दे०
२६ महेश-	क० दे०
२७ वैश्यरूप-	क० दे०
२८ कृष्णदर्शन-	क० दे०

२९ ब्राह्मणरूप-ऋषभ मुनिके शिष्य महापुरुष के कष्टनिवारणार्थ-

३० हंसरूप-आहुक और आहुकी भीलके वरदानार्थ (जो दूसरे जन्म में नल वा दमयन्ती हुये-)

३१ भिक्षुक-जब विदर्भ देशके राजा सत्यरथ को शाल्वने मारडाला तो उसकी गर्भवती रानी वनको भागगई जहां पर उसके पुत्र उत्पन्न हुआ और जलपीते समय ग्राहने रानीको खालिया तिस बालकके रक्षार्थ यह रूप धारणकर एक बालक युक्त ब्राह्मणीसे पालन कराकर और उसका नाम चित्रगुप्तरख विदर्भ का राज्यदिया और उस ब्राह्मणीकापुत्र शुचिव्रत उसका मंत्रीहुआ-

३२ इन्द्र (नरजरेश्वर)-व्याघ्रपाद के पुत्रने अपनी माता से गोदुग्ध मांगा परन्तु दरिद्रता के कारण जब न दे सकी तो वह बालक दूधार्थ शिवतप करने लगा और इन्द्रशिवने उसका मनोरथ पूर्ण किया-

३३ जटिलअर्थात् जटाधारी–गिरिजाको तप करते समय परीक्षाके पश्चात् विवाहार्थ वरदिया–

३४ नाटक (नर्त्तकनाथ)–हिमाचल और मैनाको इसरूप से नाच गा प्रसन्न कर गिरिजा को निज विवाहार्थ कांक्षा किया–

३५ किरात–अर्जुनने कौरवों को परास्त करने के हेतु शिव तप किया किरात शिवनेतप परीक्षा ले उनको पशुपति धनुष दिया जिससे उनका मनोरथ पूर्णहुआ–

३६ गोरखनाथ–यह अवतार योगशास्त्रके प्रचारार्थ हुआ उनके शिष्यों में गोपीचन्द्र मुख्य था–

३७ शंकर–अद्वैत अर्थात् संन्यास मत के उपदेश वा प्रचारार्थ–

३८ वामदेव–चारशिष्य–विरज, विवाह, विशोक, विश्वभावन उत्पन्न कर योगशिक्षा की–

३९ तत्पुरुष–पीतवास २१ वें कल्प में यह रूप धार कर अपने चारपुत्रों को योग शास्त्रका उपदेश किया–(योगप्रचारार्थ)–

४० अघोर–परिव्रत २२ वें कल्प में सृष्ट्योत्पत्ति अर्थ ब्रह्मा को आज्ञादिया–

४१ ईशान–विश्वरूप २३ वें कल्पमें ब्रह्माको अपने चारपुत्रों (जटी, मुंडी, शिखंडी, अर्द्धमुंडी) सहित दर्शन दे उनको बुद्धि वा विद्या वर दिया–

४२ व्यास–इसरूपसे वेदरचना की–

४३ श्वेत–कलियुगके आदि में अपने ४ शिष्यों श्वेत श्वेत, श्वेताश्व, श्वेत, लोहित के द्वारा संसारमें योग प्रकटकिया–

४४ सुतार–अपने ४ शिष्यों–दुंदुभि, सत्यरूप, ऋचीक, केतुमान द्वारा व्यासधर्म प्रचार किया–

४५ मद्यन—शुक्र व्यासने पुराणों के प्रचार हेतु शिवजी का ध्यान किया तो यह रूप धार कर शिवने अपने शिष्यों—विशोक, त्रिकेश, व्यास, सुप्रकाश के द्वारा पुराण मतका प्रचार किया—

४६ सुहोत्र—शिवजीने यह रूपधारकर बृहस्पति—व्यास कांक्षानुसार अपने चार शिष्यों सुमुख, दुर्मुख, दुर्मद, दुरतिक्रम को योगमार्ग दिखाया—

४७ सनक—सूर्य्यकी प्रार्थना से यह रूपधारकर व्यास मतको अपने शिष्यों सनक, सनातन, सनन्दन, सनत्कुमार द्वारा प्रचलित किया—

४८ लोकाक्ष—मनु व्यासकी प्रार्थनासे यह रूपधारण कर अपने चार शिष्यों सुधामा, त्रिरुज, शंख, अम्बुज द्वारा द्वापरमें योगशास्त्र प्रकट किया—

४९ जैगीषव्य—इसरूपमें चारशिष्यों वराहन, सारस्वत, मेघनाद, सुवाहनको उपदेश दिया—

५० दधिवाहन—आठवें द्वारपर में वशिष्ठ व्यास की प्रार्थना से यहरूप धार कर पौराणिक मतको अपने चारशिष्यों आसुरि, पंचशिखा, शाल्वल, कपिल द्वारा प्रकट किया—

५१ ऋषभ—नवें द्वापरमें सारस्वत व्यासने वेदका विभाग कर पुराणों को बनाना चाहा परन्तु उसकी सिद्धता न देखकर व्यासने शिवकी प्रार्थनाकी तब यह रूप शिवने धारण कर सहायता की—इनके चार शिष्य पराशर, गर्ग, भार्गव, अंगिरस थे—

५२ भृगु—त्रिधाराव्यास की प्रार्थनासे यह रूप धारणकर व्यास की कांक्षा पूर्णकी उनके चारपुत्र—निरामित्र,जगबोधन,गुप्त, भृंग और तपोधनथे—

५३ तप—ग्यारहवें द्वापर में त्रिवृत्त व्यासके ध्यानसे यह अवतार लेकर उनकी

कांक्षा पूर्णकी–उनके चारपुत्र–लम्बोदर, लम्बाक्ष, लम्बकेश, प्रलम्ब नामीथे–

५४ अत्रि–बारहवें द्वापर में भरद्वाज व्यासकी कांक्षा पूर्णकी उनके चारपुत्र–सरोज, समबुद्धि, साधु, शर्व–थे–

५५ बालि–तेरहवें द्वापरमें धर्मनारायण व्यासकी इच्छा पूर्णकी–

५६ गौतम–१४ वें द्वापरमें विभ्रीव्यासका मनोरथ सिद्ध किया–इनके चार पुत्र अत्रि, देवसत, अवल, सहिष्णु–

५७ वेदस्वर–१५वें द्वापर में यह रूप धरकर अपने चार पुत्रों–गुणं, गुणवाह, कुशरीर, कुनेत्रद्वारा व्यासकी सहायताकर निवृत्त मार्ग दृढ़किया–

५८ गोकर्ण–१६ वें द्वापर में धनंजय व्यासके सहायतार्थ गोकर्ण वन (अघहरक्षेत्र) में यह अवतार लिया जिनके चार पुत्र–कश्यप, उष्णा, च्यवन, ब्रह्मपति थे–

५९ गुफावासी–१७ वें द्वापरमें कृतंजय व्यासकी कामना पूर्णकी उनके चार पुत्र–उत्तथ्य, वामदेव, महायोग, महाबल–थे–

६० शिखंडी–१८ वें द्वापर में ऋतंजय व्यासकी इच्छापूर्ण की उनके चारपुत्र–वाचश्रव, ऋचीक, शावाश्य और सजनीश्वर थे–

६१ जटामाली–१९ वें द्वापरमें भारद्वाजव्यासकी इच्छानुसार अपने पुत्रों–रएय, कोशज, लोकाक्षी, जुम्भ द्वारा उनकी कांक्षा सिद्ध किया–

६२ अट्टहास–२० वें द्वापर में गौतम व्यासकी कामना अपने शिष्यों सीमन्त बरबरी, बुध, ऋगबंधु, किष्किंधरा द्वारा पूर्णकिया–

६३ दारूक–२१ वें द्वापर में व्यास की इच्छानुसार यह रूप धारणकिया उनके पुत्र–प्लक्ष, दललापन, केतुमान–गौतम–थे–

६४ लांगली–२२ वें द्वापर में व्यास ध्यानानुसार अपने चार पुत्रों–भल्लनि,

मधुपुंग, श्वेत, गुप्तकान्त—सहित यह रूप धारणकिया—

६५ श्वेत—तृणविन्दु व्यास की प्रार्थना से कालिंजर पर्वतपर अपने चार पुत्रों—औषधि, बृहदत्त, देवल, कन्य—सहित अवतारलिया—

६६ शूली—२४ वें द्वापर में कुत्त अर्थात् वाल्मीक व्यास की इच्छानुसार नैमिपारण्य में अपने पुत्रों सहजहोत्र, युवनाश्व, शालिहोत्र, अहिर्बुध्न—सहित अवतारलिया—

६७ दंडीमुंडी—२५ वें द्वापर में ब्रह्मसप्त के पुत्र उपमन्य के मत प्रचलित करने के हेतु व्यास ध्यानानुसार अपने चार पुत्रों—वहुल, कुंडकर्ण, कुम्भांड और प्रावाहत—सहित सहायक हुये—

६८सहिष्णु—२६ वें द्वापर में पराशर व्यासके ध्यानानुसार अपने शिष्यों उलूक, विद्धित,सम्वल, अश्वलायनसहित भद्रनाट नगरमें अवतरितहुये—

६९शवस्य—२७ वें द्वापरमें ज्ञानकर्ण व्यासके ध्यानानुसार—अपने चार शिष्यों अक्षपाद, सुमुनिकुमार, उलूक और वतस्य द्वारा योगशास्त्र प्रकटाकिया—

७०लाकुलीश—२८ वें द्वापर में विष्णु व्यासके ध्यानानुसार सिद्धिक्षेत्र में अपने चार शिष्य—उशिक, गर्ग, मित्र और कंध सहित यह अवतारहुआ—

७१ वृषेश्वर—कथा देखो— ७२ पिप्पलाद—क० दे०—

७३ अवधूतपति—क० दे०—

७४ द्विजावतार—जब नाटक रूप धर हिमाचल से गिरिजा के साथ विवाहार्थ वरमांगा तो शिवने दूसरारूप ब्राह्मण का धारणकर राजाको बहकाया वे मानगये परन्तु मुनियों के समझानेसे नहीं बहके—

७५ अश्वत्थामा—यह शिवका अवतार द्रोणाचार्य के तप करने से हुआ—द्रोणाचार्य की क० दे०—

स्वामि कार्तिक ॥

नाम—षण्मुख, कार्तिकेय, स्कंध, कुमार, अग्निभव, षट्माता, महासेन, शर-
जन्मा, तारकजित, गुह, विशाख—
मुख—छः हैं— वाहन—मयूर— अस्त्र—सांगि (सूर्य क० दे०) शक्ति—
पिता—शिव— माता—स्वाहा वा गंगाजी— भाई—गणेश, कृतमुख—

जन्म—तारक असुर जब ब्रह्माके वरदान से इन्द्रादि देवको दुःखदायक हुआ
और उसको वरदान था कि तुम्हारा वध शिवपुत्रसे होगा—इस कारण
से इन्द्रादिने कामदेव द्वारा शिवके ध्यानमें विघ्नकर शिववीर्य ले अग्नि
को दिया अग्निने वही वीर्य गंगार्पण किया जब गंगाजी से स्कंध
उत्पन्न हुये तो छः मुनि स्त्रियोंने उनको लेकर पाला और स्कंधने छः
मुखकर इन माताओं का दूध पिया इसी से इनका नाम षट्मुख और
षट्माता हुआ—

पृथ्वी परिक्रमा (गणेश क० दे०) के समय कार्तिकेय अप्रसन्नहो क्रौंच
पर्वतपर निज निवास अंगीकार किया—

कामदेव ॥

नाम—झषकेतु, अनंग, मनसिज, असमशर, मनोभव, मार, मन्मथ, पुष्पबाण,
कन्दर्प, आदि— स्त्री—रति— वाहन—शुक अर्थात् झष (मछली)—
अस्त्र—पुष्प का बाण—इसीसे नाम पुष्पबाण हुआ— पिता—ब्रह्मा—

पार्वती विवाहार्थ और तारकअसुर वधहेतु जब कामदेवने देव आज्ञा से
शिव ध्यानमें विघ्नकिया तो शिवजीने अपने तीसरे नेत्रसे उसको भस्मकर दिया
यह वृत्तान्त उसकी स्त्री रति सुनकर शिवनिकट आई शिवने उसकी व्याकुलता
देख उसको वरदानदिया कि तेरा पति अनंग होके अमर हुआ और द्वापरमें कृष्ण

तनय प्रद्युम्न होगा-(प्रद्युम्न कृ० दे०) और तुझको प्रलम्ब के यहां प्राप्त होगा-

वाल्मीकजी ॥

नाम-अदिकवि-

पिता-वरुण, वल्मीक (बेमौर) इसीसे नाम वाल्मीक- माता-चर्षणी-

जन्ममात्र तो इनका ब्राह्मण से था परन्तु इनका पालन किरातगृह हुआ और वहांपर एककिरातिनसे विवाहकर निज कुटुम्ब पालनार्थ बटमारी (चोरी) उद्यम किया करते थे-भाग्यवश एक समय इनको सप्तऋषि मिले उनके उपदेश से उल्टा राम नाम (मरा) जप कर ऐसे तप स्थितहुये कि इनके ऊपर बेमौर लगगया बहुत दिन पश्चात् जब सप्तर्षि निज प्रतिज्ञानुसार आकर उन को वल्मीक से निकाल वाल्मीक नामरक्खा-और नाम के जाप प्रभाव से सर्वज्ञ हो रामावतार के प्रथमही रामायण (रामचरित्र) बनाई-जिसको वाल्मीकजीने सीतापुत्र लव, कुश को जिनका जन्म, पालन और विद्यालाभ इन्हीं के आश्रम में हुआ था पढ़ाया जो इस रामायण को रागपूर्वक गाया करते थे-

नारदमुनि ॥

नाम-देवऋषि- पिता-ब्रह्मा-

जब वेदव्यास १८ पुराण और महाभारत बनाचुके और इस चिन्ता में थे कि कुछ और करैं इतने में नारदमुनि आये और कहा जबतक तुम रामचरित्र न कहोगे तबतक तुम चित्त शान्तिको न प्राप्तहोगे क्योंकि देखिये मैं एक दासी का पुत्रहूं जो एक साधुसेवक ब्राह्मण के यहां केवल साधुसेवा किया करती थी और मैं सदा साधु जूंठन खाता और उनके मुखारविन्द से रामकथा सुना करताथा-पांचवर्ष की अवस्था में जब मेरी माता का देहान्त हुआ तो मैं उसी उपदेश और रामकथा श्रवण के प्रभाव से वनमें तपकरने लगा जिससे श्रीहरि

प्रसन्न हो निजदर्शन देकर एकवीणा दिया जिस में मैं हरिगुण गाया करताहूं और यहभी वरदान दिया कि जव तुम्हारा दूसरा जन्म ब्रह्माके अंगूठेसे होगा तो हम तुम को फिर दर्शन देंगे जव मैं ब्रह्मसुत हुआ तव फिर तप करनेलगा जिससे भगवान् प्रसन्नहो निजदर्शनपूर्वक यह वरदिया कि तुम्हारा गमन सर्व लोकमें होगा और जव चाहोगे तव तुमको दर्शन देंगे—इस श्रवणानुसार वेद-व्यासने वदरिकाश्रम में जा श्रीमद्भागवत विरचा—

एक समय नारदजी गंगोत्तरी पर्वतपर ऐसे तपस्थ हुये कि इन्द्रको यह भय हुआ कि नारद मेरे राज्यार्थ तप कररहा है इस कारण से कामदेव को नारद तप विघ्नार्थ भेजा परन्तु नारद तप भंग करने में मन्मथ अपने को असमर्थ देख कर नारदजी के चरणोंपर निज अपराध क्षमार्थ गिरा और इन्द्रलोक को गया इस पश्चात् नारद अभिमान युक्त शिव और ब्रह्मा के रोकनेपर भी श्रीविष्णुजी से वर्णनकिया भक्तोपकारी विष्णुने नारद अभिमान नाशार्थ शीलनिधि राजाकी कन्या का स्वयम्वर अपनी मायासे विरचा उस कन्या के प्राप्तार्थ विष्णुसे उन्हीं का रूप मांगा परन्तु हरिने कपि मुख देदिया जिससे उस कन्याने इनको न वरा जव नारदने शिवगण के कहनेपर अपना मुख देखा तो क्रोधितहो शिवगण को राक्षस होने और विष्णुको रामावतार में सीता वियोग होनेका शापदिया—

अगस्त्यमुनि ॥

नाम—घटज, कुम्भज, घटयोनि— पिता—मित्रावरुण—

माता—उर्वशी अप्सरा— भाई—वशिष्ठजी, अग्निजिह्वा— स्त्री—लोपा—

जन्म—मित्रावरुण के तपस्थान में आकाशमार्ग से उर्वशी अप्सरा जातीथी उसको देख मित्रावरुणका वीर्य स्खलित हुआ जिसको उन्होंने एक घट में रखदिया जिससे अगस्त्य और वशिष्ठजी उत्पन्न हुये—

विंध्याचल को अपनी उंचाईपर अतिअभिमान था उसके दूर करने हेतु नारद ने सुमेरुगिरि की उंचाई की प्रशंसा की जिससे विंध्याचल लज्जितहो ओंकारनाथ को स्थापितकर शिव तप करनेलगे और वर पाकर इतना बढ़े कि सूर्यकारथ रुक गया—जिससे देवता और मुनि शिवकी आज्ञानुसार काशी में जा अगस्त्य की प्रार्थना की अगस्त्यजी संसार को दुःखित देख अपने शिष्य विंध्यके निकटगये तो विंध्यने साष्टांग प्रणाम किया मुनिने कहा कि हम दक्षिण को जातेहैं जबतक वहां से न लौटें तबतक ऐसेही रहना और आजतक मुनिने विंध्यको दर्शन नहीं दिया—

जब समुद्रने टिटिहा के अण्डेको हरलिया तब विष्णुने पक्षी का दुःख और समुद्र के अभिमान नाशार्थ अगस्त्य को आज्ञादी कि समुद्र को पीलो तब अगस्त्यने समुद्र को पीलिया पुनः समुद्र की प्रार्थना से उसके जलको छोड़दिया—

चन्द्रमा ॥

नाम—राकेश, सुधाकर, शशि, द्विजराज, सोम, उडपति आदि—

गुरु—बृहस्पति— स्त्री—रोहिणी आदि २७ नक्षत्र—(दक्ष क० दे०)—

वाहन—मृग— मूर्त्ति—अर्द्धचन्द्र— बलि—पलाश—

कलंक—एक समय चन्द्रमा कामवशहो अपने गुरुपत्नी से भोग किया (जिससे बुधकी उत्पत्ति है) इस कारण बृहस्पतिने क्रोधकर शापदिया जिस का श्याम चिह्न आजतक चन्द्रमा में दीख पड़ताहै—

रोग—क्षयी—(अपनी रोहिणी स्त्री को बहुत चाहतेथे इससे इनकी और स्त्रियोंने अपने पिता दक्षसे गिल्ला किया तो चन्द्रमाने दक्षसे प्रतिज्ञाकी कि आजसे अपनी सब स्त्रियोंको तुल्य मानूंगा—परन्तु यह प्रतिज्ञा पूर्ण न होनेके कारण दक्षने शापदिया जिससे यह रोग हुआ—

राहु ॥

नाम–चन्द्रारि, सूर्य्यारि–स्वर्भानु, विधुन्तुद, तम, सैंहिकेय– वर्ण–काला–
मूर्त्ति–लोहेकी (मकराकार मकर एक जीवहै जिसका आधा धड़ मृगका और आधा मत्स्य का)– बलि–शमी (वृक्ष विशेष)–
पिता–बृहस्पति (विप्रचित्ती दैत्य वा सिंहराशि भी पिता लिखे हैं)–
माता–सिंहिका राक्षसी— वाहन–सिंह, कच्छप–

जब समुद्र से अमृत निकाला गया (मोहिनी अवतार क० दे०) तो विभाग करते समय सूर्य और चन्द्रमाने विष्णुजी से कहा कि इस राक्षसने भी देवरूप बनकर अमृत पीलिया यह सुनकर भगवान्ने उसका शिर काटडाला वह न मरा और उसके शिरका राहु और धड़का केतु नाम हुआ तभी से राहु सूर्य और चन्द्रमा को कभी कभी ग्रहण करता है–जिस समय लोगों को स्नान दान और हरि स्मरणादि ग्रहण निवृतार्थ करना परमोचित है–

सहस्रबाहु ॥

नाम–सहस्रार्जुन, अर्जुन, सहस्रबाहु, कार्तवीर्य, हयहयराज– वंश–हयहयक्षत्री–

भुजा–१००० (यह भुजा दत्तात्रेय के आशिष से हुई)–
पिता–कृतवीर्य (हय हय क०दे०)– माता–एकावली– स्त्री–सत्या–
पुत्र–१००० जिसमें ९९५ परशुराम (सालीका पुत्र) ने मारडाला पांच बचे
पुत्रों में एकका नाम जयध्वज जिसका पुत्र तालजंघ हुआ–

सहस्रबाहु बड़ाबली था एक समय रावण को पकड़कर बांधा था––
(रावण क०दे०)

इसके करसे भृगुमुनि मारे गये इस कारण परशुराम (भृगुपुत्र) ने इसका वधकर क्षत्रियों की नाश की (परशुराम क० दे०)—

यमराज ॥

नाम–धर्मराज, यम, पितृपति, समवर्त्ती, कृतान्त, शमन, काल, दण्डधर, श्राद्धदेव, वैवस्वत, अन्तक, सूर्यपुत्र, महिषकेतु—
पिता–विवस्वत (सूर्य) माता–सरन्य (विश्वकर्मा की कन्या)
वर्ण–हरित वस्त्र–लाल भूषण–मुकुट (शिरका) और पुष्प (बालोंमें)
अस्त्र–लकुट (लाठी) वाहन–महिष–
बहिन–यमी (यमि और यम युगल उत्पन्न हुये यमिने भाईके साथ विवाह करना चाहा परन्तु यमने न माना), दूसरी बहिन यमुना (नदी)
स्त्री–विजया (ब्राह्मण की कन्या) और संयमनी—
पुत्र–युधिष्ठिर (पृथा से जो पाण्डुकी स्त्री है) जब महाभारत के अन्त में युधिष्ठिर अकेले रहगये तो श्वानरूप से उनके संग कुछ दिन रहकर साथही स्वर्गगये–

मांडव्य ऋषीश्वरने बाल्यावस्था में टीड़ीको वधकिया था इस कारण यमराजने उनके देहान्त उपरान्त फांसीकी आज्ञादी मांडव्यने कहा बाल्यावस्था के

दोप नीति विरुद्ध है इस कारण मैं तुमको शाप देताहूं कि मर्त्यलोक में १०० वर्षतक दासी पुत्रहो (यह विदुर नाम से प्रसिद्ध हुये) इस सौ वर्षतक सूर्यने धर्मराज का कार्य्य किया–

नाम चौदह यमों के–यम, धर्मराज, मृत्यु, अन्तक, वैवस्वत, काल, सर्वभूतक्षय, औदुम्बर, दध्न, नील, परमेष्ठी, वृकोदर, चित्र, चित्रगुप्त,–

शुक्र ॥

नाम–शुक्राचार्य, दैत्यगुरु, एकनयन, भार्गव (भृगुसुत)—

वाहन–मेढक– पिता–भृगुमुनि माता–ख्याति– स्त्री–जयन्ती–

कन्या–देवयानी(ययाति की स्त्री) जिसने बृहस्पतिके पुत्र कचसे विवाहकी इच्छाकी परन्तु कचने अंगीकार न किया तो इस कन्याने उसको एक राक्षससे मरवाडाला और शुक्रने संजीवनमंत्र (जिसको कच सीखने गया था) से उसको जिलादिया और यह विद्या शुक्रने शिवसे सीखाथा–

जब राजा बलि वामनजी को पृथ्वीदान करनेलगे तो शुक्रने दान देनेको रोका परन्तु बलिने न माना तब शुक्र गडुये के टोंटी में संकल्प विघ्नार्थ सूक्ष्मस्वरूप से बैठगये सर्वज्ञ वामनने कुशाग्र उस टोंटीमें डालदिया जिससे शुक्र एक नयन हुये–

कुबेर ॥

नाम–धनेश, यक्षपति, धनद, गुह्यकेश्वर, मनुष्यधर्म्मा, राजराज्य, पौलस्त्य, नरवाहन, वैश्रवण (पुलस्त्यकी कथा दे०)–

पिता–विश्रवा (पौलस्त्य) माता–भरद्वाजकी कन्या–

वाहन–पुष्पक विमान, नर पालकी–

राज्य–लंका (प्रथम)–अलकापुरी (पश्चात्) वाटिकाकानाम–चैत्ररथ–
अस्त्र–(सूर्य क० दे०) स्त्री–सर्वसम्पत्ति, चर्वीयक्षी–
पुत्र–नलकूबर और मणिग्रीव जिनको शिवतपसे धनलाभ हुआ जब यह दोनों
एक समय अपनी स्त्रियों सहित जलविहार कररहे थे नारदमुनि वहां पर
जा निकले परन्तु यह दोनों विहारासक्त उनको प्रणाम न किया इस
कारण मुनिके शापसे गोकुलमें यमलार्जुन नामी आंवला के वृक्षहुये
जिनको श्रीकृष्ण ने उद्धार किया और अपने पूर्वरूपको प्राप्तहुये–

जब तपबल से कुबेर को पुष्पक विमान और धनपतिपद मिला तो विश्रवा (पिता) के पास वासस्थान की कांक्षा से गये और अपना वरदान लाभ उन से वर्णन किया यह सुनकर विश्रवाने कुबेर से कहा कि लंकामें (जिसको दैत्य विष्णुभय से त्यागकर पाताल में जावसे थे) जा राज्य करो–

एक समय सुमालीदैत्य पाताल लोकसे घूमताहुआ लंकामें अपनी कन्या कैकसी सहित पहुँचा और ऐश्वर्ययुक्त कुबेरको देखकर उसने अपने मनमें विचार किया कि यदि मैं अपनी कन्या कैकसी को विश्रवाको दूं तो अवश्य ऐसाही प्रताप-वान् पुत्र इस कन्या के होगा तदनन्तर विवाह करदिया–जिससे रावण उत्पन्न हुआ और ब्रह्माके वरसे प्रतापयुक्त हो लंकाको कुबेर से छीनलिया और यही इसके नानाकी इच्छाथी–तब कुबेरने शिवतप कर अलकापुरीका राज्य पाया–

शेषनाग ॥

नाम–सहस्रमुख, धरणीधर, फणीश, अहिराज–
मुख–१००० तासे जिह्वा दो सहस्र हुईं–
राज्य–पाताल जहां नागकन्यायें उनकी सेवा करती हैं–
अवतार–लक्ष्मण, बलराम और संकर्षण नाम रुद्र–

चौदह भुवन इन्हीं के मस्तकपर हैं और महाप्रलय में संकर्षण रुद्रके मुखसे अग्नि निकलकर सर्वलोक को नाश करतीहै-

पृथु ॥

जन्म-जब महापापी राजावेन ऋषियों के शापसे मरगया तो पृथ्वी को विना राजा देख वेनकी दाहिनी भुजा मथकर राजा पृथुको उत्पन्न किया-

स्त्री-अरुचि- पुत्र-विजिताश्व आदि पांचपुत्र-

कन्या-पृथ्वी, एक समय बड़ा अकाल पड़ा कि भूमि निर्बीज होगई तो राजाने भूमिको नाश करना चाहा भूमिने राजा से डरकर कहा कि जब तुम मेरे ऊंच खालको सम करदो तो सर्वअन्न और ओषधि आदि उपजेंगे राजाने ऐसाही किया इस कारण भूमि का नाम पृथ्वी हुआ-

इस राजा ने १०० अश्वमेधयज्ञ करने का संकल्प किया और हर यज्ञमें राजाइन्द्र अपने राज्य छीन जाने के भयसे यज्ञ अश्वको चुराले जाता था परन्तु विजिताश्व उसको छीन लाता था इस प्रकारसे ९९ यज्ञ पूर्णहुई जब सवांयज्ञ करनेका समय आया तो नारद और ब्रह्माने इन्द्रराज्यरक्षार्थ पृथुको रोक दिया कि तुम सवां यज्ञ न करो नारदप्रार्थनानुसार नारायण ने इनको दर्शन दिया और सप्तऋषियों के उपदेशसे वन में योगाभ्यास करके परमधामको गये और उनकी स्त्री सती होगई-इनके पीछे विजिताश्व राजा हुआ-

तुलसीवृक्ष ॥

नाम (प्रथम)-वृन्दा- पति-जालंधर (जालंधर क० दे०)

वृन्दा ऐसी सती थी कि उसके सतके प्रभाव से उसका पति किसीसे नहीं मारा जासक्ता था तो विष्णुने उसका सत भंगकर उसके पतिको शिवसे वध कराया-जब नारायणका छल वृन्दाको ज्ञात हुआ तो उनको अपना पति बनाने

हेतु वर मांगा तब लक्ष्मीने वृन्दाको शाप दिया कि तू वृत्तहोना और श्रीनारायणने प्रसन्न हो शालिग्राम मूर्त्ति धारण कर उसको अंगीकार किया कि वह अबतक उनके शीशपर चढ़ाई जाती है-

कालनेमि ॥

जब हनुमानजी लक्ष्मणजी के लिये सजीवनमूल लेनेजाते थे तो हनुमान्जी के मार्गविघ्नके हेतु रावण आज्ञासे मकरीकुंड (जो बिजथुवा ग्राम तहसील कादीपुर ज़िला सुल्तानपुरमें है) के निकट एक मुनि आश्रम अपनी मायासे बनाकर मुनिवेष से बैठा-हनुमान्जी पियासे हो मुनि निकट गये उसने मकरीकुंडमें जल बतलादिया जलपीते समय मकरी अर्थात् मगरने पकड़लिया हनुमत् कर से वधहो मकरीने अपना पूर्वरूप अप्सराका धर हनुमान्जी से कहा कि यह मुनि रावणका भेजा हुआ राक्षसहै यह सुन हनुमान्जीने उसकोभी वधकिया-इस आश्रम में हर मासमें बड़े मंगलके दिन महावीरका बड़ा मेला लगता है-

रावण ॥

जन्म-कुबेर क० दे०   पूर्वजन्म-जय विजय क० दे०

मुख-दश-   भुजा-बीस-   पिता-विश्रवा अर्थात् पौलस्त्य-

माता-कैकसी (सुमाली की कन्या)

स्त्री-मन्दोदरी (मयकी कन्या जो पंचकन्यामें से है)

मंत्री-मालवन्त (सुमाली)

वरदान-रावणने १०००० वर्ष पर्यन्त तप करने का नियम किया जब १००० वर्ष पूर्णहोते थे तभी एक अपना शिर हवन करदेता था जब एक शिर रहगया और उसको भी हवन करने लगा तो ब्रह्माजीने आकर उससे कहा कि तू नर वानर छोड़ और किसीके करसे वध न

होगा—और जब जब तेरे शिर कटेंगे तब तब फिर वैसे होजायँगे—

अवध्य वरपाकर वीरों को जीतने के लिये अटन करनेलगा—

अलकापुरी में जा कुवेर का पुष्पकविमान छीनलाया और यमराज को जीतकर इन्द्रलोक को गया वहांपर इन्द्रने उसको पकड़ बांधा तब मेघनाद गया और अपने पिताको छुड़ाकर इन्द्रको बांध लंकाको लाया परन्तु ब्रह्मा से वर पाकर छोड़दिया—

तदनन्तर रावणने उत्तर में जाकर कैलास को उठालिया नन्दीश्वर शिवने उसका अभिमान देख शापदिया कि तेरा वध नर और वानर के करसे होगा—

जब सहस्रार्जुन के निकट (जिसने कि नर्मदा में जल क्रीड़ा करते समय धार को रोकदिया था) पहुँचा तो कुछ वादविवाद होने उपरान्त सहस्रार्जुनने उसको पकड़ कारागृह में बांध रक्खा परन्तु पुलस्त्यमुनिने छुड़वा दिया—

इसी प्रकार जब वालिसे लड़ा तो वालिने उसे छः मासतक अपनी कांख में दवा रक्खा था—

पाताल में गया तो वालकोंने पकड़ अपना खेल वनाया तो वलिने छोड़ाया—

जब चन्द्रमा को जीतने जाताथा तो राह में एक स्त्रियों के झुंड को कुदृष्टि से देखा उसमें से एक वृद्धा स्त्री ने उसको उठाकर समुद्र में फेंकदिया—

रावण एक समय कैलास पर्वतपर गया और नलकूवर की स्त्री (कुवेर की पतोहू जिससे रावण की भी पतोहू हुई) से भोगकिया उसने जा अपने पतिसे कहा जिसने उसको शापदिया कि तू फिर कभी परस्त्रीप्रसंग बरजोरी करेगा तो तेरा शिर गिरपड़ेगा इसी कारण उसने हरते समय जानकीजीको स्पर्श भी नहीं किया किंतु पृथ्वीको खोदकर सीताको उठाया था—

जब रामचन्द्र वनवास समय पंचवटी में निवास करते थे तो शूर्पणखा (रावणभगिनी) सुन्दर स्त्रीकारूप धारण कर श्रीरामचन्द्रजी के निकट विवाहार्थ

गई और लक्ष्मणजी ने रामकी आज्ञासे उसका कर्ण और नासा काटा इसकारण उसके भाई खर, त्रिशिरा और दूषण रामचन्द्र से युद्धकर मारेगये—जब यह वृत्तांत रावणने सुना तो मारीच कपट मृगद्वारा छलकर सीताजी को हर लेगया जिससे रावण परिवारसहित रामकरसे वध हुआ और लंकाका राज्य विभीषण को मिला—

वंशावली ॥
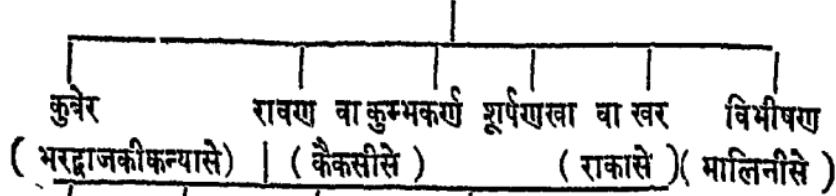
मेघनाद ॥

नाम—इन्द्रजीत, घननाद, पिता—रावण माता—मन्दोदरी

स्त्री—सुलोचना (पंचकन्या में से है)

एक समय युद्धमें इन्द्रने रावणको बांध लिया था मेघनाद ने जाकर अपने पिताको छोड़ाया और इन्द्रको बांध लंकामें लाया तब ब्रह्माने आकर उसको वरदे इन्द्रको छोड़ाया—

वरदान—ब्रह्माने कहा कि जो कोई १२ वर्ष पर्यंत नींद, नारि और भोजन परित्याग करेगा उसके करसे तेरा वधहोगा—

जब महावीर सीताकी खोज में लंकाको गये थे तो इनको मेघनादही बांध कर अपने पिताके निकट लेगया—रावण और कुम्भकर्ण के वधके पहिले इसने प्रथम युद्ध में लक्ष्मण को शक्ति मारकर अचेत किया परन्तु सुषेणवैद्यकी औषधसे चेतको प्राप्तहो द्वितीय युद्धकर लक्ष्मण ने मेघनादको मारडाला और सुलोचना शिरले सतीहोगई—

कुम्भकर्ण ॥

वंशावली—रावण क० दे० स्त्री—वृत्रज्वाला (बलिकी दोहती)—

कुम्भकर्णने भी अपने भाई रावण के साथ महातप कर ब्रह्माको प्रसन्न किया और सरस्वती की प्रेरणा से छःमास सोने और एक दिन जागने का वरपाया यह महाकाय अतिभक्षी था यदि प्रतिदिन भोजन करता तो सृष्टि को खालेता—यहभी रामकरसे वधहो परमपद को प्राप्तहुआ

विभीषण ॥

जन्म—रावण कथा देखो— स्त्री—सरमा (शैलूप गंधर्वकी कन्या)—

अपने भ्राता रावण संग सतोगुण तपसे ब्रह्माको प्रसन्न कर भागवत और अमरत्व का वर पाया और रावण करके निकाले जानेपर यह श्रीरामचन्द्र जी से मिलकर रावण वधमें परमसहायक हुआ और रावण के पश्चात् लंका का राज्य पाया—

जाम्बवन्त ॥

नाम—ऋक्षपति (ऋक्षोंका राजा)— कन्या—जाम्बवती—

यह ऋक्षदल लेकर रावणवधमें रामचन्द्रजी का परमसहायक और मंत्रीथा—

किसी समय इसको श्रीरामचन्द्रजी से युद्धकी कांक्षाहुई तो रामचन्द्रने कहा कि यह कांक्षा द्वापरान्त में पूर्णहोगी—कृष्णावतार में जब श्रीकृष्णको मणिहेतु कलंक लगा (कृष्ण क० दे०) तब मणि ढूंढते हुये जाम्बवन्त के आश्रम में

पहुँचे घोर युद्ध पश्चात् जाम्बवन्त परास्त हुआ और अपनी कन्या जाम्बवतीको कृष्णार्पण कर वह मणिभी देदिया–

महावीर ॥

नाम–हनुमान्, पवनकुमार, शंकरसुवन, केशरीनन्दन, अंजनीसुत–

पिता–केशरी कपि–

माता–अंजनी (यह पूर्वजन्ममें पंजिकस्थला नामी अप्सराथी परन्तु शापवश वानरीहो सुमेरुपर्व्वत पर आई और अंजनीनाम से प्रसिद्धहो केशरी पतिपाया)–

पुत्र–मकरध्वज–

जन्म–एक समय मरुतदेव सुमेरुपर्वत पर आये और अंजनीपर मोहित हुये जिससे हनुमान्जी ने अवतार लिया और नाम पवनसुत हुआ और यह अवतार शिवजीने रामसहायार्थ लिया इसी से शंकरसुवन भी नाम हुआ–जन्मलेतेही इन्होंने सूर्यको निगल लिया तब इन्द्रने वज्र मार कर सूर्यको बचाया और वह वज्र महावीर के मुखपर लगा इससे हनुमान् (फैला जबड़ेवाले) नाम हुआ तब मरुतदेवने पुत्र प्रेम से क्रोधितहो वायुको रोकदिया–सब दुःखी जान ब्रह्माजी ने आ हनुमान्जी को अजय और अमरका वरदे और इन्द्रने वज्रांगकर मरुतदेवको प्रसन्न किया और वायु चलनेलगी–हनुमान्जी ने नीचे लिखेहुये अद्भुत कार्य किये जिससे श्रीरामसीताने प्रसन्न होकर भुक्ति वा मुक्ति वरदिया–

(१) रामचन्द्र और सुग्रीव से मित्रता कराई–

(२) समुद्र लांघ और लंका को जला और अक्षयकुमार को वधि सीता जी का पता रामचन्द्रजी को दिया–

(३) देवीकी मूर्तिमें प्रवेशकर महिरावणको जो श्रीराम और लक्ष्मणको रावणके कहने पर देवी बलि हेतु हर लेगया था–परिवार सहित वधकिया–महिरावणकी डेवढ़ी पर मकरध्वज ने यह कहा कि मैं हनुमान् सुतहूं अपने स्वामी महिरावणके पुरमें न जानेदूंगा हनुमान्जी ने पूछा कि तुम मेरे पुत्र क्योंकरहुये उसने उत्तरदिया कि जब आप लंका दग्ध उपरान्त अपनी लांगूल को समुद्र में बुझाई उस समय में आपका वीर्य आपके अजानते स्खलित हुआ जिसको एक मकरी (मगर) ने निगल लिया जिससे उत्पन्नहो महिरावणका द्वारपाल हुआ यह सुन महिरावणका राज्य मकरध्वजको दे राम लक्ष्मणको रणभूमि में लाये–

(४) लक्ष्मणजीकी शक्तिमूर्च्छानिवारणार्थ सुषेणवैद्यको उसके गृह सहित और सजीवनमूरि धवलगिरि सहित उठालाये मार्ग में कालनेमि को वधकिया (कालनेमि क० दे०)–

(५) श्रीराम विजयके पीछे श्रीअयोध्याको साथ साथ आये और कुछदिन रहकर तपहेतु उत्तराखण्डको चले गये–इनसे और अर्जुन से युद्ध हुआ (अर्जुन क दे०)–

गृध्रराज अथवा जटायु ॥

पिता–गरुड़– भाई–सम्पाति–

जब रावण जानकीजी को हरे लिये जाता था तो मार्ग में जटायु ने रावण महायुद्ध किया परन्तु रावण ने कृपाण से उसका पंख काटकर उसे गिरादिया जब रामचन्द्र जानकी की खोजमें आ निकले तो उसको देखकर महादुःख को प्राप्तहुये जटायु रामचन्द्रका दर्शनपा स्वर्गको गया और रामचन्द्र ने उसकीक्रिया पितृवत् अपने करसे की–

अजामिल ॥

यह ब्राह्मण कन्नौज का रहनेवाला था इसने एक भिल्लिनि स्त्रीपर मोहित हो और अपना धर्म नष्टकर उस स्त्रीसे दशपुत्र उत्पन्न किया एकपुत्र का नाम नारायण रक्खा अट्ठासी वर्षकी अवस्थामें इसको यमदूत लेने आये परन्तु प्राणान्त समय उसने अपने पुत्रको नारायण नाम से पुकारा इस कारण नारायण के दूतोंने उसको यमदूतों से छुड़ा वैकुण्ठमें बैठाल दिया—

व्यासजी ॥

नाम—द्वैपायन— पिता—पराशर—

माता—सत्यवती (इसका नाम योजनगंधा और मत्स्योदरीभी है इसकी माता अद्रिका नामी अप्सरा शापवश भूमिपर मत्स्य हो आई जिससे सत्यवती उत्पन्नहुई—एक समय यमुनातटपर पराशरजी से भेंटहुई और उन्हींके प्रसंग से व्यासजी की उत्पत्तिहुई—कुछदिन पीछे यही सत्यवती राजा शन्तनुको विवाही गई—(शन्तनु ना० दे०)—

शिष्य—सूतजी (रोमहर्षण सुत)—

जब व्यासजी का जन्म हुआ तो माता सहित एकद्वीप पर वासकरते थे इसीसे नाम द्वैपायन भी हुआ—यह भगवान् के अवतार हैं इन्होंने ४ वेद और १८ पुराण निर्माण किया इससे सन्तुष्ट न होकर श्रीमद्भागवतको विरचा (नारद ना० दे०) वेदोंके नाम—ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्वणवेद, सामवेद, वेदकाण्ड—कर्मकाण्ड, उपासना और ज्ञानकाण्ड वेदके अंग—शिक्षा, ज्योतिष, कल्प, निरुक्ति, छन्द और व्याकरण—

पुराणोंकेनाम—ब्रह्मपु०, पद्मपु०, विष्णुपु०, शिवपु०, भागवत, नारदपु०, मारकंडेयपु०, अग्निपु०, भविष्यपु०, ब्रह्मवैवर्त्त, लिङ्गपु०, वाराहपु०,

स्कंदपु०, वामनपु०, कूर्मपु०, मत्स्यपु०, गरुड़पु०, ब्रह्माण्डपु०-

व्यासावतारों के नाम जो विष्णुजीने प्रत्येक द्वापरमें वेद पुराणादि विरचने हेतु धारण किया-

ब्रह्मा, प्रजापति, शुक्र, बृहस्पति, सविता, मृत्यु, मघवा, वशिष्ठ, सारस्वत, त्रिधामा, त्रिवृष, भरद्वाज, अन्तरिक्ष, धर्म, त्र्यारुणि, धनंजय, मेधातिथि, व्रती, अत्रि, गौतम, उत्तमहर्य्यात्मा, वेनीवाजश्रवा, सोमपुष्पायण, तृणबिन्दु, भार्गव, शक्ति, जातुकर्ण्य, द्वैपायन- वंशावली

ब्रह्माकी श्वाससे अथवा मैत्रवरुण से
|
वशिष्ठ
|
शक्ति
|
पराशर
|
व्यास

शुकदेव वैशम्पायन

(शुकदेव:) कृष्ण गौर प्रभाभूरि देवश्रुत कीर्त्ति (कन्या)
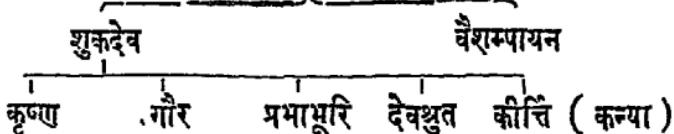
सुदर्शन विद्याधर ॥

यह विद्याधर था एक समय अंगिराऋपिको कुबड़ा देख अभिमान युक्त हँसा इस कारण ऋपिके शापसे अजगर हुआ और व्रजमें रहनेलगा एक समय इसने नन्दजी को निगल लिया इस कारण श्रीकृष्ण करसे वधितहो निजरूप को प्राप्तहुआ-

शंखचूड़दैत्य ॥

इसदैत्यको श्रीकृष्णने वधकर उसके मस्तककी मणि निकाल बलरामजीकोदिया-

कंडूमुनि ॥

गोमती तीरपर–यह मुनि तप में प्रवृत्त थे ये देख इन्द्रने प्रेमलोचा अप्सरा को उनके तप भंग हेतु भेजा वह मुनि आश्रम में आ बहुत दिनतक रही १५० वर्ष पश्चात् यह कपट ऋषिको ज्ञात हुआ तब इन्होंने इस अप्सरा से कहा कि तू यहां से निकलजा–ऋषि की भयसे उसके पसीना निकला जिसको उसने वृक्षों में लगादिया और उसीसे शीत उत्पन्न हुई इसको चन्द्रमाने और बढ़ाया–उसी शीतसे मरिषा उत्पन्न हुई जिसका विवाह दक्षके पुत्र प्रचेता के संगहुआ–

पराशर मुनि ॥

वंशावली–व्यास क० दे०–

जन्म–एक समय शक्ति (वशिष्ठ पुत्र) और राजा कल्मापपाद से किसी संकीर्ण मार्गमें भेंटहुई राजाने शक्तिको मार्ग से हटने को कहा परन्तु यह न हटे और राजाने इनको मारा इस कारण राजा मुनिशाप से राक्षस हुआ और मुनिको खालिया–उस समय मुनि की स्त्री गर्भिणी थी उस गर्भसे पराशर उत्पन्न हुये जिन्होंने यज्ञ करके राक्षसों का नाश करदिया जो थोड़े रहगये उनको वशिष्ठ और पुलस्त्यजी के कहने से छोड़दिया–

पुलह ऋषि ॥

पिता–ब्रह्मा (नाभि से)–

स्त्री–पहिली–क्षमा (दक्ष की कन्या) जिससे तीन पुत्र हुये–दूसरी स्त्री गती (कर्दम की कन्या)–

क्रतु ऋषि ॥

पिता–ब्रह्मा (कर से)–

स्त्री-प्रथम-सन्नीति (दक्षकी कन्या जिससे ६०००० वालखिल्य (वामने) उत्पन्न हुये जिनके शरीर अंगुष्ठ प्रमाण थे-दूसरी योग्य (कर्दमकी कन्या)—

अंगिरा ऋषि ॥

पिता-ब्रह्मा (मुख से)—

स्त्री-१ स्मृति (जिससे ४ कन्याहुईं) २ स्वधा ३ सती यह तीनों दक्षकी कन्या हैं-और चौथी स्त्री श्रद्धा (कर्दम की कन्या) है-

पुत्र-अग्नि (कहीं २ लिखा है)-

भरद्वाजमुनि ॥

आश्रम-प्रयागजी-

पुत्र-पाकदिष्ट, क्रोधन, उदित, हंसर्प, लुनक, विपसर्प, पितृवर्ती-यही दूसरे जन्म में विश्वामित्र के पुत्रहुये (विश्वामित्र क० दे०)-

च्यवन ॥

इनके शरीर में झिल्ली पड़गई (एक प्रकार का कुष्ठ) इस कारण अपने गृह से निकलगये और राजा सर्याति के राज्य में गये वहांपर राजपुत्रों ने मुनिकी हँसीकी मुनिने उनको ऐसा शापदिया कि उनमें कलह होनेलगी इस शाप को सुन सर्यातिने अपनी सुकन्या (पुत्री) को मुनि को समर्पदिया इस कन्या के पातिव्रत को देख अश्विनीकुमारने च्यवन का कुष्ठ अच्छा करादिया-

चित्रकेतु ॥

इस राजाके कोटि रानियां थीं परन्तु पुत्र किसीके न होताथा कुछदिन पश्चात् अंगिरा के आशिष से बड़ीरानी के कृतद्युत नामी पुत्रहुआ जिसको और रानियोंने मारडाला-राजाने बड़ा विलापकिया तो नारदमुनिने राजाको ज्ञानदे उस पुत्रको जिलादिया-तब वह बालक बोला कि हे राजा मैं पूर्व जन्म में राजाथा

परन्तु राज्य त्यागकर तपको चलागया भिक्षा मांगते समय एक स्त्रीने मुझे गीला गोइठादिया जिसमें चींटियांथीं वे जलकर मरगईं वेई चींटियां यह तुम्हारी रानियां हैं और वह स्त्री जिसने गोइठा दियाथा मेरी माता है उन चींटियों ने आजमुझ से बदलालिया इतना कह वह बालक फिरमरगया—तदनन्तर चित्रकेतु नारदोपदेश से तपकर विद्याधरोंका राजा हुआ और उसने एक विमान पाया जिसपर चढ़ एक समय कैलासपर्वतपर गया और वहां पर पार्वतीजी को शिव अंगपर देख हँसा और शापको माराहो विश्वकर्मा के यहां वृत्रासुर नामी राक्षस हुआ जिसको इन्द्रने दधीचि की अस्थि से वज्रबनाकर मारा—(विश्वरूप या विश्वकर्मा क० दे०)—

भानुप्रताप राजा ॥

पिता—सत्यकेतु— अनुज—अरिमर्दन— मंत्री—धर्मरुचि—
राज्य—केकयदेश (कश्मीर)—

किसी समय राजाने कालकेतु का राज्य छीन लिया कुछदिन उपरान्त वह छल पूर्वक राजाका याचक हुआ और ब्राह्मणों को नरआमिष राजाकी रसोईं में बनाकर खिलादिया ब्राह्मणों ने राजा भानुप्रताप को ऐसा शाप दिया कि वह राक्षस योनिमें उत्पन्नहो रावण नामसे प्रसिद्ध हुआ—

शृंगीऋषि ॥

पिता—शमीक अर्थात् विभाण्डक ऋषि (जो हरि ध्यानमें कौशकीनदीपर थे और जब राजा परीक्षित ने मरासर्प उनके गले में डालदिया तो शृंगी ऋषिने राजाको शापदिया)—
स्त्री—शान्ता (दशरथ पुत्री)—

मारतण्ड ॥

पिता-कश्यप- माता-अदिति-

मारतण्ड अदिति का आठवां पुत्र महाकुरूप उत्पन्न हुआ अदितिने इस बालक को पृथ्वीपर छोड़ दिया और अपने प्रथम सातपुत्रोंको ले देवलोक को चली गई परन्तु उन पुत्रोंने अपने आठवें भ्राताको भी बहुत यत्नकर रूपवान् किया और अपने साथ लेगये-और जो मांस उसके शरीर से काटागया था उससे हाथी बनायागया-

अग्नि ॥

नाम-वाहिनी, वीतिहोत्र, धनंजय, जिवलन, धूम्रकेतु, छागरथ, सप्तजिह्वा-

पिता-माता-कहीं द्युस और पृथ्वी, कहीं ब्रह्मा और कहीं अंगिरा, कहीं कश्यप और अदिति लिखे हैं-

वर्ण-रक्त, पद-तीन- भुजा-सात- नेत्र-श्याम- मुख-सात-

वाहन-अज और सुआ- भूषण-जनेऊ और फूलोंकी माला-

स्त्री-स्वाहा (दक्षकी कन्या)-

पुत्र-नील (एकबंदर मातासे-यह रामसंग लंकाको गये और सेतुबंध में बड़े सहायक हुये) पावक, पवमान और शुचि यह तीन (स्वाहासे) देवता अमर हैं और बहुधा अग्निपूजक (पारसी) धनवान् होते हैं-

वायु ॥

नाम-वात, पवन, मारुत, मरुत, अनिल, स्पर्शन, गंधवह-

पिता-रुद्र (वेदमें लिखाहै)-कश्यप (पुराणमें है)- माता-अदिति-

जन्म-किसीसमय अदितिने अपने पतिसे इन्द्रजीत पुत्र मांगा तब मुनिने कहा कि ऐसाही होगा परन्तु उस बालकको १०० वर्ष पर्यन्त गर्भ में पवित्रता

पूर्वक रक्खो अदितिने ऐसाही किया परन्तु ९९ वर्ष पश्चात् अपवित्रता से सोगई इस प्रकार इन्द्र घातपा उनके गर्भ में प्रवेशकर उस बालकके ४९ खंड करडाले और उस बालकको मारते समय इन्द्र कहताथा कि मारूद अर्थात् मतरोवो इस कारण मारुत नाम हुआ और इन्हींको ४९ बयारभी कहते हैं—

स्त्री—सदागति (विश्वकर्मा की कन्या)— वर्ण—श्वेत,
अस्त्र—श्वेतभंडा, वाहन—दो लालघोड़े का रथ और मृगा—
पुत्र—हनुमान्‌जी (अंजनीसे—महावीर क०दे०) और भीम (कुन्तीसे पांडु क०दे०)
कन्या—सुयशा (नन्दीश्वरकी स्त्री)—
तीन प्रकारकी वायु—शीतल, मन्द, सुगन्ध—
शारीरिक १० प्रकारकी वायु—प्राण (चित्त में), अपान (गुदामें), समान (नाभिमें), उदान (कंठमें), व्यान (शरीरमें), नाग ( ), कूर्म ( ), कृकल ( ), देवदत्त ( ), धनंजय, ( )—

नृसिंह अवतार ॥

यह अवतार नारायण ने सत्ययुग में हिरण्यकशिपु वधार्थ धारण किया—जब हिरण्य कशिपु के भाई हिरण्याक्षको विष्णु ने वाराह रूप (वाराह क० दे०) धर वधकिया तभी से हिरण्यकशिपु नारायण से वैरकर हरिभक्तों को दुःख देनेलगा और अपने पुत्र प्रह्लाद को रामनाम छुड़ाने हेतु महादुःखदिया इसकारण भगवान्‌ने नृसिंह तन धरकर हिरण्यकशिपुको खंभसे निकल(जिसमें प्रह्लाद बँधेथे) संध्या समय अपने नखसे गोद में रख मारडाला—इसका हेतु यहहै कि उसको वरदान था कि न तौ किसी पशु, न मनुष्य, न अस्त्र से और न रात, न दिनमें और न पृथ्वी में और न आकाशमें माराजावे—

उग्रसेन ॥

स्त्री-पद्मनेरखा-

यह मथुराका राजा था परन्तु इनका पुत्र कंस ऐसा उपद्रवी हुआ कि उसने राजाको गद्दीसे उतार आप राजा होगया पुनः श्रीकृष्णजी ने कंसको मार फिर राज्य अपने नाना उग्रसेन को दिया-

वंशावली-

अंधक
│
दुंदुभि
├── आहुक
│   └── देवक
│   ├── देवयान आदि चार पुत्र
│   └── देवकी आदि ७ कन्या (वसुदेव की स्त्री)
└── आहुकी (कन्या)
    └── उग्रसेन
        ├── कंसादि ८ पुत्र
        └── आठ कन्या (वसुदेवके छोटे भाईकी स्त्री)

जय और विजय ॥

ये दोनों नारायण के द्वारपाल थे-एक समय लक्ष्मीजी विष्णुजी के चरण चाप रही थीं और बाहु चापते समय रमाने अपने हृदय में कहा कि मैंने इन भुजाओंका पराक्रम कभी न देखा-हरि अन्तर्यामीने अपने द्वारपालों को शाप दिलाया और वे राक्षसयोनिमें उत्पन्नहो महाबली हुये जिनसे लड़ हरिने अपना पराक्रम दिखाया- इसकी कथा इसप्रकार है कि एक समय सनकादि नारायण दर्शनार्थ अन्तःपुर जा रहेथे कि जय और विजयने हरिप्रेरित उनको रोकदिया (इन मुनियोंको सदा पांच वर्षकी अवस्था होनेके कारण कहीं जानेका रोक न था) इस कारण मुनियोंने शापदिया कि तीन जन्मतक राक्षसहो परन्तु भगवान् कर से हरजन्म में बधेगये—

नाम तीनों जन्मों के-१ हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु, २ रावण और कुंभकर्ण और ३ शिशुपाल और दन्तवक्र-

रामचन्द्र ॥

नाम-राम, अवधेश, रघुवर, जानकीश, साकेतविहारी आदि-

पिता-दशरथ, माता-कौशल्या-(सौतेली माता, कैकयी, सुमित्रा)

अनुज-भरत (कैकयी से), लक्ष्मण और शत्रुघ्न (सुमित्रा से)

बहिन-शान्ता (शृंगीऋषि की स्त्री) स्त्री-सीता (जनक क० दे०)

पुत्र-लव और कुश (क० दे०) वंशावली-सूर्यवंशकी वंशावली में देखो-

इस अवतार लेनेका कारण यहहै-कि जब त्रेतायुग में राक्षसों के पापका भार पृथ्वी न सहकर गोरूप धारणकर देवसहित ब्रह्माके निकटगई तो ब्रह्माजी पृथ्वी और देवगण को विकल देख राक्षसों के वधार्थ विष्णुस्तुति की जिससे विष्णु भगवान् भूमिभार उतारने और दशरथ और कौशल्या के पूर्वजन्म (मनु और शतरूपा) के वरानुसार अपने अंशोंसहित अयोध्याजी में अवतरित हुये और नीचे लिखेहुये चरित्रों को किये-

१ बाल्यावस्था में काकभुशुंडि को अपने उदर में अपना विराट्रूप दिखाया-

२ विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षाके अर्थ जाते समय मार्ग में अहल्या को शाप (गौतम क० दे०) से उद्धारकर ताड़का और सुबाहु को वध और मारीच को बाणद्वारा समुद्र पार फेंक दिया-और मुनियज्ञ पूर्ण हुई-

३ विश्वामित्र सहित जनकपुरजा शिवधनु भंजनकर और परशुराम का मान तोड़ उनसे विष्णु धनुष ले जानकी संग विवाहकर (जनक क० दे०) अयोध्या जी आये-

४ कैकयी और दशरथ आज्ञानुसार वनवास अंगीकार कर मुनिवेष से भरद्वाज

और वाल्मीकि मुनिको दर्शन देतेहुये चित्रकूटमें वास करतेभये–जहां श्रीभरतजी और जनकजी पुरजन सहित मनाने हेतु गये परन्तु निष्फल लौटआये–

५ चित्रकूट से पंचवटी जाते समय मार्गमें बहु मुनियोंको तार और विराध (क० दे०) को मार शरभंग, सुतीक्ष्ण और अगस्त्य को दर्शन दे और दंडकवन (क० दे०) पावनकर पंचवटी में वास करते भये और जहांपर रामाज्ञानुसार लक्ष्मणजीने शूर्पणखा (क० दे०) की नाक और कानकाटी और श्रीरामने खर, दूषण से और त्रिशिराको उनकी सेना (१४०००) सहित वधकिया–तब शूर्पणखा रावण निकटगई उसकी यह दशा देख रावणने मारीचके निकट जा और उसको कपटमृग बना श्रीराम सन्मुख भेजा उसको देख रामचन्द्र सीताजी के कहने से उसके पीछे दौड़े और बाणसे उसको मारा मरते समय उसने हा लक्ष्मण शब्द उच्चारण किया उस शब्दको सुन लक्ष्मण भी सीताकी आज्ञा से राम निकट चलेगये इसी बीचमें रावण जानकीजीको हरलेगया–जब दोनों भाई लौटे और जानकीजीको आश्रम में न देखा तो अतिदुःखितहो उनकी खोज में आगे चले–मार्गमें जटायु (क० दे०) को परमपद दिया–और कबंध (क० दे०) को मारा–

६ तदनन्तर पंपापुर को गये और पंपासर के जलका दोष निवार शबरी (क० दे०) को मुक्तिदी–

७ पुनः पंपापुरसे आगे चले और ऋष्यमूक पर्वत पर पहुँच हनुमान् द्वारा सुग्रीव (क० दे०) से मित्रताकी और सप्ततात्र को एकही बाण से वेध और दुंदुभि (क० दे०) अस्थिको फेंक बालि (क० दे०) को मारा और सुग्रीव को किष्किन्धा का राज्य दिया और हनुमान् द्वारा सीता खोज पाकर सेतु बांधा और रामनाथ शिवकी प्राणप्रतिष्ठाकर ऋक्ष और कपि सेना लेकर लंका पर चढ़ाई की और रावणको उसके परिवार और दल सहित नाश कर विभी-

पण को राजा बनाया-और पुष्पक विमान पर चढ़ सीता लक्ष्मण और हनुमदादि सहित अयोध्याजी में आये और राजगद्दी पर बैठ बहुत दिनतक प्रजाशासन किया और अयोध्या का राज्य अपने दोनों पुत्रों को अलग करदिया अर्थात् सरयू के उत्तर का राज्य लवको और अयोध्या का राज्य कुशको दिया तदनन्तर निज अंशोंसहित ब्रह्मादि के विनयानुसार निजलोक को पधारे-

मुख्य वानरों और ऋक्षों के नाम जो रामचन्द्रजी की सेनामें थे-सुग्रीव, नील, नल, अंगद, हनुमान्, रंभ, शरभ, पनस, मैन्द, द्विविद, केहरि, केशरी, जाम्बवान् ऋक्ष-इन सबकी कथा पृथक् २ देखो-

सीतानिन्दक ॥

यह एक रजक था उसकी स्त्री विना उसकी आज्ञा अपने मायके चलीगई जब वह लौटकर आई तो उसके पतिने कहा कि मैं रामचन्द्र नहींहूं कि जिन्होंने जानकीजीको जो रावण के घरमें रहीं और फिर अपनी रानी बनालिया-यह बात सुनकर रामचन्द्रने सीताका परित्याग किया और उस रजक को एक नवीन अयोध्या बना उसमें वास दिया-

दधीचि राजा वा ऋषि ॥

पिता-ब्रह्मा भाई-क्षू (क्षवथु) स्त्री-सुवर्चा

पुत्र-पिप्पलाद (शिव अवतार)

किसी समय क्षूने कहा राजा बड़े होतेहैं और दधीचिने कहा ब्राह्मण बड़ेहैं इस पर युद्धहुआ क्षू हारकर विष्णुतप में और दधीचि शिवतप में प्रवृत्त हुये विष्णु जी संग्राम में आये परन्तु पराजयहो क्षू अर्थात् क्षवथु को ले दधीचि के शरण में गये और इस युद्धस्थान का नाम हरपुर अर्थात् थानेश्वर है-

एक समय देवगण वृत्रासुर (क० दे०) से परास्तहो नारायण की आज्ञानु-

सार दधीचि की अस्थि से वज्र वनाया तव उस वज्रसे वह राक्षस मारागया—और राजा दधीचि इसप्रकार अपनी अस्थि दे स्वर्ग को गया—

दुंदुभि दैत्य ॥

दुंदुभि एक राक्षस था जिसको वालिने वध कियाथा और उसकी हड्डियां पर्वताकार पड़ीथीं—सुग्रीवने रामचन्द्र से कहा कि वालि ऐसा वलीथा कि उसने ऐसे वली राक्षस को मारा—यह सुन रघुनाथजीने अपने वायें चरण के अंगूठेसे उस हड्डीके ढेरको फेंकदिया—

एक दूसरा दुंदुभि नामी दैत्य हुआ जो दितिका भाईथा जव हिरण्याक्ष और हिरण्यकशिपु मारेगये और उनकी माता दितिको अतिदुःख हुआ तव दितिका भाई दुंदुभि महाउपद्रव करनेपर उपस्थित हुआ और काशी में जा ज्योंही चाहा कि एक शिवभक्तको (जो शिवपूजनमें प्रवृत्त था) भक्षणकरैं त्योंही शिव प्रकट हुये और दुंदुभि को वधकिया अव उस स्थानपर हरव्याघ्र शिवका पूजन होताहै—

मंथरा ॥

यह केकयी (दशरथ की रानी) की चेरीथी इसने सरस्वती प्रेरित केकयीकी मति भंगकर रामचन्द्र को वनवास दिलाया—जव भरतजी अपने ननिहाल से आये तो इसको शृंगार युक्त देख क्रोधित हुये और शत्रुघ्नजीने इसका दांत तोड़डाला और उसकी चोटी पकड़कर घसीटने लगे तो भरत दयानिधिने छुड़ादिया—

शिविराजा ॥

राजा शिवि ९२ यज्ञ करने उपरान्त फिर यज्ञमें प्रवृत्त हुआ तो इन्द्र डरगया और अग्नि को कपोत वनाया और आप श्येन (वाज़) वन उसका पीछाकिया वह कपोत भागता २ राजाकी गोदमें गया उस श्येनने कपोत हेतु राजासे अति-

हठकिया परन्तु राजाने उसकी बराबर अपना मांसदेना अंगीकारकर उस कपोत को बचाया जब मांस तौलनेलगे तो कितनाही देह मांस काटकर रक्खा परन्तु पूर्ण न हुआ ज्योंही राजाने चाहा कि अपना गला काटकर मरजाऊं त्योंही नारायणने राजाका कर पकड़लिया और परमधाम को भेजदिया—

नहुष राजा ॥

यह राजा चन्द्रवंशी था और प्रतिष्ठानपुर इसकी राजधानी थी इसने ऐसा तप और यज्ञ कियाथा कि जब इन्द्र वृत्रासुर के भयसे कमलनाल में लुकेथे तो बृहस्पतिने इस राजाको अमरावती का राज्य देदिया—एक दिन इन्द्राणी से भोग करने की कांक्षा से उसके कहनेके अनुसार ब्राह्मणोंके कंधेपर सुखपाल रखवाय आप चढ़कर चला परन्तु कामासक्त शीघ्र चलाने हेतु उसने सर्प शब्द कहकर डरवाया तब ब्राह्मणोंने पालकी को फेंकदिया और शापदिया कि तू मृत्युलोक में सर्प होवेगा—

निषाद राजा ॥

यह पूर्वजन्म में व्याध था और इसके बहुत लड़के थे एक दिन अहेर न पाया तो रात्रिमें उस स्थानपर गया जहां जीवजन्तु जल पीने आतेथे शिवरात्रि का दिनथा और यह मृगया की आशामें एक बिल्व के वृक्षपर जिसके तले शिवमूर्ति

थी चढ़गया और रातभर जागरण किया और वृक्षके हिलने से पत्तियां शिव मूर्तिपर गिरती थीं श्रीभोलानाथने प्रसन्नहो उसको वरदिया कि तू दूसरे जन्ममें निषाद (मल्लाह) होगा और रामचन्द्र का दर्शन पावेगा—

इस प्रकार निषादहो शृंगवेरपुर (रामचौरा—गंगातटपर) में रहनेलगा—और वन जातेहुये रामचन्द्र की उसने बड़ी सेवाकी और चित्रकूटतक उनको पहुँचा लौटआया—और इसी प्रकार जब भरतजी रामचन्द्र को मनाने जातेथे तो उनके संगभी चित्रकूट तक गयाथा—

रन्तिदेव ॥

पुत्र—गर्ग आदि २ पुत्र—

यह राजा वितथ (चन्द्रवंशावली दे०) के वंशमें हुआ—कुछदिन उपरान्त गर्गको राज्य दे अपने छोटे बालक और रानी सहित विरक्तहो वनको चलागया और तपमें प्रवृत्त रह भोजन हेतु उद्योग नहीं करता था यदि कोई भोजन देजाता तो खालेता नहीं तो भूखे पड़ा रहता एक समय बहुत दिन पश्चात् भोजन पाया परन्तु एक भूखा आपड़ा उसी को दे डाला और इसी प्रकार कई वार भोजन मिला परन्तु दैवसंयोगसे दूसरे भूखे आतेगये और उनको राजा अपना भोजन दे डालता था जब राजा अपनी रानी और बालक सहित क्षुधासे बहुत पीड़ित हुआ तब भगवान्ने उन तीनोंको दर्शन दिया और निज लोकको लेगये—

राजाके पुत्र गर्ग (जो राजगद्दीपर था) के वंशमें सब अपने क्रियासे ब्राह्मण होगये—

गङ्गाजी (नदी)

नाम-सुरसरी, गिरिनन्दिनी, देवध्वनि, जाह्नवी, भागीरथी—
पिता—हिमालय और ब्रह्माका कमण्डलु और भगीरथ—
माता—मैना (सुमेरुकी कन्या)

पुत्र-भीष्मपितामह (राजाशन्तनु से), जलंधर (समुद्र से)

गङ्गा तीन हैं--आकाश, पाताल और मर्त्यलोक--

एक समय इक्ष्वाकु वंशीराजा महाभिष अपने तपोवलसे ब्रह्मलोकको प्राप्त हुआ वहां गंगाजी पर जो ब्रह्माकी सेवामें थी मोहित हुआ इस कारण ब्रह्माके शाप से दोनों मर्त्यलोकको प्राप्तहुये और महाभिष इस जन्म में राजा शन्तनु हुआ--जिससे गंगाजी को भीष्मपितामह (अर्थात् गंगादत्त, गांगेय क० दे०) नामीपुत्र उत्पन्न हुआ यह पूर्वजन्ममें एक वसुथा (वसु क० दे०) और इन्हींके यहां और ७ वसुओंने भी जन्मलिया परन्तु उनको गंगाजीने जलमें फेंक दिया--

जब राजा सगर के सब पुत्र कपिल मुनि के शाप (सगर क० दे०) से भस्म होगये थे उनके तारने हेतु उनकी सन्तानने बड़ी तपस्या की निष्फल हुई परन्तु भगीरथने ऐसी तपस्या की कि ब्रह्माजीने कहा कि जो शिव गंगा का भार संभालें तो हम तुमको गंगा देवें उसके उपरान्त तपकर शिवको प्रसन्नकिया तब ब्रह्माने निज कमंडलु से गंगाधार छोड़कर कहा कि यह तुम्हारी पुत्री होकर प्रसिद्ध होगी--वह जल तीनधार होकर वहा--उसमें से एक आकाश में एक पाताल को गई और एक मर्त्यलोक में आई मार्ग में गंगाको अभिमान हुआ कि शिव मेरा भार क्योंकर सहसकेंगे इसकारण शिवने गंगाको अपनी जटामें बहुत दिनतक भटकाया--जब भगीरथ की बड़ी प्रार्थना से छोड़ दिया तब आगे आगे भगीरथ और पीछे पीछे गंगाजी चलीं मार्ग में जह्नु ऋषिने पान करलिया जब भगीरथ ने बड़ी विनय किया तब मुनिने गंगाको छोड़ा और तभी से गंगा का नाम जाह्नवी भी हुआ इसी प्रकार भगीरथ गंगासागर समुद्र तक जहां सगर के ६०००० पुत्र भस्म हुये जिनकी मुक्ति केवल गंगाजलके स्पर्श से निश्चित थी--गंगाको लेगये वहां पर भागीरथी नाम से प्रसिद्धहुई--

---

वसु ॥

नाम आठोंवसुओं के–धव, ध्रुव, सोम, विष्णु, अनिल, अनल, प्रत्युष, प्रभाव–

एक समय सब वसु वशिष्ठाश्रमपर गये सबने मत किया कि मुनिकी गऊको लेचलना चाहिये तब धव वसु उस गाय (नन्दिनी नामी) को खोल लेगया मुनिने यह देखकर धवको शाप दिया कि तुम आठवेर पृथ्वीपर जन्मलेव और सातों वसुओंको भी ऐसाही शापदिया परन्तु पीछे क्षमा कर सातों से कहा कि तुम्हारी आयु मनुष्य तनमें केवल एक एक वर्षकी होगी–

एक जन्म इनका गंगाजी के यहां हुआ ७ को तो जल में फेंकदिया और धव (जिसका नाम अब भीष्मपितामह हुआ) का पालन किया– (गंगा क० दे०)

दशरथराजा ॥

वंशावली–

रघु (सूर्यवंशावली दे०)

अज (जिनकी स्त्री इन्दुमती)

दशरथ

शान्ता (शृंगीऋषि की स्त्री), रामचन्द्र (कौशल्यासे), भरत (केकयीसे), लक्ष्मण और शत्रुघ्न (सुमित्रासे)

- रामचन्द्र – लव, कुश (सूर्यवंशावली दे०)
- भरत – पुष्कर, तक्ष
- लक्ष्मण – अंगद, चित्रकेतु
- शत्रुघ्न – सुबाहु, यूपकेतु

पूर्वजन्म (मनु, शतरूपा) में दशरथ और कौशल्या ने तपकर भगवान् सदृश पुत्रमांगा–जिसकारण रामावतार हुआ–

राजधानी–अयोध्या (अर्थात् कोशलपुर, कोशला, साकेत)

मंत्री-सुमंत

राजाने अपने तीसरेपन में केकयदेश के राजा (जिसका पुत्र युधाजित था) की कन्या केकयीके संग विवाह किया और विवाह से प्रथम दशरथने केकय राजा को वचन दिया था कि केकयीके पुत्रको राज्य देंगे-

एक समय अयोध्याजी में एक राक्षस बड़ा उपद्रव किया करता था वशिष्ठादि मुनियों ने विचार कर कहा कि जो जानकीजी अपने करसे दीपककी वत्तीको उसकावें तो यह राक्षस मरजावे परन्तु कौशल्याजी सीताको ऐसा लाड़ करती थीं कि वत्ती नहीं उसकाने दिया-

एक समय दैत्यों और देवतों में युद्ध हुआ तो राजा दशरथ भी सहायताको गये और उनके साथ में केकयी भी थीं दैवसंयोग से रथका चक्रावलम्ब युद्धस्थल में टूटगया केकयीने अपनी बाहुसे आड़लिया-इस बातपर दशरथ बहुत प्रसन्न हुये और केकयीको दो वर दिया उसको रानीने थाती रखछोड़ा और इन्हीं वरोंको रामाभिषेकसमय मांगा कि रामको वनहो और भरतको राज्य मिले-

एक समय राजा अहेरको गये वहां पर अनजानते श्रवण (अंधसुत) को राजाका बाण लगगया जिसके माता पिताने राजाको शापदिया कि तुमभी पुत्रशोक में मरो (श्रवण क० दे०) और इसी से रामचन्द्र के वनगमनसमय राजाका देहान्त होगया और ऐसाही वरभी मांगा था-

इक्ष्वाकुराजा ॥

पिता-श्राद्धदेव (वैवस्वत मनु)   पुत्र-शशाद (मलकक्ष)

वंशावली-सूर्यवंशावली देखो-

एक समय राजाने मलकक्षसे कहा कि पितृश्राद्धहेतु शशाका मांसलावो वह गया और लाते समय मार्गमें मांसको जुठारडाला वशिष्ठमुनिके कहने से राजाने

मलकक्ष को निकालदिया वह जाबालि ऋषिके आश्रमपर जारहनेलगा इक्ष्वाकु के देहान्त उपरान्त वशिष्ठजीने उसीको राजा बनाया–

शशाद के पीछे उसका पुत्र पुरञ्जय गद्दीपर बैठा यह महाप्रतापी राजा हुआ और इन्द्र के हेतु दैत्यों से लड़ाई कर विजय पाई–

पुरञ्जय के वंश में सावस्त राजाहुआ जिसने सावस्तीपुरी बसाई उसके पौत्र कुवलयाश्वने उत्तुंगऋषि हेतु धुंधराक्षस को वधकिया उसके मुखसे एक ज्वाला निकली जिससे कुवलयाश्व के २१०० पुत्र भस्म होगये केवल दृढ़हास आदि तीन पुत्र बचे–

दृढ़हास का पुत्र निकुंभ था जिसके वंशमें युवनाश्व हुआ इसके कोई सन्तान न थी परन्तु ऋषियों की आशिष से राजाही के गर्भरहा ऋषियोंने राजाका पेट फाड़ बालक को निकाला और इन्द्रने उसको अपना अमृतयुक्त अंगुष्ठ चटाया और उसका नाम मांधाता (अर्थात् त्रसदस्यु जिसकी स्त्री बिन्दुमती शशिबिन्दुकी कन्या) हुआ–जिससे मुचुकुन्दादि तीनपुत्र और ५० कन्या (सौभरिऋषिकीस्त्री–सौभरि क० दे०) हुईं–

सौभरिऋषि ॥

सौभरिऋषि यमुनातटपर तप करते थे नदी में मछलियों को क्रीड़ा करते देख इनको भी भोगविलास की इच्छा हुई और मांधाता के निकट जा उनकी कन्या मांगी–राजाने कहा कि मेरी जो कन्या आपको चाहे उसको विवाह दूंगा–इस के उपरान्त मुनि युवावस्था को धारणकर राजाकी ५० कन्याओं के निकटगये इनको देख सब मोहित होगईं और राजाने सबों को विवाहदिया–जिनसे ५० सहस्र पुत्र होने उपरान्त ऋषि और स्त्रियां विरक्त होगईं कुछ दिन उपरान्त ऋषि के देहान्त के पीछे वे स्त्रियां सती होगईं–सौभरिने गरुड़जी को शाप दिया था क्योंकि इसने उस आश्रममें मछली खायाथा जिसको कालीदह कहते हैं (कालीनाग क० दे०)

पुरूरवा ॥

वंशावली—चन्द्रवंशावली दे० पिता—बुध—(बुध क० दे०)

माता—इला—यह वैवस्वत मनुकी कन्या थी (पूर्वजन्म में यह मैत्रावरुण के यहां उत्पन्नहो इड़ा नामसे प्रसिद्ध थी) इसको वशिष्ठने पुत्र बनादिया था परन्तु मुनियों के शापसे फिर स्त्री होगया और बुध के संयोग से पुरूरवा उत्पन्न हुआ (सुद्युम्न क० दे०)

स्त्री—एक समय उर्वशी अप्सरा मैत्रावरुण के स्थान पर आई उसको देख मैत्रावरुण का वीर्य स्खलित हुआ (जिससे वशिष्ठ और अगस्त्य उत्पन्न हुये अगस्त्य क० दे०) तो उन्होंने शापदिया कि तुझको मृत्युलोक प्राप्तहो—वह मृत्युलोक में आ अपने दो मेढ़ों सहित राजा पुरूरवा के यहां रहनेलगी परन्तु वचनबद्ध करालिया था कि जो तुम इन मेढ़ोंको नग्नहोकर देखोगे तो मैं चलीजाऊंगी—कुछ दिन उपरान्त गंधर्व उन मेढ़ों को चुराये जातेथे उस रात्रि समय में राजा नंगे दौड़े और ज्योंही मेढ़ों के निकट तक गये त्योंही वह अप्सरा चलीगई इस विरह में राजाने तपकिया और गंधर्व-योनि में उत्पन्नहो उसी उर्वशी संग रहनेलगे—

पुत्र—(उर्वशी से) आयु आदि छःपुत्र—

पौत्र—जह्नु (आयुसुत) इन्होंने गंगाजी को पान करलियाथा और अपनी जंघासे निकाला था इसीसे गंगाका नाम जाह्नवी हुआ (गंगा क० दे०)

दुष्यन्त अर्थात् दुःकन्त ॥

वंशावली—चन्द्रवंशावली में पुरुवंश दे०

स्त्री—शकुन्तला—यह विश्वामित्र की कन्या मेनका अप्सरा से है इसको मेनका भूमिपर छोड़ स्वर्ग को चलीगई तो कण्वऋषिने इसका पालन किया—

एक समय राजा दुष्यन्त मृगया को मुनि आश्रम में गये वहांपर शकुन्तला को देख मोहित हुआ और गंधर्वविवाह उसके साथ किया जिससे भरत पुत्रहुआ–

पुत्र–भरत–इसने विदर्भदेशके राजाकी तीन कन्याओं से विवाहकिया जिनसे कुरूप सन्तान हुई–तव देवताओंने भरद्वाज (बृहस्पति क० दे०) नामी बालकको लाकर भरत को दिया जिसका दूसरा नाम वितथ रक्खागया और गद्दीपर बैठालागया–

द्रुपद राजा ॥

वंशावली– मुद्गल (चं० वं० दे०)

दिवोदास

द्रुपद

द्रौपदी — धृष्टद्युम्न आदि कई पुत्र–

राज्य–पांचालदेश–

इस राजाने अपनी कन्या के विवाह हेतु एक खौलते हुये कड़ाह के ऊपर एक मत्स्य टांगदिया था और प्रणकिया था कि जो इस मत्स्य को वेधेगा उसके साथ इस कन्या का विवाह करदेंगे–अर्जुनने उसको वेधा और द्रौपदी को लेगये और पांचों भाइयोंने इसके संग विवाहकिया (अर्जुन क० दे०)

पुत्र–धृष्टद्युम्न–इसने महाभारत में द्रोणाचार्य का मस्तक काटाथा–

पुत्री–द्रौपदी–तप करते समय शिवने इस कन्यासे पूछा तू क्या चाहतीहै इसके मुखसे भर्तार शब्द पांचवार निकला इसीसे शिव वरसे पांच पांडव इसके पति हुये–अथवा एक समय एक गऊके पीछे पांच सांड़ लगेथे उस गऊ को देख द्रौपदी हँसी–जिस गऊ के शाप से उसको पांच पति प्राप्तहुये–

दिवोदास कैरव ॥

वंशावली-(शन्तनु कं०दे०) दादा-शन्तनु, पिता-सल, पुत्र-दिलीप

राजा दिवोदास कैरव को कोढ़ होगया था अकस्मात् अहेर खेलते २ एक कुंडपर पहुँचा और उसी के जलसे स्नान किया तिससे राजाका कोढ़ जातारहा- तब राजाने उस क्षेत्रके सब कूपों और तड़ागों को बनवादिया और उस स्थलका नाम कुरुक्षेत्र रक्खा-

पुत्र-दिलीप-इसने दिल्ली नगर बसाया-

अक्रूर ॥

वंशावली- वृष्णी (यदुवंशी)

शशिविन्दु की दशलाख स्त्रियों से

बिन्दुमती (मांधाताकीस्त्री) पुरुजित (बड़ा) और जामघ(छोटा) आदि १०करोड़ पुत्रहुये-

त्रिदर्भ

युयुधान सात्यकी कुश कृथ रोमपाद

श्वफल्क दन्तवक्र विदूरथ जयद्रथ(चन्देलीकाराजा)

अक्रूर आदि १२ पुत्र शिशुपाल

देवावृद्धा विभु

सत्राजित प्रसेन

सत्यभामा (कृष्णपत्नी)

पिता-श्वफल्क, माता-गांदिनी (काशीनरेश की कन्या)

अक्रूरको कंसने श्रीकृष्ण और बलरामको लेनेहेतु भेजा अपने भतीजों श्रीकृष्ण और बलरामको लिवालाये और मार्ग में स्नान करते समय श्रीकृष्ण ने अपना चतुर्भुजी स्वरूप अक्रूर को दिखायाथा जिससे उनकी अज्ञानता जानी–

एक समय अक्रूरकी मतिसे शतधन्वाने सत्राजितको मारडाला और स्यमंतकमणिको ले अक्रूरको दिया–तब अक्रूर श्रीकृष्ण के भयसे (क्योंकि सत्राजित श्रीकृष्ण का श्वशुर था) काशी चलेगये उससमय में जल न बरसा तो श्रीकृष्ण के कहने से द्वारकावासी उनको काशी से लिवा लेगये तब जलवृष्टि हुई और अक्रूर ने वह मणि श्रीकृष्णको देदी–

कालीनाग ॥

पिता–कश्यप मुनि   माता–कद्रू (निज)–और विनता (सौतेली)

एक समय कद्रू और विनता में यह ठहरी कि जो सूर्य के घोड़ों के पुच्छका वर्णन बतला न सके वह दासी बनकर रहे–विनताने ठीक बतलाया कि श्वेतवर्ण परन्तु कद्रूने न माना और अपने पुत्रों (अर्थात् सर्पों) को आज्ञादिया कि तुम पूंछमें लिपटजाव तदनन्तर दोनों देखने गईं तो श्याम देखा (क्योंकि उसमें सर्प लिपटे थे) तबसे विनता दासी बन रहनेलगी कुछ दिन उपरान्त कद्रूने गरुड़ (विनतासुत) से कहा कि जो तुम नागों के हेतु अमृत लादो तो हम तुम्हारी माताको दासीत्वसे छुड़ा देवें–गरुड़जी अमृतलाये और सर्पों को दिखा फिर देवतोंको देदिया–इसकारण गरुड़ और नागोंमें युद्ध हुआ पश्चात् नाग परास्तहुये और एकनाग प्रतिदिन देने को प्रतिज्ञा की जब कालीनाग की बारी आई तो उसने बड़ायुद्ध किया परन्तु परास्त हो भागा और गोकुलमें यमुनातटपर रहनेलगा जिससे उस स्थानका नाम कालीदह हुआ यहांपर गरुड़ शापके कारण नहीं आता था क्योंकि एक समय उस स्थान पर सौभरिऋषि

(कृ०द्वै०) तपमें स्थित थे दैवसंयोग से उसी स्थलपर गरुड़ने मछली मार खाया मुनिने शापदिया कि जो फिर यहां आवोगे तो मरजावोगे उस स्थानपर उसके त्रिपरो कोई जीव नहीं रहसक्ता था केवल एक कदमका वृक्ष यमुनातटपर था जो किसी समय गरुड़के मुखसे उसपर अमृत गिरने से अमर होगयाथा–

एक समय कृष्णजी कंसके मांगेहुये पुष्प लानेके हेतु उस दहमें गेंद ढूंढनेके मिषगये और कालीको नाथ उसपर पुष्प लाद लाये और कंसको दिया और उसीके मस्तकपर नृत्यकिया–तदनन्तर कालीको फिर रमणकद्वीपको भेज दिया और उससे कहदिया कि मेरे चरण चिह्न तेरे मस्तक पर देख गरुड़ तुझसे न बोलेगा–

कंस ॥

वंशावली–उग्रसेन कृ० दे० पिता–उग्रसेन, माता–पवनरेखा–

स्त्री–अस्ति और दीप्ति जो जरासंधकी कन्याथीं–

जन्म–एकसमय पवनरेखा सखियों सहित वनको गई वहांपर द्रुमलिक राक्षस के योगसे गर्भाधान हुआ जिससे कंस उत्पन्न हुआ–

कंस ऐसा दुष्ट हुआ कि बालापन में सबके बालकों को मारडालता और जब सयाना हुआ तो ब्राह्मणों को दुःख देनेलगा और अपने पिताको गद्दीसे उतार आप राजगद्दीपर बैठा और अनेक प्रकारसे उपद्रव करनेलगा–

जब विवाह उपरान्त अपनी बहिन देवकीको विदा करने जाता था मार्गमें आकाशवाणी हुई कि हे कंस! जिसको तू भेजने जाता है उसीके आठवें गर्भ में तेरा काल उत्पन्न होगा यह सुन खड्ग निकाल देवकी के मारनेपर उपस्थित हुआ परन्तु वसुदेवजीकी प्रार्थना पर और सब बालक उसे देदेनेकी प्रतिज्ञा पर कंसने देवकी को नहीं वध किया और वसुदेव और देवकीको वन्दीगृहमें डाल दिया–छःबालक तक तो वसुदेव ने लाकर कंसको दिया और उसने मारडाला

और सातवां गर्भ रोहिणी के गर्भमें देवीने करदिया और आठवें गर्भमें श्रीकृष्ण जी (कृ० दे०) उत्पन्न हुये और नंद यशोदा के यहां रहनेलगे–इस बालकके बदले वसुदेवजी ने एक कन्या जो यशोदा के यहां उत्पन्न हुई थी लाकर कंसको दिया ज्योंही चाहा कि घुमाकर पटकें त्योंहीं वह कन्या (जो देवीथी) हाथसे छूट आकाश को गई और कहगई कि तेरा वैरी उत्पन्न होचुका है तब कंस सब के बालकों को ढूंढ़ ढूंढ़ मरवाने लगा–और पूतना राक्षसी, शकटासुर और बकासुर, अघासुर, वत्सासुर आदिकको कृष्णवधार्थ भेजा परन्तु सब मारेगये–तब कालीदह का पुष्प नन्दजी से मांगा उसको श्रीकृष्णजी ने लाकर दिया (कालीनाग क० दे०)–अनेक उपायों के पीछे अक्रूर हाथ बलराम और कृष्ण को रंगभूमि देखनेको बुलाभेजा–दोनों भाई वहां पर जा रजक, चाणूर मल्ल, मुष्टिकमल्ल और कुवलय गजादिको मार कंसको भी मारा–बाहुक कंसका सूचीकार था और सुदामा माली था–

कालयवन ॥

पिता–गर्गमुनि, और तालजंघ भी–
माता–तालजंघ राजाकी स्त्री– राजधानी–काबुल–

एक समय गौड़ ब्राह्मण (गर्गका साला) ने गर्गजीको नपुंसक कहा यह सुन सर्व यदुवंशी भी यही कहनेलगे तब मुनिने क्रोधकिया और शिव तपकर मांगा कि मेरे ऐसा पुत्रहो कि उसको देख सर्व यदुवंशी भागजावें–दैवसंयोग से राजा तालजंघ के सन्तान न होतीथी गर्गने जा उसकी रानीको वीर्यदानकिया जिससे कालयवन नामी बालक हुआ–

एक समय कालयवन जरासंध के साथ श्रीकृष्णजी से युद्ध करनेगया तब सब यदुवंशी द्वारका को भागगये और श्रीकृष्ण और बलराम भी इसका वध

अपने करसे उत्पन्न न समझ (क्योंकि ब्राह्मण के वीर्य से था) भागकर एक गुफा में गये जहांपर मुचुकुन्द राजा सोतेथे और राजाकी दृष्टि पड़तेही कालयवन भस्म होगया (मुचुकुन्द क० दे०)–

भीष्मक राजा ॥

राजधानी–कुंडिनपुर– पुत्र–रुक्माग्रज और रुक्मकेश आदि ५ पुत्र–
कन्या–रुक्मिणी जो शिशुपाल को मांगीथी परन्तु विवाह समय रुक्मिणीने श्रीकृष्ण को बुला भेजा वे रुक्मिणी को हरलेगये मार्ग में रुक्माग्रजसे युद्धहुआ परन्तुहार मानकर लौटआया और लज्जितहो राज्यस्थान को छोड़ भोजकट नाम नगर बसाकर रहनेलगा–कुछ दिन उपरान्त रुक्मने अपनी कन्या रुक्मावतीका विवाह रुक्मिणीके पुत्र प्रद्युम्नकेसाथ करदिया–और अपनी पौत्रीका विवाह रुक्मिणी के पौत्रके संग किया–

प्रद्युम्न ॥

पिता–श्रीकृष्ण जी– माता–रुक्मिणी (भीष्मक की कन्या)–
स्त्री–मायावती (रतिका अवतार) और रुक्मवती (रुक्माग्रज की कन्या)–
पुत्र–अनिरुद्ध–जिसका विवाह बाणासुर की कन्या ऊषाके साथ हुआ (बाणासुर की क० दे०)–

एक समय शिवजी हरि ध्यान में कैलाश पर्वत पर थे तो इन्द्राज्ञानुसार कामदेवने पुष्पबाण चलाकर शिवका ध्यान छोड़ाया–तब शिवने क्रोध से देखकर उस को भस्म करडाला और कामदेवकी स्त्री रतिको विकल देख उसको वरदिया कि तेरापति अनंगहो सबको व्यापेगा और तू मायावती नामसे राजा शम्बर की रसोई में रहना तेरापति तुझको मत्स्य के पेटसे निकल प्राप्तहोगा–

जब प्रद्युम्नजी (कामावतार) का जन्म श्रीकृष्ण के गृह में हुआ तो यह सुन

राजा शम्बर ने इनको उठा समुद्र में डालदिया (क्योंकि ज्योतिषियों ने कहाथा कि तेरा वध श्रीकृष्ण सुतके करसे है-) और वहां एक मछलीने निगललिया दैवसंयोग से वह मछली एक मछुआ के हाथ लगी और वह उसको राजाशम्बर के यहांलाया पाकभवन में उस मछली के पेटसे प्रद्युम्न निकले रति (मायावती) ने उसका पालनकिया जब बड़ेहुये तो शम्बर को मार और मायावती को ले श्रीकृष्ण को प्राप्त हुये और अतिमंगल हुआ-

सत्राजित ॥

वंशावली- (अक्रूर क० दे०) पिता-विभु (शिशुपाल सुत)-
भाई-प्रसेन- कन्या-सत्यभामा (भूमिका अवतार और कृष्णपत्नी)

सत्राजित के तप से प्रसन्नहो सूर्यने उसको स्यमन्तक मणिदिया जिसका प्रकाश सूर्यवत् था उस मणिको पहिन वह उग्रसेन की सभा में जाया करता था एक दिन श्रीकृष्णने कहा कि यह मणि उग्रसेन राजाको देदेव उस दिनसे फिर उनकी सभामें न गया-एक दिवस वही मणि पहिन प्रसेन अहेर को गया वहां उसको सिंहने मारडाला और उस सिंहको जाम्बवन्तने मारा और वह मणिले अपनी कन्याके पालने में बांध दिया-जब प्रसेन न लौटा तो लोगोंने कहा कि श्रीकृष्णहीने प्रसेनको माराहोगा इस कलंकसे त्रसितहो प्रसेनकी खोजमें निकले और वन में जा पता पाकर और जाम्बवन्त से युद्धकर (जाम्बवन्त क० दे०) मणिलेलिया और लाकर सत्राजितको दिया-इसके उपरान्त सत्राजितने अपनी कन्या सत्यभामा को श्रीकृष्णजी के समर्पण किया-

एक समय शतधन्वाने अक्रूर और कृतवर्मा के कहने से सत्राजित का शिरकाटडाला इस कारण श्रीकृष्णने शतधन्वा को मारा और अक्रूर काशी को और कृतवर्मा दक्षिण को भागगये (अक्रूर क० दे०)-

भौमासुर अर्थात् नरकासुर ॥

माता-पृथ्वी- पुत्र-भगदत्त-

एक समय पृथ्वीने पुत्र हेतु बड़ातप किया तो विष्णु आदि देवताओंने प्रसन्न हो उसे वरदिया कि तुझको महाबली पुत्र भौमासुर (नरकासुर) नामीहोगा और जबतक तू अपने मुख से उसके मारेजाने को न कहेगी तब तक वह मारा भी नहीं जायगा-

भौमासुर उत्पन्न होतेही उपद्रव करने लगा यहां तक कि इन्द्रका छत्र और अदितिका कुण्डल छीन लाया और १६,१०० राजकन्याओं को जीत लाया और अपने यहां रखकर उनकी बड़ी सेवा करता था इन उपद्रवों को सुन श्री-कृष्णजी सत्यभामा सहित भौमासुर के यहां गये और युद्ध हुआ और मुरदैत्य (मंत्री उसके पांचशिर थे) और उसके सातपुत्रोंको मार भौमासुरको सत्यभामा (जो पृथ्वीका अवतारहै) के कहनेसे मारा और उसके पुत्र भगदत्तको राज्य दिया और १६,१०० राज्य कन्याओंको रानी बनाया और छत्र और कुण्डल फोले-इन्द्र और अदितिको दिया-

नृगराजा ॥

पिता-वैवस्वतमनु (सूर्य वं० दे०)—

इस राजाने असंख्य गोदान किया परन्तु एकदिवस किसी ब्राह्मण को दी हुई गऊ जो भाग आई थी भूलसे दूसरे ब्राह्मण को दान किया तब प्रथम ब्राह्मण राजा के निकट आया राजाने उसको एक लक्ष गऊदेने को कहा परन्तु उस ब्राह्मण ने न अंगीकार कर क्रोधितहो चलागया इसी पापसे ऐसे प्रतापी और दानी राजाको गिरगिट तन पाकर एक कूप में रहना पड़ा-किसी समय कृष्णजी के बालक उधरसे निकले तो इसको देख उसे निकालने लगे परन्तु

वह न निकला तब श्रीकृष्णने आकर उसको निकाला और वह दर्शन पाकर इसतनसे निवृत्तहुआ-

शाम्ब (साम्ब)

पिता-कृष्ण- माता-जाम्बवती (जाम्बवन्तकी कन्या)-
स्त्री-लक्ष्मणा-(दुर्योधनसुता)-

स्वयम्बर के बीचसे शाम्ब लक्ष्मणाको लेचले तो दुर्योधन ने विचारा कि यादवों की कन्या हमारे यहां बिवाही जाती हैं और यह यादव हमारी कन्या लिये जाताहै इस कारण युद्ध हुआ परन्तु दुर्योधनने परास्तहो उनके साथ उस कन्याका विवाह करदिया-

शिशुपाल राजा ॥

पिता-दमघोष (अक्रूर क० दे०) माता-महादेवी (सूरसेनकी कन्या)
राज्य-चन्देली- नेत्र-तीन- भुजा-चार- भाई-दन्तवक्र और विदूरथ-

शिशुपाल और दन्तवक्र जय और विजय का तीसरा अवतार हैं-

इसको रुक्मिणी मांगीथी परन्तु श्रीकृष्णजी हरलेगये (भीष्मक राजाक०दे०)-

एक समय द्रुपदी के स्वयम्बर में गया था परन्तु निराश लौटा और द्रुपदी को अर्जुन लेगये-

जब राजा युधिष्ठिरने राजसूययज्ञ करना चाहा था उससमयमें यहराजा नहीं परास्त हुआथा इस कारण श्रीकृष्णजी पाण्डव सहित उसपर चढ़गये और युद्ध समय उसके सौ दुर्वचन [1] सहने उपरान्त उसको वधकिया-

शिशुपाल के मारेजाने उपरान्त शाल्वराजा (शिशुपालकामित्र) उसका

---

[1] इन सौ दुर्वचनोंके सहनेका कारण यह था कि जब शिशुपालका जन्म हुआ तो ज्योतिषियोंने कहा कि इसका वध श्रीकृष्ण के करसे है यह सुन उसकी माता महादेवी (कृष्णकी फूफी) श्रीकृष्ण के निकट जा विनय किया कि मेरे पुत्र की मृत्यु तुम्हारे करसे है तो इसको न मारना तब श्रीकृष्ण ने कहा कि अच्छा हम इसके सौ अपराध क्षमा करेंगे इसके उपरान्त मारही डालेंगे-

बदला लेनेको द्वारकाजी पर चढ़आया और प्रद्युम्नजी से युद्धहोने उपरान्त श्रीकृष्णने उसको मारा—

तदनन्तर दन्तवक्र और विदूरथ चढ़आये परन्तु वे भी मारेगये—

सुदामा पाण्डे (ब्राह्मण)

स्त्री—सुशीला—विद्याशुरु—सन्दीपन—मित्र अर्थात् गुरुभाई श्रीकृष्ण—

यह परमदरिद्र और हरिभक्त ब्राह्मण विदर्भनगर में रहते थे और भिक्षा से भोजन करते थे एक दिन अपनी स्त्रीके कहने से श्रीकृष्ण के यहां गये श्रीकृष्णने बहुत आदर किया अपने करसे उनके चरणोंको धोया और भोजन कराने उपरान्त श्रीकृष्ण ने सुदामा से कहा कि जो तंडुल हमारी भाभी (तुम्हारीस्त्री) ने हमारे हेतु दियाथा वह क्यों नहीं देते पहिले बाल्यावस्था में गुरुपत्नी ने हमारे हेतु तुम्हारे हाथ बनको चना भेजा था उसको तुमने चबालिये थे वैसेही इस चावलको भी किया ऐसा कह उनकी कांखसे चावल की पोटली को खींचलिया जीर्णवस्त्र फटकर चावल बिथर गया तब श्रीकृष्णने दो मूठी उठा अपने मुखमें डाल लिया तीसरी मूठी लेते रुक्मिणी ने हाथ पकड़ लिया (इसका कारण यह है कि जितनी मूठी चावल चबाते उतनेही लोक उनको देते) इस प्रकार सातदिनतक प्रति दिन आदरपूर्वकरहे और पश्चात् अपने नगर आये तो अपनी पुरी द्वारका सम देख अचंभित हुये और कुछ दिन रहने उपरान्त श्रीकृष्णजी उनके यहां आये और सुदामाने आदरपूर्वक प्रार्थना किया कि महाराज अपने धनको लेजाइये क्योंकि यह मेरी भक्ति का बड़ा बाधक हुआ—

वृकासुर अथवा भस्मासुर ॥

भस्मासुर के तपसे प्रसन्नहो शिवने वरदिया कि जिसके मस्तकपर तू हाथ

रखेगा वह भस्म हो जायगा—यह वर पाय उसने विचार किया कि इसीप्रकार शिवको भस्मकर पार्वती को लेजाऊं और शिवके ऊपर हाथ रखनेको दौड़ा और शिवजी भागे जब बहुत थकितहुये तो हरिका ध्यान किया विष्णुने स्त्री रूपधर उससे कहा कि शिवके वर अब मृषाहोते हैं क्यों वृथा दौड़तेहो न मानो तो अपने मस्तकपर हाथ रखकर देखलो ज्योंहीं निज हाथ निज मस्तकपर रखा त्योंहीं भस्म होगया—

सूर्पणखा ॥

वंशावली—रावण क० दे०—

भाई—रावण, कुम्भकर्ण, खरदूषण, त्रिशिरादि—

पति—विद्युजिह्व राक्षस (कालखंज के वंशमें)—

यह वन जाते समय पंचवटी में रामनिकट आई और उनके साथ विवाह की इच्छा किया परन्तु लक्ष्मणजीने रामकी आज्ञानुसार उसका कर्ण और नासा काटा और यहभी राम रावण समर का कारण हुआ (राम क० दे०)

श्रीकृष्णचन्द्र ॥

नाम—कृष्ण, वासुदेव, देवकीनन्दन, यशुदासुत, गोपीश, गोपाल, गिरिधर, कंसारि, व्रजेश, यदुपति, द्वारकानाथआदि सहस्र नाम—

पिता—वसुदेव— माता—देवकी (उग्रसेन के भाई देवक की कन्या)—

पटरानी और उनसे उत्पन्न पुत्र और कन्या १—रुक्मिणी (भीष्मककी कन्या, लक्ष्मी का अवतार)—(भीष्मक क०दे०) जिससे प्रद्युम्नादि १० पुत्र और एक कन्या उत्पन्न हुई—

२ जाम्बवती—(जाम्बवन्त की कन्या—जाम्बवन्त क० दे०) जिससे—साम्ब आदि १० पुत्र और एक कन्या हुई—

३ सत्यभामा—(सत्राजित की कन्या—सत्राजित क० दे०) जिससे भान आदि १० पुत्र और एक कन्या—

४ कालिन्दी—(सूर्य की कन्या—जो यमुना किनारे कृष्ण वरहेतु तप करतीथी) जिससे सूरति आदि १० पुत्र और १ कन्या हुई—

५ मित्रविन्दा—(जयसेन उज्जैन राजाकी कन्या और माता उसकी राजादेवी श्रीकृष्ण की फूफी) जिससे वृष्क आदि १०पुत्र और १ कन्याहुई—

६ सत्या—(अयोध्या के राजा नग्नजितकी कन्या जिसको स्वयम्बर में श्री कृष्णने सात बैलोंको एकही बेरमें नाथकर विवाहा) जिससे श्रीमान् आदि १० पुत्र और १ कन्या हुई—

७ भद्रा—(गयादेश के राजा ऋतुसुकृत की कन्या) जिससे संग्रामजित आदि १० पुत्र और १ कन्या हुई—

८ लक्ष्मणा—(भद्रदेशके राजाकी कन्या) जिससे वसुत्रोपादि १०पुत्र व १कन्या—

रानी—१६१०० (भौमासुर क० दे०) इन हरएक रानियों से दश २ पुत्र और एक २ कन्या हुई—

सारथी—दारुक— वंशावली—इसी क० के अन्त में दे०—

जन्म—जब पृथ्वी कंसादि राक्षसों के पाप भार से अतिविकल हुई तो उसने ब्रह्मा और शिवद्वारा विष्णु स्तुति की और विष्णुने वसुदेव और देवकी (जिन्होंने पूर्वजन्म में पुत्र हेतु तप कियाथा) के गृह में अपने अंशों बलराम (लक्ष्मण) प्रद्युम्न (भरत), अनिरुद्ध (शत्रुघ्न) सहित अवतार लिया—और वेदकी ऋचायें गोपी और देवगण गोपरूप धारण करतेभये—

बाल्यावस्था—अवतार लेतेही कृष्णने चतुर्भुजरूपसे वसुदेव देवकी को दर्शन देकर कहा कि हमको इसी समय नन्दयशोदा (जिन्होंने कृष्ण बाललीला देखने हेतु तप कियाथा) के गृह पहुंचादो और उनकी

कन्या (जो देवीका अवतारहै) को लाके कंसको देदेव—जब पटकते समय उस कन्या के मुखसे कंसने यह कहते सुना कि तेरावैरी गोकुल में उत्पन्न होचुका है तो उसने पूतना, शकटासुर, बकासुर, अघासुर, वत्सासुर और केशी आदिको कृष्ण वधार्थ भेजा परन्तु सबका श्रीकृष्णने वधकिया और श्रीकृष्णने कालीनाग (क० दे०) का मद दूरकर कालीदहके पुष्पले कंसकोदे नन्दादि को कंसदण्ड से अभयकिया बाललीला जो श्रीकृष्णने ब्रजमें किया—वह ये हैं दधिलीला, माखनचोरी, चीरहरण, दानलीला, रासलीला—

एक समय माताने क्रोधितहो श्रीकृष्ण को ऊखल में बाँधा तो उसको घसीटतेहुये यमलार्जुन (कुबेर क० दे०) के निकटगये और उनको शापसे मुक्तकिया—

एक समय ब्रह्मा ब्रजके ग्वाल वाल और बछड़ों को चुरालेगये तो श्रीकृष्ण ने उसी रूपके ग्वालवाल और बछड़े बनाये यह चरित्र देख ब्रह्माजी ग्वालवाल और बछड़ों को ले श्रीकृष्ण से निज अपराध क्षमा कराय निजलोकको चलेगये—

ब्रजवासी सदा इन्द्र की पूजा किया करतेथे परन्तु कृष्ण उपदेश से गोवर्द्धन की पूजन करनेलगे—इसपर इन्द्रने महाकोपकर ब्रजपर इतना जल बरसाया कि ब्रजवासी अतिव्याकुल हो कृष्णकी शरणमें गये कृष्णने गोवर्द्धन को निज नख पर ७ दिनतक रखकर ब्रजवासियों की रक्षाकी और गिरिधर कहलाये—

जब कंस बहुत राक्षसों को कृष्ण वधार्थ भेजकर निराश हुआ तो अक्रूरद्वारा अपने रंगभूमिमें कृष्ण और बलराम को बुलवाया जहांपर कृष्णने रजक को वधि सुदामामाली, सूचीकार को वरदे और कुबड़ी को सुन्दर तनदे, कुवलियागज (जो १०००० गजका वल रखता था) चाणूर और मुष्टिक मल्ल आदिके प्राणान्त कर और कंसको निजधामदे और उग्रसेन को राजा बना मथुरा वासियों को आनन्दित किया—

कंस वध उपरान्त कंसके श्वशुर से जरासंधने १८ वेर कृष्णसे युद्धकिया और १९ वीं वेर शिशुपाल के साथ चढाई की और, परास्त हुआ परन्तु अन्त में श्री कृष्णने भीमसेन के करसे वध कराया (जरासंध क० दे०)

जब कालयवन मथुरापर चढ़आया तो मथुरावासी कृष्ण की आज्ञासे द्वारका जा वसे और कृष्णजी भागते २ गंधमादन की कन्दरा में जा मुचुकुंदकी दृष्टि से उसको भस्म कराया (मुचुकुन्द क० दे०)-तत्पश्चात् भौमासुर को वधकर, युधिष्ठिर की यज्ञ पूर्णकरी और महाभारत में अर्जुन के सहायकहो दुष्ट क्षत्रियोंको वध कराया और दुर्वासाद्वारा यदुवंशियों को शाप दिला उनको निजलोक भेजदिया (दुर्वासा क० दे०) केवल वज्रनाभ (अनिरुद्ध सुत) इस वंशमें बच रहा-पूर्वोक्त रीति से भूमि भार उतार जड़नामी व्याध (वालिका अवतार) के बाण लगने के मिस से बलराम सहित निजधाम पधारे-

स्वयंप्रभा ॥
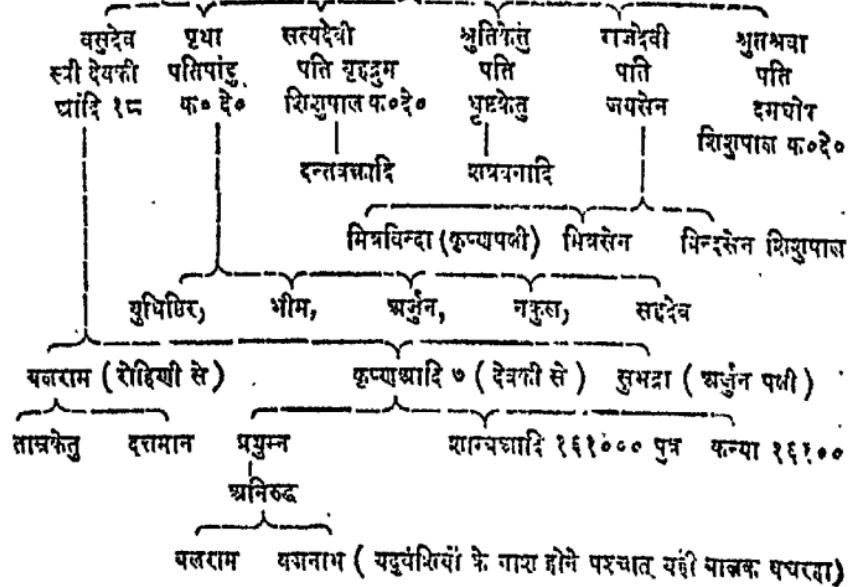
यह स्त्री विन्ध्यपर्वत के एक गुफा में रहती थी और विश्वकर्मा की पुत्री हेमाकी सखी और दिव्यगन्धर्व की कन्याथी और वनजाते समय रामचन्द्र का दर्शन पा बदरीवन को गई और वहां रामनाम जप मुक्त हुई–

जयन्त ॥

पिता–इन्द्र– माता–शची–

जब रामचन्द्रजी वनजाते समय चित्रकूट पर स्थित थे तो जयन्तने काकरूपसे जानकीजी के चरणों में चोंचमारा इस कारण रामचन्द्र ने एक तृण के बाणसे उसको मारा वह बाण उसके पीछे चला सर्वस्थान पर वह गया परन्तु राम-विमुख होने के कारण किसीने उसको न रक्खा तो रामही के शरण आया रामचन्द्रने उसको एकनयन कर छोड़दिया–

शुकराक्षस ॥

यह पूर्व जन्ममें एक ब्राह्मण था तपकरते समय वज्रदंष्ट्र से बैरहोगया एक समय इसने अगस्त्य मुनिका निमंत्रण किया वज्रदंष्ट्र ने उसब्राह्मणकी स्त्रीका रूपधार मुनिको मनुष्यका मांस परोसदिया इस कारण मुनिने उस ब्राह्मणको शापदिया कि तू राक्षस हो रावणकी सहायता करै–

इसीशुक को रावणने रामचन्द्रका भेदलेने समुद्र पर भेजा था उसने लौट कर रामचन्द्रकी बड़ाई रावण से की तब रावणने उसको निकाल दिया और वह रामचन्द्र का दर्शन पाकर शाप से मुक्तहो फिर ब्राह्मणत्व को प्राप्तहुआ–

गुणनिधि ब्राह्मण ॥

यह जगदत्त नामी ब्राह्मण का पुत्र था जो प्रथम बड़ा धनाढ्य था परन्तु

गुणनिधि ऐसा दुष्ट उत्पन्नहुआ कि यह नष्ट कर्म्मों में धन व्ययकरने लगा अन्तको जगदत्त ने उसको गृहसे निकाल दिया एकसमय शिवरात्रि का दिनथा जब कि वह भूखसे व्याकुल हो गिरपड़ा परन्तु शिवके भक्त पूजनकी सामग्री लियेहुये शिवालयमें जातेथे उन वस्तुओं की सुगन्धको पा गुणनिधि सचेतहो उनके पीछे पीछे गया और इस घातमें कि भक्त लोग जायें तो मैं लेकरखाऊं–रात्रिभर जागता रहा थोड़ीनिशि रहनेपर शिवभक्त सोगये और गुणनिधि ने ज्याहीं चाहा कि सामग्रीलेजावें त्योंहीं एकभक्त जागपड़ा और उसको वाणसे मारडाला देहान्तहोने उपरान्त उस शिवरात्रि के जागरण के प्रभावसे इसको शिवपुरी प्राप्तहुई और दूसरे जन्ममें कलिङ्ग देशके राजा इन्द्रमुनिका पुत्रहुआ और इसने राज्य पाकर उसदेश में शिवपूजन का विस्तार किया–

पितर ॥

इन पितरोंका मुख्य काम यहहै कि मनुष्योंको दुष्कृतिसे रोकाकरते हैं–नाग पितरों के–सोमि, कालीवुध, अजय और हशमन्त–इन चारों की स्त्री स्वधाय (दक्षकीकन्या) थी जिससे तीनकन्या उत्पन्नहुईं–उनके नाम यह हैं–मैना, धन्या, कमलावती–सनत्कुमारके वरसे इनतीनों को वंशावलीमें लिखेहुये पतिमिले–

वंशावली– ब्रह्मा

क्रतु	वशिष्ठ	पुलस्त्य	अंगिरा
सोमि	कालीवुध	अजय	हशमन्त

सबकीस्त्री स्वधाय (दक्षसुता)

मैना (हिमाचलपत्नी)	धन्या अर्थात् सुनैना (जनकपत्नी)	कमलावती अर्थात् कीर्त्ति (वृषभानुकी स्त्री)
पार्वती (शिवपत्नी)	जानकी (रामपत्नी)	राधा (कृष्णपत्नी)

ज्वालामुखीदेवी ॥

इसदेवी की उत्पत्ति इस प्रकार है कि जब सतीजी दक्षके यज्ञ में भस्महोगई तो उसमें से एक ज्वाला निकली और पश्चिम देशको गई वहां पर ज्वाला-मुखी के नामसे प्रसिद्धहुई यह स्थान जालंधरके पासहै—

हिमाचल ॥

नाम—हिमगिरि, हिमालय, तुहिनाचल, स्त्री—मैना (पितरोंकी कन्या)
पुत्र—मैनाक, क्रौंचादि १०० पुत्र— कन्या—पार्वती (जो श्रीशिवजीकी स्त्री) हुई
पुरोहित—गर्गमुनि—

तारकअसुर ॥

वंशावली— दिति (कश्यपपत्नी)

- मय
  - मन्दोदरी
- वज्रांग (वरांगीपति)
  - तारक
    - तडिन्माली
    - कमलाक्ष
    - तारकाक्ष

तारक महाबली था कि इसने इन्द्रलोक को जीतलिया पश्चात् स्वामि-कार्तिकके हाथ वधकिया गया—तत्पश्चात् तारकके तीनों पुत्र (वं० दे०) ने ब्रा-ह्मा से वर पाकर सौ सौ योजनके तीननगर बसाये जिनकानाम त्रिपुर रक्खा—इसनगर में शिवकी भक्तिपूर्वक सर्वजन निर्भय रहनेलगे तब शिवने उनतीनों को अजय करके कहा कि जो इस त्रिपुर नगरको एक बाणसे भस्मकरेगा उसी के करसे तुम्हारा वधहोगा—कुछदिन उपरान्त जब बलीहुये तीनों उपद्रव करने लगे तो विष्णुने अपने अंगसे अर्हण (मुंडी) को उत्पन्नकर उस नगरमें शिवकी

पूजा छुड़ाय आर्हण (नास्तिक) मतका प्रचार कराया जिससे शिवजी ने क्रोधित हो उसनगर को भस्मकर सबदानवों को वधकिया केवल मयदानव बचा–तत्पश्चात् विष्णुजीने अर्हणको उसके चारशिष्यों सहित मरुस्थल (मारवाड़) में रहने और कलियुग में नास्तिक मत चलाने की आज्ञादी–

मुचुकुंद राजा ॥

वंशावली–सू० वं० दे०

पिता–मांधाता, माता–विन्दुमती (शशिविन्दु की कन्या)

एक समय देवासुर संग्राम में मुचुकुन्द इन्द्र की सहायता को गये बहुत दिवस तक युद्धहुआ तत्पश्चात् युद्धमें विजय पाकर और श्रमितहो देवताओं से सोनेके हेतु एकान्त स्थान पूछा तो उन्होंने गंधमादन पर्वत बतलादिया और यह भी कहदिया कि जो कोई तुमको जगावेगा वह तुम्हारी दृष्टि से भस्म होजायगा–जब कृष्णजी कालयवनके भयसे भागे तो उसी पर्वतमें गये और अपना पीताम्बर राजाको ओढ़ाय छिपरहे कालयवन आतेही राजाको कृष्ण जान पीताम्बर खींचलिया–राजा जागपड़े और ज्योंहीं कालयवन को देखा त्योंहीं वह भस्म होगया जिसके पीछे राजा वदरीकेदार में तप करके मुक्तहुये–

मय दानव ॥

पिता–कश्यप, माता–दिति कन्या–मन्दोदरी (रावणपत्नी)

वंशावली–तारक क० दे०

इसने शिवका तपकर वर पाया कि तुझको कोई न मारसकेगा इसीसे जब शिवजीने त्रिपुर (तारक क० दे०) को भस्मकिया तो यह बचगया था और तभीसे तलातल में रहने की आज्ञा पाई तभी से दानवों का आचार्य और शिल्पकार नियत कियागया–

शंखचूड़ दैत्य ॥

वंशावली— कश्यप
।
विप्रचित्त
।
दम्भ
।
शंखचूड़

स्त्री—तुलसी (धर्मध्वज की कन्या— इसने ब्रह्मा के वरसे शंखचूड़ पतिपाया—)
पूर्व जन्म में शंखचूड़ सुदामा नामी गोप और श्रीकृष्ण का सखाथा परन्तु राधाजी के शाप से दानव का जन्मपाया—

तुलसी ऐसी पतिव्रताथी कि उसके सतसे उसका पति नहीं माराजाताथा जब शिवजीने विष्णुका ध्यानकिया तो विष्णुने ब्राह्मण का रूप धारणकर उसका सतभंग किया तो शिवने शंखचूड़ को मारपाया और उसीकी हड्डियों से शंख उत्पन्न हुआ—और तुलसी के शाप से विष्णुजी पत्थर होकर शालग्राम नामसे प्रसिद्ध हुये और तुलसी दूसरे जन्म में गंडकी नदी हुई जिसमें शालग्राम की मूर्ति पाईजाती है और फिर वृक्ष हुई जिसके पत्ते शालग्राम को चढायेजाते हैं—

अंधकासुर ॥

पिता—कश्यप, माता—दिति—शिर—१०००कर—२०००—

जब यह बड़ा उपद्रव करनेलगा तो शिवजीने बड़ा युद्धकिया और दुर्गाने चामुण्डी रूपधारणकर उसको वधकिया और उसके साथियों—हुंड, मुंड, जृम्भासुर, कुब्जासुर, कार्तस्वन, पाकहारीत, मदन, मर्दन आदि दैत्योंको नन्दीने वधकिया—

नागासुर (गजासुर) ॥

पिता—महिषासुर (जिसको दुर्गाने वधकिया दुर्गा क० दे०)

शरीर–सौ सहस्र योजन लम्बा और इतनाही चौड़ाथा–

गजासुर के तप से प्रसन्नहो ब्रह्माने वरदिया कि तू कामजित् पुरुष के हाथ माराजायगा–ऐसा वरपाकर अपने पिताका वैरलेने हेतु देवतोंको महादुःखदेने लगा तो शिवजी (जो कामजित् हैं) ने उसको मारा और मरती समय उसने शिवजी से वर मांगलिया कि आप नित्य मेरे चर्मको स्पर्श किया कीजिये और कृतवासेश्वररूप से काशीजीमें मुझे दर्शन दिया कीजिये–

उत्पल और विदल दैत्य ॥

यह दोनों दैत्य ब्रह्मा से वरपा महाबली हुये और नारद से पार्वती की सुन्दरता सुन उनके हरने की इच्छा से कैलासपर गये तो शिवकी आज्ञानुसार पार्वती (जो गेंद खेल रहीथी) ने गेंद से उन दोनोंको मारडाला–यह दशा ज्येष्ठेश्वर लिंगके निकट हुईथी–तब देवताओंने हर्षितहो वहींपर कुंडलेश अर्थात् गयंदकेश लिंग स्थापितकिया–

हरिकेश ॥

वंशावली — रत्नभद्र (यक्षपति)

पूर्णभद्र (स्त्री–कनकन्दला)

हरिकेश

यह और इसके पुरुषा सब बड़े शिवभक्त थे शिवने हरिकेश को काशीमें दर्शन दे दंडपाणि नामसे प्रसिद्ध किया और उसको ऐसा मान्यकिया कि एक समय वीरभद्र व अगस्त्यमुनि उसका सन्मान न करनेके कारण काशीसे निकालेगये–

महानन्द ब्राह्मण ॥

यह ब्राह्मण द्वापर में हुआ और अपने धर्म को त्याग इसने परस्त्री के संग

विवाह किया और काशी में एक चांडाल का दान लेने से यह भी चांडाल प्रसिद्ध हुआ इस लज्जासे वह काशी से भागा और मार्ग में चार चोरोंने उसको मारडाला वही चारो चोर मुक्तमंडप स्थानपर शिवकथा सुन मुक्तहुये–

नन्दीश्वर शिव ॥

पिता–शिलादमुनि अथवा शिवजी–
नेत्र–तीन, भुजा–दश, स्थान–कैलास,– स्त्री–सुयशा (मरुत् की कन्या)

शिलादमुनिने पुत्र हेतु यज्ञकिया तो शिवजी उसी अग्निकुंडसे उत्पन्नहुये मुनि ने उनका नाम नन्दीश्वर रक्खा–और शिवजीने गंगाजल नन्दीश्वरकेऊपर डाला जिससे–जटोदक, त्रिस्रोत, वृषध्वनि, स्वर्णोदक, जटक पांच नदियां उत्पन्नहुईं– नन्दीश्वरने वहींपर भुवनेश्वर लिंग स्थापित किया जिसके निकट सरमद् तीर्थहै–

भैरव (शिवअवतार) ॥

नाम–कालभैरव, कालराज, पापभक्षण—

एक समय ब्रह्माने अपने को और विष्णुने अपने को देवताओं में सर्वोपरि कहा तो शिवने भैरवको उत्पन्न करके आज्ञादी तो उसने ब्रह्माका पांचवां शिर काट लिया तबसे ब्रह्मा चतुरानन होगये–इस ब्रह्महत्याके शान्त करने हेतु भैरव वह शिर लिये हुये तीनोंलोक में भ्रमणकरके काशी में आये और वहीं पर शिर गिरा दिया इससे उसस्थान का नाम कपालमोचन हुआ–

जब भैरव भ्रमण करते थे तो शिवने एक ब्रह्महत्या नामी स्त्री उत्पन्नकरके उनके पीछे पीछे कर दीथी जिसका स्वरूप यह था–रक्तवर्ण, रक्तनेत्र, शिर आकाशतक, जिह्वा मुखसे बाहर निकली हुई–

वीरभद्र (शिवअवतार) ॥

पिता–शिव भुजा–चार, नेत्र–तीन–

जब दक्षप्रजापति की यज्ञमें सतीजी भस्महोगई तो शिवजी ने क्रोधातुर हो एक बाल अपनी जटाका लेकर पटकदिया जिसके प्रथम भागसे वीरभद्र और द्वितीय भागसे महाकाली उत्पन्नहुई इन दोनोंने दक्षयज्ञ विध्वंस कर दक्ष का शिर काटडाला पश्चात् शिवकी आज्ञानुसार बकरे का शिर जोड़ दिया तब दक्षने उसी मुखसे शिवस्तुति की इसी कारण आजतक प्रसिद्धहै कि शिवजी गाल बजाने से अतिप्रसन्न होते हैं-

शरभ (शिवअवतार)

रूप-भुजा-१०००, मुख-सिंहवत्, पंख-दो,
चोंच-१, शीशजटा, चन्द्रभाल, भयंकर दाँत, कंठ-१, चरण-८

जब प्रह्लादभक्त हेतु नृसिंह अवतार विष्णुने लिया तो हिरण्यकशिपु के वध उपरान्त भी उनका क्रोध शान्त न हुआ तो वीरभद्रने उनको शान्त करने हेतु प्रार्थना की परन्तु निष्फल हुई तब शिवने शरभ अवतार ले उनको युद्धमें परास्त किया-

यक्ष (शिवअवतार)

जब अमृत हेतु देवासुर संग्राम हुआ और उसमें देवताओं की विजय हुई इस कारण देवताँ को अभिमान हुआ तब शिवजीने यक्ष अवतार धर उनके अभिमान तोड़ने हेतु एक तृणदिया जिसको देवता न तोड़सके तत्पश्चात् शिवकी स्तुति करके उनको प्रसन्न किया-

पार्वतीजी ॥

नाम-उमा, सती, भवानी, कात्यायनी, गौरी, काली, हिमवती, ईश्वरी, रुद्राणी, सावर्णी, इत्यादि सहस्रनाम-

पिता-दक्ष- माता (सतीरूप में) पिता-हिमाचल,
माता-मैना (पार्वतीरूप में) पुत्र-स्वामिकार्तिक और गणेश,

पार्वती रूप धारण करनेका कारण यहहै कि जब सतीरूप में श्रीरामचन्द्रको सीताविरह में विकल देखा तो सतीको मोहहुआ और उनको शिवजी के कहने परभी रामको ब्रह्म जानने में संशय रहा तो सीताका रूपधर श्रीरामचन्द्रके सन्मुख परीक्षार्थ गई-इनको देख रामचन्द्र ने प्रणाम करके पूछा कि शिवजी कहां हैं-यह सुन सतीजी लज्जित हो शिवनिकट लौट आईं और इस भेदको शिवके पूछने परभी गुप्तरक्खा परन्तु शिवजी इस वृत्तान्तसे विज्ञातहो सतीका परित्याग किया इससे सती बहुत विकल रहती थीं-जब दक्षप्रजापति के यज्ञमें विना निमंत्रण और विना पतिकी आज्ञाके गईं और वहां पर यज्ञमें शिवका भाग न देख क्रोधयुक्त हो योगाग्नि में भस्महोगईं और पुनः हिमाचल और मैना गृह उत्पन्नहो तप पूर्वक शिववर पाया-इसीसे नाम-गिरिजा, पार्वती, हिमवतीहुआ-

एक समय शिवने पार्वतीजी को भोजन करने के हेतु बुलाया उन्होंने कहा कि विष्णुसहस्रनाम पाठकरके भोजन करूंगी तब शिवने कहा कि रामनाम जो सहस्र नाम तुल्य है कहकर भोजन करलो तो पार्वतीजी ने ऐसाही किया शिवजीने पार्वती को रामनाममें और अपने वचनमें इतनी श्रद्धा और विश्वास देख अर्द्धांग किया-

ब्रह्मा और विष्णु आदि देवताओं ने इनका पूजन नीचेलिखे नामसे और स्थान पर किया परन्तु उनमेंसे ५२ मुख्य हैं-

नाम पीठि	स्थान	नाम पीठि	स्थान
विशालाक्षी	काशी	ललिता	गंधमादनगिरि
लिङ्गिका	नैमिषारण्य	कामुकी	दक्षिणमानस
लिंगधारिणी	प्रयाग	कुमुदा	उत्तरमानस

नाम पीठ	स्थान	नाम पीठ	स्थान
विश्वकामा	विश्वकामपुर	महादेवी	शालग्राम
गोमती	गोमन्तागिरि	जलप्रिया	शिवलिंग
कामचारिणी	मंदराचल	कपिला	महालिंग
मदोत्कटा	चैत्ररथवन	मुकुटेश्वरी	माकोट
जयन्ती	हस्तिनापुर	कुमारी	मायापुरी
गौरी	कन्नौज	ललिताम्बिका	सन्तान
रम्भा	मलयाचल	मंगला	गया
एका (कीर्तिमती)	आम्रपीठ	विमला	पुरुषोत्तम
विश्वेश्वरी	विश्व	उत्पलाक्षी	सहस्राक्ष-
पुरुहूता	पुष्कर	महोत्पला	हिरण्याक्ष
सन्मार्गदायिनी	केदारपीठ	अमोघाक्षी	विपासानदी
मन्दा	हिमालय	पाडला	पुंड्रवर्धन
भद्रकर्णिका	गोकर्णतीर्थ	नारायणी	सुपार्श्व
भवानी	स्थानेश्वर	रुद्रसुन्दरी	त्रिकूट
विल्वपत्रिका	विल्वकस्थान	विपला	विमल
माधवी	श्रीशैल	कल्याणी	मलयाचल
भद्रा	भद्रेश्वर	कवीरा	महाद्रान्त्र
जया	वराहशैल	चन्द्रिका	हरिश्चन्द्र
कमला	कमलालय स्थान	रमणा	रामतीर्थ
रुद्राणी	रुद्रकोटि	मृगावती	यमुना
काली	कालिंजरदेश	कोटवी	कोटितीर्थ

नाम पीठि	स्थान	नाम पीठि	स्थान
सुगंधा	माधववन	वरारोहा	सोमेश्वर—
त्रिसंध्या	गोदावरी	पुष्करावती	प्रभात
रतिप्रिया	गंगाद्वार	देवमाता	सरस्वती नदी
शुभानन्दा	शिवकुण्ड	पारावारा	समुद्रतट
नन्दिनी	देविका तट	महाभागा	महालाय
रुक्मिणी	द्वारावती	पिंगलेश्वरी	योषा
राधा	वृन्दावन	सिंहिका	कृतशौच
देवकी	मथुरा	निशाकरी	कार्तिक
परमेश्वरी	पाल	लोला	उत्पलावर्त्तक
सीता	चित्रकूट	सुभद्रा	शोणसंगम
विंध्यनिवासिनि	विन्ध्याचल	माता	सिद्धवन
महालक्ष्मी	करवीर	अनंगालक्ष्मी	भरताश्रम
उमादेवी	विनायक तीर्थ	विश्वमुखी	जालंधर
आरोग्या	वैश्वनाथ	तारा	किष्किंधागिरि
महेश्वरी	महाकाल	पुष्टि	देवदारुवन
अभया	उष्णतीर्थ	मेधा	काश्मीरमंडल
नितम्बाभी	विंध्याचल,	भीमा	हिमाद्रि
मांडवी	माण्डव्य	तुष्टि	विश्वेश्वरक्षेत्र
स्वाहा	महेश्वरीपुर	शुद्धि	कपालमोचन
प्रचण्डा	छगलांड—	धरा	शंखोद्धार
चण्डिका	अमरकंटक	धृति	पिंडारक

नाम पीठि	स्थान	नाम पीठि	स्थान
कला	चन्द्रभागातट	निधि	कुवेशला
शिवधारिणी	मच्छोद	गायत्रि	वेदवदन
अमृता	वेणा	पार्वती	शिवसन्निधि
उर्वशी	वदरिकाश्रम	इन्द्राणी	देवलोक
ओषधि	उत्तरकुरु	सरस्वती	ब्रह्मामुख
कुशोदका	कुशद्वीप	प्रभा	सूर्यबिम्ब
मन्मथा	हेमकूटगिरि	वैष्णवी	माताओं में
सत्यवादिनी	कुमुद	अरुंधती	सतियों में
वन्दनीया	अश्वत्थ	तिलोत्तमा	रमाओं में

ग्रहपति (शिवअवतार)

वहुत दिनों तक विश्वामित्रके कोई पुत्र न हुआ तो अपनी स्त्री के कहने से काशीजी में १२ वर्षपर्य्यंत शिवतप किया शिवने प्रसन्न हो दर्शन दिया और विश्वामित्र को युवावस्था फिरदिया और शिवके वरसे विश्वामित्रकी स्त्री सचक्षुमतीसे ग्रहपति नाम पुत्र हुआ जो शिवअवतार है–

वृषेश्वर (शिवअवतार)

समुद्र मथन उपरान्त जब विष्णुजी ने अमृत देवतों को पिलाया तब देवासुर संग्राम होते होते दैत्य परास्त होकर पातालको भागे विष्णुने उनका पीछा किया वहां पर स्त्रियोंको देख विष्णु मोहित होगये और उनसे वहुत सन्तान हुई परन्तु शिवजी वृषेश्वर अवतार धर विष्णुजी को देवलोक को लिवालाये और उस सन्तानको जो देवतों के दुःखदायी हुये थे शिवने दंडदिया–

पिप्पलाद (शिवअवतार)

पिता-दधीचिऋषि   माता-सुवर्चा

स्त्री-पद्मा (यह अनरण्य राजाकी कन्या गिरिजाका अवतार है)

जव देवगण वृत्रासुर से परास्त होकर दधीचि की अस्थि मांगलेगये और इस कारण मुनिका देहान्त हुआ तव उनकी स्त्रीने देवताओं को शापदिया कि तुमलोग निरसन्तान होजाव-ऐसा कहकर सती होनेजाती थी परन्तु आकाश वाणी के रोकने से सती नहीं हुई और एक पिप्पल के नीचे वैठगई वहीं पर शिवके अंशसे एकवालक उत्पन्नहुआ उसका नाम पिप्पलाद रख वह स्त्री सती होगई और पिप्पलाद अपनी माताकी आज्ञानुसार तप करने लगे-

एकसमय धर्मराजने पिप्पलादकी स्त्री का सतभंग करना चाहा तो पद्माने शापदिया कि तेरे चरण त्रेतामें तीन, द्वापरमें दो, और कलियुगमें एकही रह जायगा इसके उपरान्त धर्मराजने पिप्पलाद को आशिष दिया कि तुम फिर युवावस्था को प्राप्तहो-

महेश (शिवअवतार)

एक समय शिव और गिरिजा अन्तःपुर में विहार करते थे और द्वारपर भैरवको वैठाल दियाथा-जव पार्वतीजी अन्तःपुरसे निकलीं तो भैरवने कुदृष्टि पूर्वक उनको छेड़ा इस कारण गिरिजाने भैरवको और भैरवने गिरिजाको शापदिया जिससे दोनों मनुष्य तन पाकर पृथ्वीतल में आये और महेश और शारदा नामसे प्रसिद्ध हुये-

अवधूतपति (शिवअवतार)

किसी समय इन्द्र अभिमानयुक्त देवताओंसहित कैलासको जाता था शिवने उसका अभिमान तोड़ने हेतु उसको अवधूतरूप धर मार्ग में मिले-इन्द्रने उनसे

कईबेर पूछा कि शिवस्थान कहां है परन्तु वह न बोले तब इन्द्रने उनपर वज्र चलाया इससे वच शिवजीने एक ज्वाला उत्पन्नकी जिससे सर्व देवगण भस्म होनेलगे परन्तु बृहस्पति ने शिवकी स्तुति कर उनको बचाया-

वेश्यारूप (शिवअवतार)

नन्दिग्राम में एक नन्दा नामी वेश्या रहती थी वह अपने कुत्ते और वन्दर को ले नित्य शिवालय में नृत्य और गान करती थी शिवजी प्रसन्न हो उसको एक कंकणदिया और उसकी इच्छानुसार वेश्यारूपधार उसके संग तीनदिवस रहे अन्तकाल में वह वेश्या उनकी चितापर बैठ भस्महोगई और शिवकृपासे वैकुण्ठ सिधारी-

द्विजेश (शिवअवतार)

एक समय भद्रापुण्य राजा अपनी स्त्री मालिनी (चित्रांगद की कन्या) सहित वनविहारको गया यह शिवका बड़ाभक्तथा इसकी परीक्षाहेतु उसी वनमें शिवजीने एक ब्राह्मण और ब्राह्मणी का रूप धारण किया उस स्त्री को एक मायाके सिंहने खालिया तव वह ब्राह्मण (शिव) राजा के निकट जाकर कहा कि मेरी स्त्री को सिंहने खालिया इस कारण तू अपनी स्त्रीदे राजा स्त्रीको दे चिता वनाया और शिव २ कहकर ज्योंही उस चितापर बैठा त्योंही शिवने द्विजेश अवतार लेकर राजा और रानीको निजलोक भेजदिया-

नल (राजा)

पूर्वजन्म-आहुकभिल्ल स्त्री-दमयन्ती (जो पूर्वजन्म में आहुकी भिल्लिन थी)

अर्बुदाचल पर एक भील आहुक नामी अपनी स्त्री आहुकी सहित रहताथा एक समय शिवजी यतीका वेषधर उसके पासगये रात्रि होगई भीलने शिव को अपने गृहमें वासदिया और आप वाहर रहा दैवसंयोग से उसको किसी जन्तुने

मारडाला भीलनी जब सती होनेलगी तो शिवने जितनाथरूपसे उसको वर दिया कि तेरापति राजानल होगा और तू दमयन्ती नाम से प्रसिद्धहो उसको बिवाही जायगी-

मित्रसह ॥

यह इक्ष्वाकुवंशी राजा बड़ा धर्मात्मा था वन में अहेर खेलतें समय किसी राक्षस को इसने मारडाला उस राक्षस का भाई छलकर ब्राह्मण बन राजा के यहां गया राजाने उसको अपना पाककर्त्ता बनाया एक समय वशिष्ठजीको इसने मनुष्य मांस खिलादिया इससे मुनिने राजाको शापदिया कि तू कल्मापपाद नामी राक्षस होकर मनुष्य भक्षण करै इस प्रकार राजा राक्षसहो मनुष्यों को मार २ खानेलगा एक समय वनमें एक मुनिको स्त्रीप्रसंग समय मारखाया तो मुनिपत्नी शापदिया कि तूभी जो अपनी स्त्रीसे भोग करेगा तो मरजायगा एक इस शापको भूलकर अपनी स्त्री से भोगकर मृत्यु को प्राप्त हुआ तब वशिष्ठजीने सोचा कि अब सूर्यवंश में कोई न रहगया तो उस स्त्रीसे एक बालक उत्पन्न किया और उसका नाम अंशुक रक्खा तत्पश्चात् मित्रसह पुत्रको राज्य सौंप तप हेतु उत्तराखंड को गया और मिथिलापुरी में पहुंच गौतम ऋषिके उपदेश से महाबल शिवलिंग का दर्शनकर ब्रह्महत्या से मुक्तहुआ-

रुद्राक्ष की उत्पत्ति ॥

जब श्रीमहादेवजी एक दिव्य सहस्र वर्ष तपस्या के पश्चात् अपने नेत्रों को खोला तो दो बिन्दुजल अर्थात् आंसू उनके नेत्रोंसे गिरे और उसी आंसू से रुद्राक्ष उत्पन्न हुआ उनके कई भेद होतेहैं यथा-एकमुखी, द्विमुखी, त्रिमुखी, चतुर्मुखी पंचमुखी, षट्मुखी, सप्तमुखी, अष्टमुखी, नवमुखी, दशमुखी, एकादशमुखी, द्वादशमुखी, त्रयोदशमुखी और चतुर्दशमुखी-

भीमदैत्य ॥

पिता–कुंभकर्ण, माता–एक विधवा राक्षसी–

एक समय भीमने अपनी मातासे पूछा कि मेरा पिता कौनहै और कहांहै उसने उत्तर दिया कि तेरा पिता कुंभकर्ण है और रामकरसे वहो स्वर्गवासी हुआ तब मैं अपने पिताके घर चलीआई मुनियोंने मेरे पिता को मारडाला तोमैं तुझ कोले इस वनको भागआईहूं यह भीम महाक्रोधकर देवतोंसे लड़ा और देवगण परास्तहो भागगये तब उसने सोचा कि जो शिवजी रामचन्द्र को अपना वाण न देते तो मेरा पिता न माराजाता इस कारण वह शिवभक्तों को दुःख देनेलगा और कामरूप देशमें जा शिवमन्दिरों को तोड़ वहां के राजा प्रियधर्म और उसकी रानी दक्षाको ज्योंही खड्गले मारनेलगा त्योंही शिवजी प्रकट होकर उसको भस्म करदिया–तभी से वहांपर भीम पत्थर होकर पूर्वशंकर नाम से और शिवजी भीमशंकर नाम से प्रसिद्धहुये–

इन्द्रसेन राजा ॥

यह राजा कलियुग में महादुष्ट होकर ब्राह्मणों और मुनियों को दुःख देने लगा तो शिवने सिंहरूप धारणकर उसको वधकिया मृत्यु समय उसके मुख से आहर परहर शब्द निकला जिससे वह शिवगणों में होगया–

दाशार्ह राजा ॥

इस यदुवंशी राजाने काशीके राजाकी कन्या कलावती के संग विवाहकर, उसके निकट गया तो उसका तेज अग्निसम देख उससे पूछा कि इसका कारण क्याहै उसने कहा कि तुम पंचाक्षरी जपो तो हमारे निकट आसक्तेहो राजा,ने ऐसाही किया तो उस स्त्रीका अंग चन्दन सम शीतलहोगया–

सुमति ब्राह्मणी ॥

इसका विवाह एक ब्राह्मण के साथ हुआथा परन्तु जब उस ब्राह्मण का देहान्त होगया तो वह दुष्टकर्म्म करनेलगी और एक शूद्रके साथ रहकर मदिरा पिया करतीथी एकदिन एक गऊशाले में जा एक बछड़े को मारडाला—कुछदिन उपरान्त उसका देहान्त होगया तो वह एक चांडाल के गृह उत्पन्न हुई और अंधी होनेके कारण महाकष्टको प्राप्त होती भई एकदिन भूखसे विकलहो गो· कर्ण तीर्थमें माघकृष्ण चतुर्दशी को गई और भोजन मिलने की आशा में रात भर जगी परन्तु भोजन न मिला इस कारण उसका देहान्त होगया और उसदिन के जागरण करने के कारण शिवलोक को प्राप्तहुई—

दारुकराक्षस ॥

स्त्री—दारुका—

दारुका के तपसे गिरिजाने प्रसन्नहो उसको वरदिया कि तेरे साथ दारुक वन भी फिराकरेगा इस कारण वह जहां २ जातीथी तहां २ उसके साथ वह वन भी घूमता था और दारुक उसका पति चारोंओर उपद्रव करनेलगा तो उर्वमुनिने शापदिया कि जो तू किसीको कष्टदेगा तो तू नष्ट होजायगा इस कारण वह पश्चिम समुद्रमें एक नगर (अरब) १६ योजनका वसाया और जो नाव उधरसे निकलती थी उसको पकड़कर उसमें के मनुष्यों को वन्दीगृह में डालदेताथा. एक दिन एक नावको जिसमें वैश्यपति नामी शिवभक्तभी था पकड़ालिया वैश्यपतिके सहायार्थ शिवजीने आकर सब दैत्योंको मारडाला केवल दारुक अपनी स्त्रीसहित गिरिजा के बचाने से बचरहे और वहींपर वैश्यपतिने नागेश्वरनाथ लिंग स्थापित किया—

एक समय नैषध देशका राजा उस देशमें नागेश्वरनाथ के दर्शनार्थ गया और वहांपर पहुँच दैत्यों को वधकिया और केवल दारुक को छोड़कर गिरिजा की आज्ञानुसार फिर राज्य करनेलगा—

हैहय राजा ॥

पिता-विष्णु (हयरूप में), माता-लक्ष्मी (घोड़ीरूप में)

जन्म-एक समय सूर्यका पुत्र रेवन्त अश्वारूढ़हो विष्णु के दर्शन को गया वहां पर लक्ष्मीजी उस घोड़ेकारूप एकटक देखनेलगीं तब विष्णुने लक्ष्मीको शापदिया कि तू घोड़ी होजाय इस प्रकार घोड़ीरूपहो वन में तप करने लगी कुछदिन उपरान्त शिवके कहने से घोड़ाका रूपधर विष्णुने उस घोड़ी से प्रसंग किया जिससे एक बालक उत्पन्न हुआ उसको तुर्वसु (ययाति सुत) को दे आप वैकुण्ठ को चलेगये राजाने उस बालकका नाम हैहय अथवा एकवीररक्खा और कुछदिन उपरान्त उस बालकको राज्यदे रानीसहित मैनाक पर्वतपर तप कर तन त्याग किया-

स्त्री-एकावली (जिसके पिताका नाम रम्य और माताका नाम रत्नरेखा था यह कन्या यज्ञके अग्निकुण्डसे निकली थी) और दूसरी स्त्री यशोवती थी जो राजारम्यके मंत्रीकी कन्या थी-जब एकावली सयानीहुई तो उसको कालकेतु दानव हरलेगया तब यशोवती राजा हैहयको अहेर खेलतेसे लिवा लेगई और राजाने कालकेतुको मारकर उस कन्याको उसके पिताको सौंप दिया तत्पश्चात् उसके पिताने उस कन्याका विवाह हैहयकेसाथ करादिया-

वंशावली-

विष्णु (अश्वरूप में अथवा तुर्वसु-)
|
हैहय (एकवीर)
|
कृतवीर्य
|
कार्तवीर्य (सहस्रबाहु)
|
जयध्वजआदि १००० सुत
|
तालजंघ
|
सुत

मनु अर्थात् मन्वन्तर ॥

चौदह मनुओंके नाम उनके पुत्रों, उनके समय के ऋषियों और देवताओं और इन्द्रके नाम नीचे लिखे हैं-

१	१४ मनुओं के नाम	पुत्र	सप्तऋषि	देवता	१४इन्द्र
	स्वायम्भुवमनु	अग्नीध्र, अग्निबाहु, मेधा, मेधातिथि, वसु, ज्योतिष्मान्, द्युतिमान्, हव्य, सवन, शुभ्र—	मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, वशिष्ठ—	याम	यम
२	स्वारोचिषमनु	हवि, ध्रुव, सुकृत, ज्योति, मूर्ति, तप, पृथु, मुनस्य, नभ, सूर्य—	उरजस्तंभ, परस्तंभ, ऋषभ, वसुमत, ज्योतिष्मान्, द्युतिमत, रोचिषमत—	तेसितुषित	रोचन
३	उत्तम	दक्ष, ऊर्जित, ऊर्ज, मधु, माधव, शुचि, शुक्रवह, नभस, नभ, ऋषभ-	सप्तऋषीश्वरों के नाम ऊर्ज हुये—	सत्यवेदश्रुत—	सत्यजित्
४	तामस	द्युतिपति, सौतपस्य, तप, तापन, तपरति, मूल, अकल्माप, धन्वी, खड्गी, महर्षि-	गर्ग, पृथु, वाग्नि, जन्य, धाता, कपीनु, कापिलवास—	सत्य	विशिख

	मनु	पुत्र	ऋषि	देवता	इन्द्र
५	रैवत	अकल्माप, धन्वी, खङ्ग, महर्षि, अरण्यप्रकाश, निदेह, सत्य, चित्त, ऋतु, निरुत्सव—	देववाहु, जयश्रुत, शिर, कनकरोम, परिजन्य, ऊर्ध्ववाहु, सोमप—	भूत	विभु
६	चाक्षुप	वहीनाम जो पांचवें मनुके पुत्रों के हैं—	भृगु, सुन्दर, अम्बर, विवस्वत, सुधर्म, विरजा, सुहेतु—	आप, प्रसूर, ऋतु, पृथुग्र, सेल—	मेत्रद्रुम
७	वैवस्वत अर्थात् श्राद्धदेव—	इक्ष्वाकु, भृगु, गरुड़ धृष्ट, सर्याति, नरिष्यत, नाभाग, दिष्टक, रोप, प्रपध्र, वसुमान्—	अत्रि, वशिष्ठ, कश्यप, गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, जमदग्नि—	विश्वामित्र	पुरन्दर
८	सावर्णि	वीरवान्, अन्तिवन्, सुमन्त, धृतिमान्, वसु, वरिष्णु, आरप, विष्णुराज, सुमति—	पराशर, व्यास, अत्रिज, कृपाचार्य, द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा, गालव्य—	अज, मरीचि कश्यप	वलि
९	रुचि—	धृष्टकेतु, दीप्तिकेतु, पंचहस्त, निरहत, रूपकेतु, पृथुश्रव, द्युम्नश्रव, ऋचीक, गयबृहत्—	मेधातिथि, वसु, सौतिमान, धृतिमान, सावर्णि, हव्य, पुलह—	प्रियमुख	प्रभु

	मनु	पुत्र	ऋषि	देवता	इन्द्र
१०	ब्रह्मसावर्णि	अक्षय, उत्तमौजस, भूरिसेन, वृषसेन, शतानीक, निरमित्र, जयद्रथ, भूरिद्युम्न, दर्श, सुवर्चि—	वही ऋषीश्वर जो आठवें मनुके समय में रहे—	द्विष्मत	शंभु
११	धर्मसावर्णि	सर्वगत, सुरानीक, क्षामक, दर्शकुहुवाहु, नामखंड, मनु, दृढेषु, सुशर्म, अदाह-	हविष्मत, अनवद्य, निरस्वर, अपवर्ग, चारुधृष्ट, वशिष्ठ, दक्ष—	भंगम, कामगम, निर्वाण, मकाम-	वैधृत
१२	रुद्रसावर्णि	देवयान, उपदेव, देवश्रेष्ठ, सुरनाथ, देवक, देवमवर, वरदेव, देवप्रिय, सुरप्रिय, प्रियदेवा-	वशिष्ठ, अत्रि, आंगिरा, कश्यप, पुलह, भृगु इन सबके पुत्र और पुलस्त्य—	पंचहरित	ऋतुधाम
१३	देवसावर्णि	चित्र, विचित्र, तप, धर्मधृत, अभ्र, सुनेत्र, क्षेत्रवृद्ध, निर्भय, द्रोण, सुतप—	धृतमति, हव्यवान, तत्त्वदर्शी, सुतपाणि, परायक, निरुत्सव, निर्देह—	सुनराम	दिवस्पति
१४	मनु	उरुन, तरंग, मेरु, विष्णु, प्रवीण, सुनन्दन, तेजस्वी, सम्बल, ततुग्र, अनूप-	अग्नीध्र, मागध, अतिबाहु, शुचि-शुक्र, शुक्र, अजित—	चाक्षुप	शुचि

दान (४)

चारमुख्य दानहैं-१ रोगी को औषधदेना, २ शरणागतको बचाना, ३ विद्यार्थी को विद्यापढ़ाना, ४ भूखोंको खिलाना-

षोड़शदान १६ हैं- १ धरती २ आसन ३ पानी ४ कपड़ा ५ दीपक ६ अनाज ७ पान ८ छत्र ९ सुगन्धित चीज़ १० फूलों की माला ११ फल १२ सेज १३ खड़ाऊं १४ गाय १५ सोना १६ रुपयाचांदी-

ऋण (३)

ऋण तीन हैं-१ देवऋण, २ पितृऋण, ३ ऋषिऋण-

शस्त्र अर्थात् हथियार (५)

शस्त्र पांचप्रकारके होतेहैं-हर्षण, शोषण, रोचन, मोहन, मारण-

नाम २०-खट्वांग, खंग, चर्म,पाश,अंकुश,डमरू,शूल, चाप, बाण, गदा, शक्ति, भिन्दिपाल, तोमर, मुशल, मुद्गर, पट्टिश, परिघ, भुशुण्डि, चक्र आदि-

उपचार ॥

पूजनके उपचार १६ हैं-बिछौना, आवाहन, आसन, पाद्य, अर्घ, आचमन, स्नान, यज्ञोपवीत, चन्दन सुगन्धित, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, प्रणाम, प्रदक्षिणा, विसर्जन-

तिलक-(२)

त्रिपुण्ड्रतिलक-भालपर दोनों भौंहों के बीच में खड़ी दो लकीरें तो एक अनामिका और दूसरी मध्यमा अंगुली से बनावे और उन दोनों लकीरों के बीचमें एक लकीर अंगुष्ठ से बनावे-

द्वादशतिलक-शिर,माथा, गर्दन,छाती, दोनोंपांजर, दोनों भुजा,नाभि,कटि, कण्ठ, हृदय इन स्थानों में तिलक देनेको द्वादश कहतेहैं-

तत्त्व और प्रकृति ॥

तत्त्व पांचहैं और हरएक तत्त्वमें पांच पांच प्रकृति होती हैं-

तत्त्व		प्रकृति
१	पृथ्वी-	त्वचा, केश, मांस, नाड़ी, अस्थि-
२	जल-	ज्योति, पसीना, रक्त, लार, मूत्र-
३	अग्नि-	प्यास, भूख, नींद, थकना, आलस्य-
४	वायु-	दौड़ना, लेटना, कांपना, चलना, संकोच-
५	आकाश-	काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय-

दर्शन (४)

दर्शन चारप्रकारके हैं-राजा, यती, पतिव्रतास्त्री, बावना ब्राह्मण-

नवधाभक्ति (९)

भक्ति ९ प्रकारकीहै-सेवन, स्मरण, कीर्तन, अर्चन, श्रवण, दास्य, वन्दन, सख्य, समर्पण-

शृंगार (१६)

शृंगार १६ हैं-मज्जन, सुन्दर वस्त्र, तिलक, अंजन, कुण्डल, नासामौक्तिक, केशहार, कुसुम, नूपुर, चन्दन, कंचुकि, मणि, क्षुद्रावली, घण्टिका, ताम्बूल, कंकण-

आभूषण (१२)

आभूषण १२ हैं-१ नूपुर २ किंकिणी ३ चूरी ४ मुँदरी ५ कंकण ६ बाजूबन्द ७ हार ८ कण्ठश्री ९ बेसर १० बिरिया ११ टीका १२ शीशफूल-

व्यसन (१८)

१८ व्यसन यह हैं-अहेर, दिन में सोना, निरर्थक वचन, स्त्रीआधीन होना, मैथुनादिकी वार्त्ता, मद्यपान, जुआ, गान, नृत्यदेखना, बाजाबजाना, व्यभिचार, शत्रुता, ईर्षा, विपरीत वाक्य, कठोरवचन, शीघ्रमारना, गाली, अपने स्वामी का अहित चाहना-

षट्कर्म (६)

षट्कर्मकेनाम-वेद पढ़ना, वेदपढ़ाना, दानदेना, दानलेना, जप करना, जपकराना-यह छःकर्म ब्राह्मणके हैं-

योनि ॥

८४ लाख योनि हैं-जिसमें वृक्ष २० लाख, जलसे उत्पन्न ९ लाख, कृमिआदि ११ लाख, पक्षी १० लाख, चतुष्पद ३० लाख, मनुष्य ४ लाख हैं-

पंचकन्या ॥

पंचकन्याओंके नाम और उनके पतिके नाम नीचे लिखे जाते हैं-

नाम कन्या	नामपति	नाम कन्या	नाम पति
अहल्या	गौतम	कुन्ती	पाण्डु
द्रौपदी	पंचपाण्डव	मन्दोदरी	रावण
तारा	वालि		

महाविद्या ॥

१२ महाविद्याओंकेनाम–तारा, काली, भुवनेश्वरी, भैरवी, कमला, बगला-मुखी, छिन्नमस्ता, धूमावती, मातंगी–

षोड़शकर्म (१६)

१ गर्भाधान २ पुंसवन ३ सीमंत ४ जातिकर्म ५ नामकरण ६ निष्क्रमण ७ अन्नप्राशन ८ मुण्डन ९ कर्णवेध १० उपनयन ११ वेदारंभ १२ ब्रह्मचर्य १३ विवाह १४ गृहाश्रम १५ द्विरागमन १६ वानप्रस्थ–

उपासक ॥

पांचभांतिके उपासक के नाम–शैव, वैष्णव, शाक्तथ, सौरि, गाणपत्य, और जैनमत और बौद्धमत इनसे बाहरहैं–

अंग ॥

काव्यके अंग यहहैं–शब्द, अर्थ, छन्द, प्रश्न, नायक, रीति, गुण, अलंकार, रस, व्यंग–

प्रकृति ॥

पांचप्रकृतिके नाम–दुर्गा, लक्ष्मी, वाणी, शाकम्भरी, राधा—

२५ दैहिक प्रकृतिके नाम तत्वके वर्णन में देखो–

शक्ति (८)

आठशक्तिकेनाम-इन्द्राणी, कौमारी, ब्रह्माणी, वाराही, चामुण्डी, वैष्णवी माहेश्वरी, विनायकी–

आकर ॥

चारों आकरके नाम उदाहरण सहित–

	आकर	अर्थ	दृष्टान्त
१	अंडज	अंडेसे उत्पन्न	पक्षी, कीड़े आदि
२	पिंडज	देहसहित उत्पन्न	मनुष्य, पशु
३	स्वेदज	पसीना से अथवा जलसे	जुआं
४	स्थावर	पृथ्वीसे उत्पन्न	वृक्षआदि–

नाड़ी ॥

३ नाड़ी के नाम अर्थ सहित–

	नाम	अर्थ	
१	पिंगला	नासिकाका	दहिना श्वास चलना
२	इड़ा		बायां श्वास चलना
३	सुषुम्णा		दोनोंश्वास बराबर चलना

रस ॥

छःरसोंके नाम–मधुर, कषारी, खटाई, कटुक, तिक्त, लवण–

धातु ॥

पृथ्वी से उत्पन्न ७ धातों के नाम–सोना, चांदी, तांबा, रांगा, सीसा, लोहा, जस्ता–

शारीरिक ७ धातु येहैं–चर्म, रुधिर, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा, वीर्य–

उपधातु ॥

उपधातु ७ हैं-सोनामक्खी, रूपराज, तूतिया. कांसा, सिन्दूर, शिलाजीत-

व्यंजन ॥

३६ प्रकार के व्यंजन होतेहैं परन्तु उनमें ४ मुख्य जिनके और सब शाखा हैं-भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य-

चक्र ॥

चक्रों के भेद-मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूर, अनाहदक, विशुद्ध-

पंचामृत ॥

दही, दूध, शकर, मधु और घी मिलाने से पंचामृत बनता है-

(८ नायिका)

१ प्रोषितपतिका २ खण्डिता ३ कलहन्तरिता ४ विप्रलब्धा ५ उत्कण्ठिता ६ वासकशय्या ७ स्वाधीनपतिका ८ अभिसारिका-

वनमाला ॥

जिस माला में तुलसी, कुन्द, मन्दार, पारिजातक, कमल यह वस्तु लगीहों उसको वनमाला कहते हैं-

महानाग ॥

८ महानागों के नाम-वासुकी, तक्षक, कर्कोटक, शंख, कुलिक, पद्म, महापद्म, महानाग-तथा धर १ ध्रुव २ सोम ३ सावित्र ४ अनिल ५ अनल ६ प्रत्यूप ७ प्रभास ८

नाथ ॥

९ नाथ के नाम-परमानन्द, प्रकाशानन्द, काकुलेश्वरानन्द, पोलेश्वरानन्द, भुगानन्द, सहजानन्द, गंगणानन्द, विमलानन्द, नाथ-

रत्न (५)

पंचरत्नों के नाम-सोना, चांदी, मोती, लाजावर्त, प्रवाल-

नवरत्नों के नाम (९)–माणिक्य, मुक्ता, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, लहसुनियां वैडूर्य्य, गोमेदक–

ग्यारहरत्नों के नाम (११)–बिल्लौर, वज्र, पद्मराग, नीलम, सरित्त, पुष्पराज, वैडूर्य्य, गोमेदक, स्फटिक, लहसुनियां, मवाल–

महारत्नों के नाम–बिल्लौर, वज्र, पद्मराग, नीलम, सरित्त–

चौदह रत्न जो समुद्र मथन से निकले–(कच्छप क० दे०)–

श्री, मणि, रम्भा, वारुणी, अमिय, शंख, गजराज, कल्पद्रुम, धनु, धेनु, शशि, धान्वन्तरि, विष, वाजि–

(९) निधि ॥

कच्छप कुंदमकुंद अरु नीलशंख गुनि खर्व, मकर पद्म महापद्म नवनिधि जानुसुसर्व–

सिद्धि ॥

आठों सिद्धि के नाम अर्थ सहित–

	नाम	अर्थ
१	अणिमा–	ऐसा छोटारूप धारण करना कि कोई देख न सके–
२	महिमा–	उड़ने की शक्ति करलेना–
३	गरिमा	ऐसा भारी होना कि कोई उठा न सके–
४	लघिमा	लघुरूप रखना–
५	प्राप्ति	
६	प्राकाम्य	
७	ईशित्व	
८	वशित्व	

फल अथवा पदार्थ ॥

चारफल अथवा पदार्थ के नाम–अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष–

मुक्ति ॥

चार प्रकार के मुक्तियों के नाम अर्थ सहित ॥

नाम	अर्थ
१ सालोक्य	परमात्मा के लोक में रहना–
२ सारूप्य–	परमात्मा सदृश रूप धारकर रहना
३ सामीप्य–	परमात्मा के समीप रहना–
४ सायुज्य–	परमात्मा में मिलजाना–
५ सार्ष्टि–	

विद्या ॥

चौदह विद्याओं के नाम ॥

१ ब्रह्मज्ञान, २ गायन, ३ रसायन, ४ ज्योतिष, ५ वैद्यक, ६ शस्त्रविद्या, ७ पैरना, ८ व्याकरण, ९ छन्द, १० कोक, ११ काव्य, १२ घोड़ेकी सवारी, १३ नटविद्या, १४ चातुरीविद्या–

राजश्री ॥

राजाओं को ७ वस्तु अवश्य हैं उन्हीं को राजश्री कहते हैं–

१ मंत्री, २ शस्त्र, ३ घोड़ा, ४ हाथी, ५ देश, ६ कोष, ७ गढ़–

आश्रम (४)

नाम-	अवस्था से-अवस्था तक-	कर्म
१ ब्रह्मचर्य	१ से १६ वर्ष	विद्या सीखना
२ गृहस्थ	१६ से ३२ वर्ष	गृहस्थी में रहना-
३ वानप्रस्थ	३२ से ४८ वर्ष	योग सीखना-
४ संन्यास	४८ से ६४ वर्ष	दंडको लिये रहना-

काल (३)

तीनकाल के नाम-१ भूत, २ वर्तमान, ३ भविष्य-

भक्त (१४)

चौदह परमभागवतके नाम-१ प्रह्लाद, २ नारद, ३ पराशर, ४ अम्बरीप, ५ व्यास, ६ शुक, ७ शौनक, ८ भीष्म, ९ रुक्मांगद, १० अर्जुन, ११ पुण्डरीक, १२ वशिष्ठ, १३ विभीषण, १४ बलि-

ईति (६)

१ अकाल, २ अवर्षण, ३ टिड्डी, ४ मूषक, ५ ओला, ६ अतिवर्षा-

पशुपति (१४)

पशुपति के नाम-१ दुर्वासा, २ कौशिक, ३ ब्रह्मा, ४ मार्कण्डेय, ५ इन्द्र, ६ बाणासुर, ७ विष्णु, ८ शक्ति, ९ मरीचि, १० रामचन्द्र, ११ गणादि, १२ भार्गव, १३ बृहस्पति, १४ गौतम-

तंत्र (६४)

तंत्रों के नाम-१ वीर, २ सुतंत्र, ३ फटकारी, ४ गलचूड़ामणि, ५ कालीकल्प,

६ कालिकाकुल, ७ काली, ८ तत्त्व, ९ भैरव, १० कौमारी, ११ कालक, १२ कोलार्णव १३ ज्ञानार्णव, १४ कालकुलार्णव, १५ शारदा तिलक, १६ कालिकाश्रुति १७ कौमारीकल्प, १८ वीजचूड़ामणि, १९ उत्तर विजयाकल्प, २० रुद्रयामलि, २१ सभ मोहन, २२ नारायणी, २३ सारस्वत, २४ भावचूड़ामणि, २५ श्रीकर्म, २६ चीणतुण्ड, २७ विमलेश्वरी, २८ मुंडमाला, २९ संकर्षण, ३० गंधर्व, ३१ दक्षिणामूर्ति, ३२ संधित ३३ तारातंत्र, ३४, नीरतंत्र, ३५ मंत्ररत्नावली, ३६ कुब्जका, ३७ सिद्धेश्वर, ३८ कोलकाकुल, ३९ नीलभद्र, ४० कुलप्रकाश, ४१ सिद्धसारस्वत, ४२ कुलसतभाव, ४३ वामकेश्वर, ४४ तारार्णव, ४५ कालिकाकल्प, ४६ योगिनीतंत्र, ४७ वीरमंत्र, ४८ शुक्रियामलि–लिंगागम, ४९ ताराप्रदीप, ५० गोपतंत्र, ५१ कालिकामहोग्र, ५२ ताराकल्प, ५३ वाराहसंहिता, ५४ मत्स्यसूत, ५५ उड्डीश, ५६ मेरुताराश्वर, ५७ चूड़ामणि, ५८ गलसंभार, ५९ गलतंत्र, ६० ब्रह्मयामलि–

कला ६४ ॥

१ लिखना, २ बजाना, ३ चोरी, ४ नाचना, ५ गाना ६ नटकर्तव, ७ झूंठ को सच दिखाना, ८ चित्रकारी, ९ तीरसे फूल वा चावलादि काटना, १० पुष्पशय्या बनाना, ११ दांतोंकी सफाई, १२ वस्त्र की सफाई, १३ बालोंकी स्वच्छता, १४ रंगोंकी पहिचान, १५ स्वांग करना, १६ सोनेकी युक्ति, १७ कुवांतालादि बनाना, १८ नदी वा नावमें निशाना मारना, १९ मछली मारना, २० माला बनाना, २१ जूड़ाबांधना, २२ मुकुट बांधना. २३ वस्त्रकी सजावट, २४ फूलोंका गहना बनाना, २५ इतर आदि बनाना, २६ इन्द्रजाल, २७ प्रसूतिमें सुगमताकी युक्ति, २८ जल्दी खेलना, २९ तरकारी वा चावलादि पकाना, ३० कसार

पकानेकी युक्ति, ३१ चूर्णबनाना, ३२ मेव्य और अश्वादि का खींचना, ३३ सीना, ३४ बद्धीखेलना, ३५ डमरूबजाना, ३६ छलियोंको खेलमें परास्त करना, ३७ सम्पूर्ण पुस्तकोंको पढ़लेना, ३८ नाटक, ३९ सामयिक श्लोक कहना, ४० लठबाजी, ४१ तलवारबाजी, ४२ बाणयुद्ध, ४३ हास्य, ४४ गढ़ीबनाना, ४५ रत्नपरीक्षा, ४६ मुद्रापरीक्षा, ४७ धातुपरीक्षा, ४८ रत्नोंकेरंग की पहिचान, ४९ बुरेभलेमनुष्य की पहिचान, ५० रसादि बनाना, ५१ चिकित्सा आदि करना, ५२ मेढ़ा पक्षी आदि लड़ाना, ५३ तोता मैना आदिपढ़ाना, ५४ बालोंका गिराना, ५५ बालधोनेकी युक्ति, ५६ मन और हाथकी गुप्तवस्तु को बूझना, ५७ बहुत देशोंकी भाषा सीखना, ५८ पुष्पकी सजावट, ५९ सम्पूर्ण अक्षर यंत्रमें लाना, ६० अपनी ओरसे अक्षर रखना, ६१ मनमें श्लोक कहना, ६२ काम करके छोड़देना, ६३ वस्त्रचुराना, ६४ लड़कों को खिलाना–

वर्ण (४)

१ ब्राह्मण–इनके दो भेदहैं १ पंचगौड़ और २ पंचद्रविड़–पुनः पंचगौड़के भेद सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल, उत्कल और पंचद्रविड़ के–गुर्जर, द्राविड़, महाराष्ट्र, करनाट, तैलंग–,

२ क्षत्रिय–इनके दो भेद सूर्यवंशी और सोमवंशी हैं–सूर्यवंशी के भेद कछवाहा, रंठौर आदि और सोमवंशीके भेद–यदुवंशी, चन्देल आदि–

३ वैश्य– ४ शूद्र–कायस्थ, अहीर, नाईआदि–

(६ ऋतु) (१२ मास)

१ हिम–अगहन और पौषमें– २ शिशिर–माघ, फाल्गुन में–
३ बसन्त–चैत्र, वैशाख में– ४ ग्रीष्म–ज्येष्ठ, आषाढ़में–
५ वर्षा–श्रावण, भाद्रपद में– ६ शरद्–आश्विन, कार्तिकमें–

बाजा ॥

बाजा ३॥ प्रकारके होतेहैं-

१ खाल-जैसे-नगारा, ढोल, पखावज आदि-

२ तार-जैसे-तम्बूर, सारंगी, वीणा, सितार आदि-

३ फूंक-जैसे-नफीरी, बांसुरी, सहनाई आदि-

३॥ आधे बाजेमें मंजीरा, झांझआदि-

युग (४)

नाम युग	प्रमाण वर्षमें	नाम युग	प्रमाण वर्षमें
१ सत्ययुग-	१७२८०००	२ त्रेतायुग-	१२९६०००
३ द्वापर-	८६४०००	४ कलियुग-	४३२०००

अन्तःकरण (४)

१ मन, २ चित्त, ३ बुद्धि, ४ अहंकार-

उपनिषद् (५२)

१ मांडूक्य, २ बृहदारण्य, ३ ईशावास्य, ४ मयत्री, ५ मुंडक, ६ सर्व, ७ अंश, ८ नारायण, ९ प्रणव, १० अथर्व, ११ सरहंस, १२ अमृत, १३ कोकनिक, १४ शरद्, १५ आसुर, १६ वेद, १७ महात्मा, १८ प्रबोध, १९ केवल, २० शतरुद्र, २१ योग, २२ अथर्वशिखा, २३ योगतत्त्वानन्द, २४ शिवसंकल्प, २५ आत्मा, २६ ब्रह्मविद्या, २७ अमृतवेद, २८ तेजबधि, २९ गवय, ३० जामालि, ३१ महानारायण, ३२ छांडूक, ३३ शुक्ल, ३४ छुरिका, ३५ परमहंस, ३६ अर्धुक, ३७ केनकेवली, ३८ आनन्दवल्ली, ३९ भृगुवल्ली, ४० मृगुसूक्त, ४१ योगशिखा, ४२ मूतलांगूल, ४३ अमृतनाद, ४४ झांकली,

४५ माण्कलतारक, ४६ अरूकनी, ४७ भगान, ४८ सुमक, ४९ नृसिंह, ५० अमरमाध्वी—

अनहद शब्द वा नाद ॥

१० नादोंके नाम—घंटा, शंख, वीणा, ताल, बांसुरी, मृदंग, नफीरी, बादल के गरज सदृश आदि—

स्वर (५ वा ७)

१ षड्ज, २ ऋषभ, ३ गांधार, ४ मध्यम, ५ पंचम, ६ धैवत, ७ निषाद—और कोई पांचवें और छठेंको छोड़कर पांचही स्वर बतलाते हैं—

शास्त्र (६)

नाम—निर्माणिक	नाम—निर्माणिक
१ मीमांसा—जैमिनि	२ पातंजलि—शेष
३ सांख्य—कपिलमुनि	४ न्याय—वशिष्ठ
५ वैशेषिक—गौतम	६ वेदान्त—वशिष्ठ

राग (६) और रागिनी (३६)

राग—	उनकीरागिनी—

१ भैरव—भैरवी, रामकली, गुर्जरी, टोड़ी, वैराटी—

२ मालकौस—वागेश्वरी, कुकुभा, मणिका, सोहनी, खंभावती—

३ हिंडोल—बसन्ती, पंचमी, बिलावली, ललिता, देशाकुशनी—

४ दीपक—धनाश्री, नट, जयत, भीमपलासी, कामोदा,

५ श्री—मालवी, त्रिवनी, गौरी, पूर्वी, जटनकुटा—

६ मेघ—सोरठी, मलारी, शार्ङ्गी, हरिवंशा, मधुमाधवी—

गुण (१४)

गुण १४ हैं-१ बुद्धि, २ सुख, ३ दुःख, ४ इच्छा, ५ देश, ६ यत्न, ७ संख्या, ८ प्रमाण ९ पृथ, १० संयोग, ११ विभाग, १२ भावना, १३ धर्म, १४ अधर्म-

मायासे उत्पन्नगुण-सत, रज, तम,-तीनहैं-

अंग (८ योगके)

१ यम-अर्थात् किसी जीवको दुःख न देना, सच्चाई, चोरी न करना, ब्रह्मचर्यरहना, किसीसे कुछ न मांगना-
२ नियम-अर्थात् तपस्याकरना, जप, शौच, ईश्वरपूजन-
३ आसन-
४ प्राणायाम-अर्थात् श्वास रोकना-
५ प्रत्याहार-अर्थात् इन्द्रियों के प्रियकर्म न करना-
६ धारणा-
७ ध्यान-
८ समाधि-

विकार (६)

जन्मलेना १ स्थितरहना २ बढ़ना ३ विपरिणाम ४ अपक्षीण ५ विनाश ६

उपपुराण (१८)

१ काली, २ शाम्ब, ३ सनत्कुमार, ४ वरुण, ५ मारीचि, ६ नन्दी, ७ शिव, ८ दुर्वासा, ९ मुनि, १० नारदीय, ११ कपिल, १२ सौरि, १३ माहेश्वरी, १४ शुक्र, १५ भार्गव, १६ नृसिंह, १७ धर्म, १८ पाराशर-

स्मृति (१८)

१ मनु, २ याज्ञवल्क्य, ३ मिताक्षरा, ४ हारीति, ५ पाराशर, ६ भृगु, ७ सामपिति, ८ कात्यायन, ९ वशिष्ठ, १० भरद्वाज, ११ कौशिक, १२ वार्हसाति, १३ गौतम, १४ कश्यप, १५ आसुर, १६ जमदग्नि, १७ अस, १८ यम—

षट्प्रयोग (६)

१ शांति २ वशीकरण ३ स्तम्भन ४ विद्वेषण ५ उच्चाटन ६ मारण—

जनक राजा ॥

नाम—विदेह (यह नाम इस कारण हुआ कि ईश्वर भजन में ऐसे लीन रहतेथे कि अपनी देहकी भी सुधि न रखतेथे)·

स्त्री—सुनैना (इनकी उत्पत्ति पितर क० दे०)

पुत्र—लक्ष्मीनिधि (जिसकी स्त्रीका नाम सिद्धिकुँवरि था)

भाई—श्रुतिकेतु (जिनकी कन्या श्रुतिकीर्ति शत्रुहन को विवाहीगई) और कुशकेतु (जिसकी कन्या मांडवी भरतजी को विवाहीगई)

कन्या—उर्मिला (सुनैना से उत्पन्न हुई और लक्ष्मणजी को विवाहीगई) और सीताजी (पृथ्वी से उत्पन्न हुई और श्रीरामचन्द्रको विवाहीगई)

वंश—निमिवंश—(निमि क० दे०)

गुरु—शतानन्द (गौतम के पुत्र इनकी वंशावली चन्द्र वं० दे०)

जब जनकपुर में अकाल पड़ाथा तो उसके निवृत्त्यर्थ राजा जनक निजकरसे सुवर्णका हल लेकर जोतनेलगे और हलके सीत (फाल) के लगनेसे पृथ्वीसे एक घड़ा निकला (यह वह घड़ाथा जिसको मुनियोंने अपने २ जंघाके रक्तसे भरकर रावण के दूतोंको जो मुनियों से दंडलेते आयेथे देकर कहा कि इसघट के खुलतेही रावण का नाश होगा—यह वृत्तान्त दूतों के मुखसे सुनकर रावणने

इस घटको गुप्तरीति से जनक राज्यमें गड़वादियाथा) और उस घटसे श्री सीता की उत्पत्ति हुई—

जबसे शिवजीने त्रिपुर वध पश्चात् अपना धनुष जनक गृहमें रखदिया तब से उसकी पूजा विधिपूर्वक होतीरही एक समय जानकीजी ने उस गृहमें चौकादेने हेतु उस धनुष को जिसको कई सहस्र मनुष्य नहीं उठासक्ते थे उठाकर अलग रखदिया यह वृत्तान्त देख राजाने यह प्रण किया कि जो इस धनुष को तोड़ेगा उसीके संग सीताजी का विवाह होगा—और इस प्रणको श्रीरामचन्द्र ने पूर्णकर मायारूपी सीता को अंगीकार किया—

सुग्रीव ॥

नाम—कपिपति, सुकंठ, कपिन्द्—　　　**पिता**—सूर्य—

जन्म—एक समय सुमेरु पर्वतपर ब्रह्माजी ध्यान में स्थितथे कि उनके नेत्रों से प्रेमजल गिरनेलगे उसको निज करमें लेकर होनहारका चिन्तवनकरके भूमिमें छोड़दिया—जिससे एक कपि उत्पन्न हुआ और वह ब्रह्माज्ञा से पर्वतपर विचरनेलगा एक दिवस तड़ाग में निजप्रतिबिम्ब देख अपना जोड़ा समझ उसमें कूदपड़ा और जब बाहर निकला तो अपने को स्त्री देखा जिसको देखकर सूर्य मोहित हुये और उनका वीर्य स्खलितहो उसके ग्रीवपरपड़ा जिससे सुग्रीव की उत्पत्ति हुई और उसीपर इन्द्र मोहितहुये और उनका वीर्य उसके बालपर पड़ा जिससे बालि उत्पन्न हुये—ब्रह्माने इस पुत्रको किष्किन्धा का राज्यदिया और वहींपर अपने भाई सुग्रीव सहित राज्य करनेलगा—

कुछ दिन उपरान्त बालिने इसकी स्त्रीको छीन इसको निकालदिया (बालि क० दे०) तो यह निज प्राण रक्षाहेतु ऋष्यमूक गिरिपर जा बसे जहांपर श्री हनुमान्‌जी द्वारा रामचन्द्र से मित्रताहुई (राम क० दे०) और रामद्वारा बालि

को वधकिया किष्किधा का राज्य पाया और रावण वध में रामचन्द्र की वानर और ऋक्ष सेना द्वारा सहायता की-

पंचपल्लव ॥

१ बरगद, २ गूलर, ३ पीपर, ४ आम, ५ पाकर-

पंचगव्य ॥

१ गोमूत्र, २ गोमल, ३ गोदधि, ४ गोघृत, ५ गोदुग्ध-और कुशका पानी-

त्रिमधु ॥

१ घी, २ दूध, ३ मधु-

त्रिफला ॥

१ हर्रा, २ बहेरा, ३ अँवरा-

चतुस्सम ॥

कस्तूरी, चन्दन, कुंकुम, और कर्पूर-

सर्वगंध ॥

कर्पूर, चन्दन मृगमद ये सब वस्तु बराबर मिलाने से सर्वगंध बनताहै-

यक्षधूप ॥

कस्तूरी, चन्दन, कंकोल, अगर के मिलाने से यक्षधूप बनता है-

औषध (१०)

कूट, मांस, हल्दी, दारुहल्दी, मुलहठी, शिलाजित, चन्दन, बच, चम्पक, मोथा इन सबको औषध कहते हैं-

अष्टांग अर्घ ॥

जल, दुग्ध, कुश, दही, चावल, तिल इन सबको मिलाकर अर्घ बनता है-

सप्तमृत्तिका ॥

पीलखाना, अस्तबल, राजमार्ग, बाम्बी, संगम, कुंड, गोशाला और चबूतरा-इन सब स्थानों की मिट्टियों को सप्तमृत्तिका कहते हैं-

धान्य ॥

सात धान्य-जौ, गेहूं, धान, तिल, काकुन, सांवां, चेनक-

सत्रह धान्य-जौ, गेहूं, कंगुलिक, तिल, काकुन, कचनार, कोदो, मटर, उरद, मूंग, मसूर, निष्पाद, कालीसरसों, गवेधिका, कुलथी, अरहर, चना-

(४९) मारुत ॥

१ एकज्योति २ द्विज्योति ३ त्रिज्योति ४ ज्योति ५ एकशक्र ६ द्विशक्र ७ त्रिशक्र ८ इन्द्र ९ गतदृश्य १० ततः ११ पतिसक्रन् १२ पर १३ मित १४ सम्मित १५ सुमति १६ ऋतजित १७ सत्यजित १८ सुषेण १९ सेनजित २० अन्तिमित्र २१ अनमित्र २२ पुरुमित्र २३ अपराजित २४ ऋत २५ ऋतवाह २६ धर्त्ता २७ धरुण २८ ध्रुव २९ विधारण ३० देवदेव ३१ ईदृक्ष ३२ अदृक्ष ३३ प्रतिन ३४ असदृक्ष ३५ समर ३६ धाता ३७ दुर्ग ३८ धिति ३९ भीम ४० अभियुक्त ४१ अयात् ४२ सह ४३ द्युति ४४ वपु ४५ अनाप्य ४६ अथवास ४७ काम ४८ जय ४९ विराट (मरुत देव क० दे०.)

व्रतोंकी कथा ॥

संवत्सरव्रत-चैत्रसुदि १ को ब्रह्माकी पूजाकरने से सर्वकामना सिद्ध होजाती है-क्योंकि इसी दिन ब्रह्माने सृष्टि की उत्पत्ति कीहै और इस लिये सब देवताओंने इस व्रतको विधिपूर्वक किया और युधिष्टिर ने इस व्रतको श्रीकृष्ण उपदेश से संसार में प्रचार किया-

आरोग्यपरिवाव्रत-चैत्रसुदी १ को सूर्यकी पूजा करने से आरोग्यता और
सुख प्राप्त होताहै-

विद्याव्रत-चैत्रसुदी १ को इस व्रतको रक्खै और चित्रविचित्र की पूजाकरै तो
विद्यालाभ हो-

तिलकव्रत-चैत्रसुदी १ को व्रत रक्खै और वत्सर की मूर्तिवना पूजन करै तो
भूत प्रेत आदि नाशहों-कथा इसकी इसप्रकारहै कि राजा शत्रुजी
की स्त्री चित्ररेखा जो बड़ी पतिव्रताथी इस व्रतको करके जब अपने
भालपर तिलक करतीथी तो सब भूत प्रेतादि शान्त होजाते थे एक
समय रानी तिलक कियेहुये राजाके निकट बैठीथी उसी समय में
मृत्युआई परन्तु रानीको तिलक युक्त देख लौटगई-इस व्रतको
युधिष्ठिरने श्रीकृष्ण उपदेशसे कियाथा—

रोटकव्रत-श्रावण सुदी १ से ३½ मासतक इस व्रतको रखकर श्रीमहादेव की
पूजाकरै तो सम्पत्ति प्राप्तिहो-कथा इस प्रकारहै कि सोमपुर नगरके
सोम शर्म्मा नामी महादरिद्री ब्राह्मणने सोमेश्वर नाथकी आज्ञानुसार
इस व्रतको किया और धनवान् होगया—

यमद्वितीयाअर्त्थात् भैयादुइज- कार्तिक सुदी २ में स्त्री इस व्रतको रक्खे और यमराज
की पूजाकरै और अपने भाईको बुलाकर यथाशक्ति
सुन्दर २ भोजन वनाकर जिवँवै और भाई यथा
शक्ति वहिनको कुछ देवै तो यश, आयु और सम्पत्ति
प्राप्तहो जैसा कि यमराजकी वहिन यमुना ने किया था
और इन्हीं से इस व्रत की उत्पत्ति हुई-

सौभाग्यसेनव्रत-स्त्री अथवा कन्या इस व्रतको चैत्रसुदी ३ को करै और शिव

पार्वती की पूजाकरै तो सन्तान, देहसुख, सौंदर्य, यश, भूषण, वस्त्र वा धनआदि प्राप्तिहो—

अरुंधतीव्रत—चैत्रसुदी ३ को कोई स्त्री इसव्रतको रक्खे और अरुंधती की पूजा करै तो उसको सुख और सुहागमिले—एक समय एक ब्राह्मणकी कन्याने विधवा होकर इस व्रतको किया—

अक्षय तृतीया—बैशाख सुदी ३ को जो मनुष्य व्रत रखकर नारायण की पूजा करै और जो कुछ दान इस दिनकरै वह अक्षय होताहै—यह तिथि सत्ययुग का आदि दिनहै—महोदय नामी महादरिद्री वणिक इस व्रत को करता और यथा शक्ति दान करता था इस कारण उसका धन बढ़ता जाताथा—

स्वर्ण गौरीव्रत—श्रावण सुदी ३ को इसव्रतको रक्खै और शिव पार्वती का पूजन करै तो कामना पूर्णहो—कथा—सरस्वती नदी के किनारे विमला नगर का राजा चन्द्रप्रभा बड़ाप्रतापी था एक समय अहेर खेलते २ कैलासपर्वत पर गया वहां अप्सरों को इस व्रत में प्रवृत्त देखकर यहव्रत करने का प्रणकरके एकडोरा अपने करमें बाँधलिया यह देख उसकी बड़ीरानी ने उसडोरे को तोड़ किसी सूखे वृक्षपर फेंकदिया वह वृक्ष हरा होगया और उसी डोरे को छोटी रानीने अपने हाथमें बांधलिया इससे वह राजाकी परमप्रियाहुई और बड़ीरानी निकालीगई जब इसने गौरीका ध्यान किया तो फिर राजाको मिली और राजाको इसव्रतके करने से शिवपुरी प्राप्तिहुई—

हरतालिकाव्रत—इस व्रतको भाद्रपदसुदी ३ को करने और शिव पार्वती का पूजन करने से स्त्रीको सुहाग और सायुज्य मुक्ति मिलती

है-कथा-जब पार्वतीजीने शिवपति मिलन हेतु तप करती थीं तो नारदने जा हिमाचलसे कहा कि यह कन्या वासुदेव को दीजिये-यह सुन पार्वतीजी दूसरे वनको चलीगईं और वहां पर भादों सुदी ३ हस्त नक्षत्र सोमवारको इसव्रतको किया तो शिवजीने दर्शनदे उनके साथ विवाह करनेकी प्रतिज्ञा की-

हस्तगौरीव्रत-जब भादोंशुक्ल पक्षमें हस्तके सूर्यहों तो इस व्रतको करै और शिवका पूजन करै तो राज्य सुहाग और मुक्ति प्राप्तहो-कथा- एक समय पार्वतीजी सोतीथीं और स्वप्न में शिवका अर्द्ध स्वरूपदेखा जागने उपरान्त इसका कारण शिवसे पूंछा शिवने उत्तरदिया कि तुमने कोई व्रत आरम्भ करके छोड़दिया है इस कारण ऐसा हुआ अब इसगौरीव्रत को करो तो वाञ्छित फल प्राप्तहो-इसी व्रतको कुन्तीने श्रीकृष्ण उपदेश से अपने पुत्रोंको राज्य प्राप्तहोने अर्थ कियाथा-

कोटेश्वर अर्थात् लक्षेश्वरव्रत- } यह व्रत भादोंशुक्ल ३ को होताहै और देवीकी पूजा की जाती है-इस व्रतको इन्द्राणी ने किया था और पार्वतीके उपदेशसे रम्भाने किया-इस व्रतके करने से दरिद्रतानाशहोती-मित्रों से वियोग नहीं होता, उत्तम पति पुत्र और सुखमिलताहै-

बृहंगगौरीव्रत-कुआर वदी ३ और सुदी ३ को होताहै और देवीकी पूजा की जातीहै-फल इसका आयु, धन और सन्तान है-इस व्रतको कुन्तीने पुत्रहेतु व्यासजी के उपदेश से कियाथा-

सौभाग्य सुन्दरीव्रत-इस व्रतको अगहन और माघ वदी ३ कोरखकर देवी की पूजाकरै तो रोगनाश दुर्भिक्षनाश हो और पुत्र और

पौत्र रूपवान् हों–अगले समयमें इस व्रतको मेघवती नामीस्त्रीने किया जिस्से वह निषादराज गृहमें उत्पन्न होकर महासुन्दरी हुई–

संकष्टचतुर्थीव्रत–यह व्रत श्रावण वदी ४ को होताहै और इसमें गणेशजी की पूजा कीजाती है–इससे कठिन कार्य सहज होताहै और मनुष्य शत्रुसे बचताहै–जब पार्वतीजी को कठिन तप करने पर भी शिवजी न प्राप्तहुये तो उन्होंने इस व्रतकरके शिववर पाया–और इसी व्रतको कृष्णजी के उपदेशसे युधिष्ठिर ने किया जिससे अपना राज्य पाया–

दूर्वागणपतिव्रत–श्रावण वा कार्तिक सुदी ४ को होता है इसमें गणेश की पूजा होतीहै इससे सौभाग्य धन और सन्तान मिलताहै–इन्द्र और कुवेर ने अपनी अपनी स्त्रियों सहित इस व्रतको किया था–

दूर्वागणपतिव्रत इतवारकेदिन– हर महीने में जब इतवार को चतुर्थी शुक्लपक्षमें हो तब इस व्रतको करै और गणेशजी की पूजाकरै तो शोच और घबराहट का नाशहो और धन प्राप्तहो–कथा–एक समय शिवपार्वती पांसा खेलतेथे उसी समय चित्र नेम गणसे पूछा गया कि किसने जीता उसने झूठकहा कि शिवने जीता इसपर पार्वती ने शापदिया जिससे वह मनुष्य योनि में उत्पन्न होकर भासपर्वत पर गया वहांपर अप्सराओं के उपदेशसे इस व्रतको किया और शापसेछुटकारा पाया–

विनायकव्रत–यह व्रत श्रावण, भादों, अगहन और माघसुदी ४ दो पहर के

समय में किया जाताहै और पूजा इसमें गणेशजीकी होती है-
फल इसका कार्य सिद्धहोना और विजय है-श्रीकृष्ण के उपदेश
से इस व्रतको युधिष्ठिरने किया और कौरवों से विजय पाई-

चौथ-यह व्रत भादोंसुदी ४ को होताहै और गणेश की पूजा होतीहै-इसव्रत के फलसे भादोंसुदी ४ के चन्द्रमादेखने का कलंक नाशहोता है-कथा-एक समय ब्रह्माने गणेश की पूजाकी वहांसे लौटते समय चन्द्रलोक में गणेशजी गिरपड़े इसपर चन्द्रमा हँसे तब गणेशजी शापदिया कि तुम को कोई देख न सके उसी समय से चन्द्रमा भागकर कमल में छिपे परन्तु ब्रह्माके उपदेश से जब चन्द्रमा ने इस व्रतको किया तो गणेशजी प्रसन्न हुये और कहा कि अच्छा तुमको शापोद्धार होगया परन्तु जो कोई तुमको भाद्रपदसुदी ४ को देखेगा उसको कलंकलगेगा-इसीकारण श्रीकृष्णको सत्राजित (क० दे०) मणिकी चोरी लगाई तब श्रीकृष्ण ने नारदोपदेश से इस व्रतको किया और कलंक छूटा-

कपर्देश्वरविनायकव्रत- यह व्रतश्रावण सुदी ४ को होताहै और पूजा इसमें गणेश की होती है इस व्रतसे कामना सिद्धहोती है-कथा-एकसमय महादेव पार्वती पांसा खेलते थे और महादेव अपना त्रिशूल डमरू आदि हारगये महादेवने पार्वतीजी से कहा कि हमारा गजचर्म दे देव पार्वतीजी ने क्रोधयुक्त कहा कि अब १२ दिनतक आपसे न बोलेंगी यह सुन महादेव अन्तर्द्धान होगये-इस विरह में पार्वतीजी शिवको ढूँढते ढूँढते एक वनमें पहुँचीं और कुछ स्त्रियों को पूजाकरते देखा उन्हीं से इस कपर्देश्वर व्रतको सुनकर किया और महादेवजी प्राप्तहुये-इसी व्रतको रखकर शिवने विष्णुको और विष्णुने ब्रह्माको

और ब्रह्माने इन्द्रको और इन्द्रने विक्रमादित्य को प्राप्तकिया और इसी व्रतके फलसे विक्रमादित्य अपनी पुरीको आये और उनकी रानीने ऋषियों का दर्शन पाया जिससे रानी का रोगनिवारण हुआ–

करवाचौथ–यह व्रत कार्तिक बदी ४ को होताहै और पूजा इसमें शिवकी होतीहै और इससे सुहाग सन्तान और धन मिलता है–एक समय वेदशर्म्मा ब्राह्मणकी कन्या वीरावती नामीने इस व्रतको रक्खा था परन्तु जब भूखसे अचेत हो गिरपड़ी तो वायुआदि करके उसको सचेत किया और उसके भाई ने छिपकर एक वृक्षपर चढ़कर मशाल दिखाया उसको चन्द्रमा समझ उस कन्याने अर्घ दे दिया– इससे उसका व्रत भंगहुआ और उसका पति मरगया परन्तु इन्द्राणी के उपदेशसे उसने इस व्रतको फिर विधिपूर्वक किया–और उसका पति जी उठा इसी व्रतको द्रुपदीने किया था जिसके प्रभाव से पाण्डवों की जीतहुई–

गौरीचतुर्थी–यह व्रत माघशुक्ल चतुर्थी को होताहै और ब्राह्मण और ब्राह्मणियोंकी पूजाकरके योगिनी और गंधर्वों की पूजाकरै और भाईबन्धुके साथ भोजनकरै तो सुहागवृद्धि होतीहै–

ऋषिपंचमी–यह व्रत भादोंसुदी ५ को होताहै और सप्तऋषियों की पूजा करना चाहिये–इससे सब व्रतोंका फल रूप शोभा पुत्र पौत्र मिलते हैं–सुमित्रनामी ब्राह्मणने अपनी रजस्वला स्त्री को छूलिया था और उसकी स्त्री बरतनोंको उसी समय में छुआ करती थी उस पाप से वह ब्राह्मण बैलहुआ और स्त्री कुतियाहुई परन्तु ऋषियों

के उपदेश से उनके बेटेने इस व्रतको किया जिससे वह दोनों देव लोकको प्राप्तहुये—

नागपञ्चमी—भादों सुदी ५ को होताहै इसमें नागकी पूजा होती इस व्रतको करने से सांपसे काटेहुये को स्वर्ग मिलता है—

उपांगललिताव्रत—यह व्रत कुआर सुदी ५ को होता है इसमें देवीकी पूजा होती है इस व्रतके करने से धन सुहाग मिलता है—कथा इसकी यों है कि दो भाई श्रीपति और गोपति नामी ब्राह्मण जब इनके पिता मरगये तब उनके चचाने सब धन लेलिया और वे दोनों भाई वहांसे निकलगये कहींपर एक ब्राह्मण को पूजन करते देखकर उसी पूजनको किया और बड़े धनवान् हुये छोटे भाईने पूजन को छोड़दिया था इस कारण फिर दरिद्री हुआ और इसी पूजन के करने से फिर धनको प्राप्तहुआ—

ललिताव्रत—भादोंसुदी ६ को होताहै और देवी पूजनहोता है इसके करने से सुख और पुत्र मिलताहै—

कपिलाव्रत—भादोंवदी ६ व्यतीपात अथवा रोहिणी नक्षत्र मंगलवार को यह व्रत होताहै पूजा इसमें सूर्य्यकी होतीहै—इसव्रतके करनेसे ब्रह्महत्या और महापाप नाश होताहै—स्कंदजीने इसव्रतको शिवजीके उपदेश से कियाथा—

स्कंद ६—हरएक षष्ठी मुख्यकर कार्तिक की ६ को यह व्रत होताहै और पूजा इस में कार्त्तिकेय की होतीहै—फल इसका गया हुआ सुख और धन फिर प्राप्त होताहै—

गंगा७—वैशाखसुदी ७ को होताहै और इसमें गंगाजीका पूजन होताहै—इस

व्रतके करनेसे २१ पीढ़ीकी मुक्तिहोती इसदिन गंगाजीका जन्म हुआथा यह व्रत स्त्रियोंका है–

शीतला७–श्रावणसुदी ७ को होताहै और शीतला देवीकी पूजा होतीहै–इस व्रतको करनेसे स्त्री विधवा नहीं होगी और पति वियोग नहीं होताहै– शुभ कारिणीनामी स्त्री ने इसव्रतको कियाथा जिससे उसका पति जिसको सांपने काटाथा जीउठा–

मुक्ताभरण–यह व्रत भादोंसुदी ७ को होताहै और महादेव की पूजा होतीहै– इस व्रतके करने से सन्तान जीताहै–चन्द्रमुखी और भद्रमुखीने इस व्रतको करके सन्तान पाई और देवकी ने इस व्रतको करके श्रीकृष्णपुत्रपाया–

रथसप्तमी–माघसुदी ७ को होताहै और सूर्य्यकी पूजा होतीहै–इस व्रतको करने से राजा चक्रवर्ती होताहै और नीरोग होताहै–यश्ववरमा राजाने इस व्रतको रखकर मांधाता पुत्रपाया जो चक्रवर्ती हुआ–

अचलाव्रत–माघसुदी ७ को होताहै और सूर्य्य की पूजा होतीहै इससे कामना रूप और सुहाग मिलता है सगरराजा की वेश्या इन्दुमती ने इस व्रतको वशिष्ठ की आज्ञासे किया और उसकी कामना पूर्णहुई–

पुत्रसप्तमी–माघसुदी ७ को होताहै और सूर्य्यकी पूजा होतीहै–इससे सुन्दर पुत्र प्राप्तहोताहै–

बुधाष्टमी–माघसुदी ८ दिनबुध को यह व्रत होताहै-पूजा इसमें बुधकी होती है–इससे विपत्ति और पाप नाश होता है–इसी दिन बुधस्त्रीरूप सुद्युम्न पर मोहितहुये और इसी दिन इसव्रत की उत्पत्ति हुई– यमराजकी स्त्री श्यामला की माताने अपने पुत्रों हेतु किसी ब्राह्मण का गेहूं चुराया जिस्से वह नरकगामी हुई परन्तु श्यामलाने अपने

पहिले सातवें जन्मके कियेहुये बुधाष्टमी व्रतके फल देदिया और इस कारण उसकी माताका उद्धारहुआ—

दशमूलाष्टमी—श्रावण शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष की अष्टमी को होताहै और इसमें वासुदेव की पूजा होतीहै—इससे गयाहुआ राज्य फिर मिलताहै कुन्तीने इस व्रतको श्रीकृष्ण उपदेशसे किया जिससे पाण्डवों को राज्य फिर मिला—

जन्मअष्टमी—भादोंवदी ८ अर्द्धरात्रि में होताहै इसमें वासुदेव की पूजा होती है—वसुदेव और देवकीने इस व्रतको किया जिससे श्रीकृष्णजी कंसको मार देवकी के गृहआये—और इसी तिथिमें श्रीकृष्णजी का जन्मभी हुआथा—

ज्येष्ठाव्रत—भादोंसुदी ८ ज्येष्ठा नक्षत्र में यह व्रत होताहै इसमें लक्ष्मीकी पूजा होतीहै इस व्रतके रखने से स्त्रीको सन्तान मिलता है—

दूर्वाअष्टमी—भादोंसुदी ८ को यह व्रत होताहै और शंभुकी पूजा होतीहै इस से सातपीढ़ी तक दूबकी भांति सन्तान की वृद्धि होतीहै—

महालक्ष्मीव्रत—भादोंसुदी ८ से लेकर १६दिनतक यह व्रत होताहै और लक्ष्मी का पूजन होताहै और इसके करने से आयु, धन, सन्तान और मोक्ष मिलताहै—उत्पत्ति इसकी इसप्रकार है—जब कोलासुर राक्षस ने बहुतसी राजकन्याओंको पकड़ बन्दिमें डालरक्खा तो देवताओं ने महालक्ष्मीको भेजा और लक्ष्मी ने उस राक्षस को वध कन्याओं को छुड़ाया और उन कन्याओंने इस व्रतको किया और इसीव्रत को पहिले पहिल कुण्डिनपुर के मङ्गल नामी राजाने किया—

रामनौमी—चैत्रसुदी ९ को होता है रामचन्द्र का पूजन होताहै इससे सब व्रत

सफल होतेहैं और मुक्ति मिलतीहै–इसी तिथिको रामजन्म हुआथा–

देवीपूजाव्रत–कारसुदी ९ को होताहै पूजा इसमें देवीकी होतीहै–इससे सर्व पाप नाश होताहै और सब प्रकार का फल मिलताहै–

आशादशमीव्रत प्रत्येक मासकी सुदी १० को कियाजाता है और दिक्पालों की पूजा इसमें होती है इससे विदेशीपति से मिलन आदि सब मनोरथ पूरे होते हैं इस व्रतको स्त्री करती हैं–

दशहरा–ज्येष्ठसुदी १० को होताहै और गंगाजीका व्रतहै इससे दशपाप नष्ट होतेहैं–इसी तिथिको हस्तनक्षत्र में श्रीगंगाजीका जन्म हुआहै–

दशअवतारव्रत–भादोंसुदी १० को विष्णुके मुख्य दश अवतारों की पूजा होती है इससे मुक्तिहोतीहै–इसव्रतको स्त्री और पुरुष दोनों करतेहैं॥

विजयदशमी–यह व्रत कारसुदी १० तारा उदय के समय होताहै–पूजा इसमें अजयादेवी की होतीहै इससे लड़ाई में विजय होतीहै और धन लाभ होताहै–इस तिथिको प्रस्थान करना उचित है–

एकादशी–प्रत्येक मास की एकादशी को होताहै यह व्रत नारायण काहै इस से मुक्ति मिलती है–कथा–जब सब देवता मुर राक्षस से हारगये–तो विष्णुने उससे युद्धकिया परन्तु हारगये और एक गुफामें जा छिपकर सोगये मुर वहांभी पहुंचा उस समय विष्णुके अंगसे एक माया एकादशी नामी उत्पन्न होकर राक्षस को मारा–

एकादशियों के नाम नीचे लिखेहैं॥

नाम महीना	कृष्णपक्षकी एकादशी	शुक्लपक्षकी एकादशी–
चैत्र	पापमोचनी	कामदा
बैशाख	बरुथिनी	मोहनी

नाम महीना	कृष्णपक्षकी एकादशी	शुक्लपक्षकी एकादशी-
ज्येष्ठ	अपरा	निर्जला
आषाढ़	योगिनी	विष्णुशयनी
श्रावण	कामदा	पुत्रदा
भाद्रपद	जया	पद्मा
क्वार	इन्दिरा	पापांकुशा
कार्तिक	रंभा	प्रबोधिनी
अगहन	उत्तमा	मोक्षदा
पौष	सफला	पुत्रदा
माघ	षट्तिला	जया
फाल्गुन	विजया	आमलकी
मलमास		पुरुषोत्तमी-

गोपद्मव्रत-आषाढ़ सुदी ११ को होताहै-भगवान् का व्रतहै इसके करने से मनुष्य यमराज के दंडसे बचता है-

भीष्मपंचकव्रत-कार्तिक सुदी ११ से पांच दिनतक यह व्रत होताहै और भगवान् का व्रतहै इससे महापाप नाश होताहै-

श्रवणद्वादशीव्रत- भाद्रपद सुदी १२ को जब श्रवण नक्षत्रहो जिसको विष्णु शृंखल योगभी कहते हैं तब यह व्रत होता है वामनजीकी पूजा होती है इससे पाप नाश होताहै और मुक्ति प्राप्ति होतीहै-जो उसी तिथिको बुधवार भी हो तो महाद्वादशीव्रत कहलाता है-मरुदेश में एक समय सब मनुष्य अपने कर्मानुसार प्रेत होकर दुःख भोगरहेथे और उसीमें एक मनुष्य जिसने इस व्रतको कियाथा परन्तु उसी दिन दान की हुई वस्तुको ब्राह्मणको न देकर अपने

घर ले आयाथा इसी से वहभी उन प्रेतोंका राजा होकर रहता था-दैवसंयोग से एक वणिक् उस देश में आपड़ा उसने उसी प्रेतराज से सुनकर इस व्रतको किया और उन प्रेतों से उनका गोत्र पूछकर उनकी श्राद्ध गयाजी में किया इससे वे लोगभी मुक्तहुये और आप उसी व्रतके प्रभावसे देवलोक को गया-

वामनजयंतीद्वादशी-वामन भगवान् की पूजा होतीहै यह व्रत भादोंसुदी१२ को होताहै-इससे विष्णुलोक और राज्य मिलताहै-

स्वरूपाद्वादशी-पौषवदी १२ को होताहै और विष्णुका व्रतहै-इससे स्वरूप, सन्तान मिलता और पाप नाश होताहै-यह व्रत गुजरात में होताहै इसी व्रत के प्रभाव से रुक्मिणीने रूप पाया था और व्रतके थोड़ेभागसे सत्यभामाको (जो कुरूपा थी) रूप मिला-

विजयापार्वतीव्रत-आषाढ़ सुदी १३ को होताहै और पार्वतीका व्रतहै इससे सोहाग मिलताहै कुण्डिनपुरका वामन नामी ब्राह्मण सांप के काटने से मरगया तो उसकी स्त्रीके रुदन को देख पार्वतीजी ने उसके पति को जिलादिया और उनके उपदेश से उस स्त्रीने इस व्रतको किया-

गोत्रिरात्रव्रत-भादोंसुदी १३ को होताहै और देवीका व्रतहै इससे आयु,धन, सन्तान मिलता है-

अशोकत्रिरात्रव्रत- भादोंसुदी १३ को यह शिवका व्रत होताहै इससे कामना पूर्ण होतीहै-जब रावण जानकीजी को हरलेगया तब इस व्रतको जानकीजीने किया जिससे हनुमान्जी मिले और इसी व्रतको जानकीजीने लौटकर अयोध्या में विधिपूर्वक किया-

शनिप्रदोष-कार्तिक आदि महीनों में जब १३ को शनिवारहो तब यह व्रत होता है शिवका व्रत है इसव्रत से पापनाश, धन और सन्तान होतीहै और रिपु पराजय होताहै-प्रहस्त के उपदेश से इन्द्रने इस व्रतको कर वृत्रासुर को परास्त किया-

अनङ्ग १३-अगहन सुदी १३ को यह व्रत अनङ्गदेव का होताहै इससे राज, सुहाग और सुन्दरता मिलतीहै-

नृसिंह १४-वैशाखसुदी १४ को यह व्रत होताहै पूजा इसमें नृसिंह भगवान् की होतीहै इससे पापनाशहोता और नरकसे बचताहै-वैशाखसुदी १४ दिन सोमवार स्वातीनक्षत्र में नृसिंहजी का जन्म हुआ-प्रह्लाद पूर्व जन्म में किसी ब्राह्मण के पुत्रथे और किसी वेश्या के साथ रहते थे परन्तु इसी व्रतके दिन दोनों में झगड़ाहुआ और प्रह्लाद उसी कारण भूखे रहे और उसी वेश्याके स्मरण में जागरण भी किया-इस कारण नारायण के भक्तहुये और उस वेश्याने भी इसव्रतको किया जिससे उसको भी मुक्ति मिली-

अनन्त१४-यह व्रत भाद्रपद सुदी १४ को होताहै और अनन्तभगवान् का व्रत है-इससे सन्तान सिद्ध और पाप नाश होताहै-कथा-कौंडिन्यमुनि ने शीलासे विवाहकिया परन्तु उनके पास धन न था परन्तु उस स्त्री ने इस व्रतको किया जिससे धन प्राप्त हुआ-किन्तु मुनिने धनमदसे अनन्त के डोरेको तोरडाला जिससे फिर दरिद्री होगये परन्तु तपकरके अनन्तजी दर्शनकिया तत्पश्चात् इस व्रतके करने से फिर धनवान् हुये और वैकुण्ठ को गये-इसी व्रतको कृष्ण उपदेश से युधिष्ठिरने किया-

कदलीव्रत-भाद्रपदबदी १४ को रम्भा अर्थात् केलाकी पूजाकरने से कामना

पूर्ण होतीहै-यह व्रत पहिले देवलोक में हुआ-फिर रुक्मिणीने इसी व्रतको श्रीकृष्ण उपदेश से किया और उसका फल रुक्मिणी ने द्रौपदीको दिया जिससे द्रौपदीका चीर जब दुश्शासन खींचता था बढ़तागया-

नरक१४-कार्तिकवदी १४ को पितरोंका व्रत है इससे मनुष्य नरकगामी नहीं होता-तर्पण करके यमराज का ध्यान करना चाहिये-

वैकुण्ठ१४-कार्तिकसुदी १४ को विश्वेश्वरनाथ की पूजाकरें तो इसव्रत के प्रभाव से मुक्ति प्राप्त होतीहै-

शिवरात्रिव्रत-माघवदी १४ को यह व्रत होताहै और शिवका व्रतहै इससे भुक्ति, मुक्ति मिलती है-यह तिथि शिवलिंगोत्पत्ति का है-
कथा-इसीदिन एक वधिकने एक मृगा और उसकी तीन स्त्रियों को मारने की आशा से शिवस्थान में जागरण किया जिससे वह स्वर्गको प्राप्तहुआ और मृगा अपनी सत्यप्रतिज्ञा के कारण अपनी स्त्रियों सहित ताराहोकर रहनेलगा और उन तारोंको मृगशिर कहते हैं-

वटसावित्रीव्रत-ज्येष्ठसुदी १५ को यह सावित्रीका व्रत होताहै इससे सुहाग, सौभाग्य और ब्रह्मलोक मिलताहै-अश्वपति राजाने अपनी स्त्री सहित इस व्रतको किया जिससे उनको सावित्री नामी कन्या मिली जिसका विवाह सत्यवान् राजाके साथ हुआ-जब सत्यवान् मरगया तो वह यमराज की कृपासे जी उठा तत्पश्चात् सावित्रीने इस व्रतको किया-

गोपद्मव्रत-आषाढ़ की पूर्णमासी को यह व्रत भगवान् का होताहै इससे मनोरथ और वैकुण्ठ प्राप्त होताहै एक समय इन्द्रसभामें नाचहोरहाथा तबले

का चमड़ा फटगया तो यमने कहा कि यह तबला सुभद्रा के चमड़े से मढ़ाजावे क्योंकि उसने गोपद्मव्रत नहींकिया परन्तु यमदूत के आनेके पहिलेही सुभद्राने इस व्रतको करडाला इससे यमके दूत लौटगये–सूतजी के उपदेश से ऋषियोंने भी इस व्रतको किया–

कोकिलाव्रत–यह व्रत आषाढ़ की पूर्णिमा और अधिक आषाढ़ में होताहै कोकिलाकी पूजा होतीहै इस व्रतके करने से सुहाग, मधुरवचन, मनोरथ आयुर्बल, यश, सन्तान और सुन्दर रूप मिलताहै–वशिष्ठ की आज्ञासे श्रुतिकीर्ति (शत्रुघ्न की स्त्री) ने इस व्रतको किया–उत्पत्ति इस व्रतकी इस प्रकार है कि जब सतीजी ने दक्षकी यज्ञमें भस्म होकर यज्ञमें विघ्नकिया तो शिवजी के शापसे कोकिला पक्षी होकर नन्दनवनमें रहीं–

रक्षाबंधन अर्थात् सलौनो– श्रावण की पूर्णिमा को देव, ऋषि और पितरों को तर्पण करने से सर्वरोग नाशहोताहै–एक समय देवता और राक्षसों में १२ वर्ष पर्यंत युद्धरहा जब यह तिथि आई तो इन्द्राणीने इन्द्रके हाथमें रक्षा बांधकर कहा कि इस रक्षाके प्रभाव से तुम्हारी विजय होगी और ऐसाही हुआ–तभी से रक्षाबंधन होनेलगा और दीवारपर गोमलका चिह्न उस तिथिको करनेलगे–

उमामहेश्वरव्रत–भाद्रपद की पूर्णमासीको होताहै इसमें शिव पार्वतीका पूजन होताहै और इससे सर्वकामना पूर्णहोती है–एक समय दुर्वासाने इसी व्रतको किया और पूजन की माला विष्णु को दिया उस माला को विष्णुजीने गरुड़ के कंधेपर रखदिया इस कारण दुर्वासा के शापसे लक्ष्मीजी क्षीरसागर में गिर

पड़ीं और गरुड़ मरगये—परन्तु विष्णुजीने इसव्रत को गौतम ऋषिकी आज्ञासे किया तो लक्ष्मी और गरुड़ मिले—इसीव्रत के करने से ब्रह्माको सरस्वती और इन्द्रको स्वर्ग मिला—

कोनागरव्रत—कारकी पूर्णमासी को इन्द्रका व्रत होताहै इसके करने से धन प्राप्त होताहै इसमें जागरण करना चाहिये—

गौरीतपोव्रत—अगहन वदी १५ को यह गौरीका व्रत होताहै इससे सन्तान होतीहै इन्द्रने यह व्रत इन्द्राणी को वतलायाथा—

अर्द्धोदयव्रत—माघवदी १५ व्यतीपात वा श्रवण नक्षत्र में यह व्रत होताहै इसमें त्रिदेव का पूजन होताहै इससे सहस्र सूर्यग्रहण के स्नानका फल मिलता और कामना पूर्णहोतीहै—इसव्रतको सत्ययुगमें वशिष्ठजी; त्रेतामें रघु और द्वापरमें युधिष्ठिर और कलियुगमें पूर्णोदरनेकिया—

सोमवती अमावस—सोमवार की अमावास्या को पीपलवृक्ष के नीचे भगवान् की पूजा होतीहै इससे सौ सूर्य्यग्रहण के स्नान का फल मिलता है—कथा—कांचीपुर में देवस्वामी नामी ब्राह्मणके ७ पुत्र और १ कन्याथी एकदिन उसीपुरीमें एक भिखारी आया और उसने उस कन्या की माता से कहा कि इसका पति विवाह समय मरजायगा कदाचित् सिंहलद्वीप की सोमाधोबिन अपने व्रतका फलदेवे तो इसका पति जीवेगा—उस ब्राह्मण का छोटा लड़का सिंहलद्वीप को गया और उस धोबिन को लिवालाया और उसने अपने व्रतका फलदेदिया जिससे उस कन्याका मराहुआ पति जीउठा तभीसे इस व्रतका नाम सोमवती हुआ—कदाचित् तभीसे विवाह में धोबिन बुलाई जाती है—इसी व्रतको युधिष्ठिर ने भीष्म के उपदेश से किया—

स्वास्तिकव्रत-आषाढ़ से कारतक यह व्रत होताहै और विष्णुका व्रतहै इससे रिपुनाश होताहै यह व्रत करनाटक देशमें होताहै-

वरलक्ष्मीव्रत-श्रावण के अन्त में शुक्रवार को यह व्रत लक्ष्मीका होताहै इससे धन मिलताहै एक समय महादेव पार्वती पांसा खेलतेथे महादेव जी जीते परन्तु इस समय विवाद हुआ और चित्रनियम से पूछा गया कि किसने जीता उसने कहा कि महादेव जीते इससे पार्वतीके शापसे उसको कुष्ठरोग होगया परन्तु अप्सरा के उपदेश से उसने इस व्रतको किया और कुष्ठरोग जातारहा-इसी व्रतको नन्देश्वरने भी हेतु किया तभीसे यहव्रत इसलोक में होनेलगा-

दानफलव्रत-क्वारके अन्त रविवार से माघसुदी ७ तक यह व्रत होताहै-सूर्य्य की पूजा होतीहै इससे सर्वदानका फल होताहै-पद्मावती और दमयन्ती रानियोंने देवतों की स्त्रियोंके उपदेश से इसव्रतको किया था जिससे उनके बिछुड़े हुये पतिमिले-

धारणपारणव्रत-चतुर्मास वर्षामें यहव्रत लक्ष्मीनारायण का होताहै इससे भाई बन्दों के मारडालने का पाप नाश होताहै-इसव्रत को सुग्रीवने किया क्योंकि उन्होंने अपने भाई बालिको मरवाया था और नारदने इसव्रत को इन्द्रजीत होनेके हेतु कियाथा और श्रीकृष्ण उपदेश से युधिष्ठिरने इसीव्रत को किया-

मासउपवास-क्वारसुदी ११ से मासके अन्ततक होताहै इससे सब तीर्थों और यज्ञोंका फल और विष्णुलोक मिलताहै-

मलमासव्रत-अधिक मासमें यह व्रत होताहै यह व्रत सूर्य्य काहै इससे पाप नाश होताहै और सुख मिलताहै-नहुष राजाने सांप तनमें (न-

हुपकी कथा देखो) इस व्रतको किया जिससे वह शापसे मुक्तहुये–

मलमासव्रतान्तर–अधिकमासमें यह व्रत गोविन्द लक्ष्मीनारायण का होताहै इससे भुक्ति मुक्ति दरिद्रनाश, पुत्र शोक नाश और विधवापन नाश होताहै–

इतवारव्रत–सब महीने के रविवार को यह सूर्यका व्रत होता है–इससे रोगनाश, भक्ति और मुक्तिहोतीहै यहव्रत वशिष्ठजीने मांधाताको बतलायाथा–

आशादित्यव्रत–यह व्रत कारसे सालभरतक कियाजाता है यह सूर्य्यका व्रत है इससे कुष्ठरोग नाशहोता है–साम्बने इस व्रतको किया क्योंकि उन्होंने दुर्वासाका निरादर कियाथा और इसी पाप से कोढ़ी होगये थे–

सोमवारव्रत–हर महीने के सोमवार को यह शिवकाव्रत होता है इससे मोक्ष सन्तति, सन्तान और सौभाग्य आदि मिलते हैं नन्दिकेश्वरने इस व्रतको नारद से कहाथा–

मंगलवारव्रत–हर महीने के मंगलको यह मंगल देवताका व्रत होता है— इससे सुख सोहाग मिलता और रोगनाश और भूतादि भय नाश, होता है–एक ब्राह्मणी का पति मरगया था परन्तु उसने मंगल के उपदेश से इस व्रतको किया जिससे उसका पति जी उठा—

संक्रान्तिव्रत–सब संक्रान्तोंको यह सूर्य्यका व्रत होताहै इससे सब कामना पूर्ण होतीहैं–मेषकी संक्रान्तिसे क्रमपूर्वक सब संक्रान्तिव्रतोंके नाम नीचे लिखेजाते हैं–धान्य, लवण, भोग, रूप, तेज, सौभाग्य, ताम्बूल, मनोरथ, विशोक, आयु, धन आदि–

उत्तरायण की संक्रान्ति में घृत स्नान व्रत होताहै ॥

कौशल्या ॥

पिता–राजा कोशल– पति–राजादशरथ– पुत्र–रामचन्द्र–

जब रावणने सुना कि मेरा वध कौशल्या के पुत्रसे होगा उसने कौशल्या को बालकपन में मंजूषा में बन्दकरके राघव मछली के सिपुर्दकिया ब्रह्मा रावण का रूपधर राघव से मञ्जूषा मांगलाये और जंगलमें फेंकदिया उसको सुमंत (राजा दशरथ के मंत्री) ने पाया और कोशलराजा को पहुंचाया–कोशलराजाने उसका विवाह दशरथ के साथकिया—

शुकदेवजी ॥

दादा–पराशर– पिता–व्यासजी– माता–घृताची अप्सरा–

जन्मकथा–एक समय महादेवजी पार्वतीजी को अमर करने हेतु बीजमंत्र सुनाने लगे तो वहांसे सब जीवजन्तु को भगादिया परन्तु एकसुयेका अण्डा जो नहीं भाग सक्ताथा किसी वृक्षके खोखले में पड़ारहा जब मंत्र सुनाते २ बारहवर्ष व्यतीत होगये तब पार्वतीजी सोगईं और वह सुवे का बच्चा हुंकार भरतागया–जब बीजमंत्र पूर्णहुआ–महादेवने पार्वती जी से कुछ प्रश्न बीजमंत्रमें किया जब वह न बतलासकीं तो समझ लिया कि यह सोगई थीं और कोई दूसराही हुंकार भरता था क्रोधयुक्त त्रिशूलको उठाया वह सुआ भागता २ व्यासजीकी स्त्रीके गर्भ में घुसगया जब महादेव उस स्त्रीको मारनेपर उतारूहुये परन्तु व्यास जी की प्रार्थनासे नहीं मारा वह पुत्र होकर शुकाचार्य के नामसे प्रसिद्धहुये सात वर्षकी अवस्था में दिगम्बर वेषमें वनको चलेगये फिर लौट कर व्यासजी से श्रीमद्भागवत पढ़ा और वही भागवत

राजापरीक्षित को सुनाकर उनको मुक्तकिया—कहीं २ ऐसा लिखाहै कि व्यासजी घृताची अप्सरापर मोहितहुये वह इनके निकट शुकी रूपधारण करके आई उस समय व्यासजी अरणी की लकड़ी अग्नि बनानेहेतु घिस रहेथे उसी अरणीमें उनका काम खसितहुआ और उससे व्यास के आकार पुत्र निकला—क्योंकि व्यासजी का काम उस शुकीको देखकर खसित हुआथा इस कारण पुत्रका नाम शुकाचार्य रक्खागया—

स्त्री—पीवरी (पितरों की कन्या) यह विवाह राजाजनक के समझाने से किया नहीं विरक्त होतेथे—

पुत्र—कृष्ण, गौर, प्रभाभूरि और देवश्रुत थे—

कन्या—कीर्ति जिसका विवाह विभ्राजराजाके पुत्र अणुहके साथ हुआ जिनके पुत्र ब्रह्मदत्त हुये और नारदसे ज्ञानपाकर अपने पुत्रको राज्यदे बदरिकाश्रमको चलेगये—

तदनन्तर शुकदेवजी कैलास पर्वतपर चलेगये और वहां तपोबल से आकाश को चलेगये परन्तु व्यासजी के रुदन करनेपर उनकी छाया व्यासजी के पासरहगई—

वंशावली—व्यासजी की कथा में देखो—

लक्ष्मी ॥

नाम—रमा, इन्दिरा, हरिप्रिय, पद्मा, कमला, जलधिजा, चंचला, लोकमाता—

पिता—भृगु— माता—ख्याति—

परन्तु इनकी उत्पत्ति समुद्र से हुई—एक समय दुर्वासा ऋषि (महादेवके अंश हैं) चलेजातेथे एक अप्सरा से भेंटहुई उस अप्सराने एक माला ऋषिको दिया

उसी मालाको ऋषिने ऐरावत के मस्तकपर रखदिया वहमाला ऐरावत से भूमि पर गिरपड़ा ऋषिने समझा कि इन्द्रने निरादर से मालेको फेंकदिया और इन्द्र को शापदिया कि तुम्हारे राज्यका नाशहोजाय—इस कारण देवताओं की हानि और राक्षसों की वृद्धिहोनेलगी—देवताओंने भगवान् की आज्ञानुसार मन्दराचल की मथानी और वासुकि नागकी रस्सीबना समुद्रको मथा उसमेंसे १४ रत्न पैदा हुये जिसमें अमृत भी था जिसके पीने से देवता अमर हुये और राक्षसों को परास्त किया—

रत्नोंकेनाम—लक्ष्मी, मणि, रम्भा, वारुणी, अमृत, शंख, ऐरावत, कल्पवृक्ष, चन्द्रमा, कामधेनु, धनुष, धन्वन्तरि, विष, वाजि—

अवतार—जानकी, रुक्मिणी, पद्मा आदि— वाहन—कमल—

बलरामजी ॥

नाम—हलधर, रेवतीरमण—

माता—रोहिणी—पिता—वसुदेव—भाई—कृष्णजी—स्त्री—रेवती (राजारेवतकी कन्या यह कन्या सत्ययुग की थी और २१ हाथ लम्बी थी—बलराम-जीने उसको दबाकर छोटी करदी) पुत्र—ताम्रकेतु, दत्तवान्, बलरामजी लक्ष्मणजी अथवा शेषजी के अवतार हैं—यह देवकी के सातवें गर्भ में थे परन्तु मायाने इनको निकाल कर रोहिणी के गर्भमें कर दियाथा जिससे कंससे बचे—

अस्त्र—हल और मूसल—

बलरामजी ने कंसके पठाये हुये राक्षस धेनुक नामीको मारा—एक समय मदिरा पानकर मत्तहुये और स्नान करनेहेतु यमुनाजी को बुलाया जब नहीं आईं तो हलमूसल से खींचलिया तबसे यमुना उसस्थान पर टेढीहोगई—श्रीकृष्णकी आज्ञानुसार कुछ दिन गोकुल में रहे—पश्चात् कुछदिन जनक राजाके यहांरहे

जब सबयदुवंशियों की नाश होगई तो बलरामजी और श्रीकृष्णजी एक नदी के किनारे पर जाबैठे जहांपर बलरामजी के मुखसे एक सर्प प्रकट हुआ और उनका देहान्त हुआ—

नन्दजी ॥

दूसरानाम—महर—स्त्री—यशोदा वा यशोमति वा महरि, जाति—ग्वाल—वा· सस्थान—प्रथम गोकुल पश्चात् वृन्दावन—

इन्हों ने पूर्व जन्म में बड़ी तपस्या किया और वरमांगा था कि श्रीभगवान् जी के बाल चरित्र को देखैं—इसी कारण श्रीकृष्णने अपनी बाल्यावस्था इन्हींके यहां व्यतीतकी परन्तु यह वृत्तान्त न जानते थे कि ये वसुदेव देवकी के पुत्र हैं क्योंकि जिससमय मायादेवीने नन्दके यहां जन्म लिया उसी समय श्रीकृष्ण जन्म वसुदेव के यहां हुआ और कंसके भयसे नन्दके यहां पहुंचादिया और मायादेवी को लाकर कंसको दिखादिया ज्योंही कंसने चाहा कि मायाको पटकैं उसके हाथसे छूट आकाश को उड़गई और श्रीकृष्ण के जन्म का सूचक हुई वही देवी विंध्याचल की देवी कहलाती हैं—

गौतम ऋषि ॥

पुत्र—शतानन्द जो राजा जनक के पुरोहित थे—

स्त्री—अहल्या जो ब्रह्माकी पुत्रीहैं—एक समय इन्द्रने छलकर इनसे भोगकिया—गौतमजी ने शापदिया जिस्से इन्द्रके सहस्र भग होगये और अहल्या शिलाहोगई—बृहस्पति की कृपासे इन्द्रके सहस्र भग नेत्र होगये और अहल्या रामचन्द्रके चरण स्पर्श होनेसे फिर स्त्री रूप होगई—

एक समय अनावृष्टि हुई गौतमजी ने वरुणजी की तपस्या करके जल प्राप्त किया और उस जलको एक कुण्ड में रखदिया और उस कुण्डका नाम गौतम

कुंएड हुआ और उसी जलके आश्रय से बहुत मुनि वहां आकर ठहरे एक समय अहल्या किसी मुनिपत्नी पर जललेने के कारण क्रोध किया–तव दूसरे मुनियोंने गणेशजी से प्रार्थना किया गणेशजी एक वृद्धा गायका रूप धारण कर खेत चरने लगे गौतमजीने हांका वह गिरकर मरगई इस हत्यासे मुनि वहां से निकाल दियेगये कुछदिन उपरान्त शुद्धहोकर गौतमजी ने शिवका तप किया जिससे गौतमी गंगा उत्पन्न हुई और वहींपर त्र्यम्बक नाम लिङ्ग शिवका स्थापित हुआ–गौतमके शापसे दण्डकवन मरुभूमि होगया और तभी उसका नाम जनस्थान होगया दूसरी कथा यों है कि राजा दण्डने अपने गुरु भृगुकी कन्यासे भोग किया भृगुके शाप से वह देश मरुस्थल होकर जनस्थान प्रसिद्ध हुआ–

विश्वामित्र ॥

दूसरेनाम–कौशिक, गाधिसुवन–

पिता–गाधिराजा (जह्नुके वंशमें) **स्त्री**–सुचक्षुमती–

पुत्र–सौथे उनमें ५० के नाम मधुच्छन्दा थे और ग्रहपति (शिवका अवतार) और गालव्य–

भांजा–शुनःशेफ (अजीगर्तका पुत्र) जिसको अपना वेटा मानकर देवरात नामरक्खा और अपने पहिले पचास पुत्रोंसे कहा कि इसको अपना बड़ाभाई मानो परन्तु उन्होंने नहीं अंगीकार किया और शापित होकर म्लेच्छहुये–और दूसरे ५० पुत्रोंने अंगीकार कर लिया जिससे उनकी सन्तान वढ़ी और कौशिकगोत्री कहलाये जब विश्वामित्र वनको तप करने चलेगये तो उनकी स्त्री अपने पुत्रका गला बांधकर वेचने गई परन्तु सत्यव्रत राजाने उसको छुड़ालिया और उसका नाम गालव्य रक्खा जिससे गालव्य गोत्रचला सात पुत्र और थे जो पहिले

जन्ममें भरद्वाजके पुत्र थे फिर विश्वामित्र के यहां जन्मलिये इसजन्म में इन्होंने अपने गुरुकी गायको मारडाला जिस कारण व्याधके यहाँ जन्मलिया और उनके नाम यह थे—नरवीर, निवृत्ति, शान्ति, निर्भीति, क्रतु, शशि, मातृवर्ती फिर कालिंजर में हरिण होकर जन्मलिया जिनके नाम नित्य, त्रसित, उन्मुख, बधिर, भद्र नेत्र और नादप्रिय थे— इस जन्ममें तप किया तो चक्रवाकहुये और फिर मरे तो हंसहोकर मानसरोवर में रहने लगे—फिर जन्मे तो राजाहुये—

जब विश्वामित्र वनमें तप करते थे और यज्ञकरते थे तो सुबाहु आदि राक्षस के कारण यज्ञनहीं करने पातेथे जब रामचन्द्र और लक्ष्मण को राजा दशरथसे मांग ले गये तो यज्ञ पूर्णहुई और राक्षस मारेगये इन्हीं के साथ रामचन्द्रजी जनकपुरमें धनुषयज्ञ देखने गये और धनुषको तोड़ सीताजी को वरी—

ताड़का ॥

पिता—सुकेतु—पुत्र—सुबाहु और मारीच—

यह राक्षसी थी और विश्वामित्र की तपस्या और यज्ञमें विघ्नडालती थी इस कारण रामने इसको वधकिया और उसका पुत्र सुबाहुभी मारागया केवल मारीच बच गयाथा जिसको रावणने मृगाबनाकर राम को भुलाया और जानकीजी को हर ले गया—

शबरी अर्थात् सेवरी ॥

एक जंगली स्त्री परमभक्त थी जब इसके गुरु परम धामको जानेलगे तो इसने भी साथजाने को कहा परन्तु गुरूने कहा कि तू अभी मतआ तुझको रामचन्द्र का दर्शन होगा तबसे वह प्रेमपूर्वक प्रतिदिन एक दोना फल रखकर

आशा देखाकरे और रात्रिमें वहीफल खाकर सोरहे इसप्रकार दशसहस्र वर्षके उपरान्त दर्शन पाकर वह परमधाम कोगई–

ध्रुव ॥

दादा–स्वायम्भुवमनु–पिता–उत्तानपाद–माता–सुनीति–
सौतेलीमाता–सुरुचि–स्त्री–इला–पुत्र–उत्कल (इलासे) और वत्सर
(दूसरीस्त्रीसे)–

एक समय उत्तानपाद राजा अपनी छोटी रानीके पास बैठेथे और ध्रुवको गोदमें बैठालिया रानीने ध्रुवको गोदसे निरादर पूर्वक उठादिया–ध्रुव ग्लानि युक्त अपनी माताके पासगये और माताको सब वृत्तान्त सुनाकर वनको चले गये और नारदमुनि को अपना गुरु बनाया और मथुराजीमें यमुना तटपर ऐसा तप किया कि वायु चलना बन्दहोगया नारायणने दर्शन दिया उनकी आज्ञानुसार घर जाकर ३६ सहस्रवर्ष पर्य्यंत राज्यकिया और सब भाई इनकी सेवा में रहे इन्होंने अपने सौतेले भाई उत्तम को अपना मंत्री बनाया–एक समय उत्तम कुबेरके विहारथल में अहेर खेलने गये वहां पर एक यक्षने उत्तम को मारडाला इस कारण ध्रुवने कुबेर से युद्ध किया पश्चात् मेलहोगया–कुछ दिन उपरान्त उत्कल को राज्यदे बदरिकाश्रम को गये और माता सहित स्वर्गलोक को सिधारे–

हिरण्यकशिपु ॥

भाई–कनककशिपु–पिता–कश्यप–माता–दिति–स्त्री–कयाधू–पुत्र–
प्रह्लाद, संह्लाद, आह्लाद–कन्या–सिंहिका–बहिन–होली, पूर्वजन्म–जय(हरिका द्वारपाल) दूसराजन्म–रावण–पौत्र–पंचजन (संह्लादसे) महिषासुर और वाष्कल (आह्लाद से)–

हिरण्यकशिपु की स्त्री जब गर्भवती हुई तो नारदमुनि ने उसको ज्ञान सिखाया जिससे बड़े ज्ञानीपुत्र प्रह्लाद उत्पन्नहुये प्रह्लाद भक्तथे और उनका पिता दैत्यथा इस कारण उसने प्रह्लाद को अग्नि में डाला और पर्वतसे गिराया परन्तु प्रह्लाद सबसे बचेरहे अन्तमें जब खड्ग लेकर मारने चला तो नारायणने नृसिंह अवतार धारण करके हिरण्यकशिपुको मारा और राज्य प्रह्लादकोदिया-

बलिराजा ॥

परदादा-हिरण्यकशिपु-दादा-प्रह्लाद-पिता-विरोचन (वैलोचन), गुरु-शुक्राचार्य-पुत्र-बाणासुर आदि एकसौ, वाहन-प्रभासनामी विमान जिसको मयदानव ने बनाया था-.

जब समुद्र मथा गया, और उसमेंसे १४ रत्न निकले तो अमृतके हेतुबलि और देवताओं से बड़ायुद्ध हुआ और बलि हारगये तो शुक्राचार्य ने यज्ञ कराकर एक शंख और एक रथ दिया उस शंखका शब्द सुनकर देवता और इन्द्र सब जन्तुओं का रुप धर कर भागगये और बलिने तीनोंलोक जीतलिया तबदेवताओं की माता अदिति ने नारायण का व्रतकिया जिससे अदिति के गर्भसे वामनजी उत्पन्नहुये. और राजाबलि से छलकर तीनोंलोक लेलिये और बलिको सुतलका राज्यदिया और बलिने वर मांगा कि मुझे आपके वामनरूप का दर्शन नित्य मिलाकरे-

परशुराम ॥

दूसरेनाम-भृगुनाथ, परशुधर-पिता-जमदग्नि-माता-रेणुका-वंश-भृगु-स्त्री-धरानी-

भृगुवंशी ऋचीक ने गाधिराजा (इन्द्रका अवतार) की कन्या सत्यवतीसे विवाह करने की इच्छाकी राजाने कहा कि जो कोई एकसहस्र घोड़े लावे उ

सके साथ इसकन्याका विवाह करूंगा ऋचीकने वरुणकी तपस्या करके घोड़ों को पाया और राजाको दिया और विवाह हुआ ऋचीकने पुत्रहेतु हवि बनाकर दो भागकिया और कहा कि जो एकभाग को खाय उसके तेजस्वी पुत्रहोगा और जो दूसरे भागको खाय उसके ब्राह्मण पैदाहोगा—हवि देकर ऋचीक वनको चले गये और सत्यवती के उसी हविके प्रभावसे जमदग्नि ऋषि पैदा हुये—

जमदग्नि ने रेणुकासे विवाह किया और स्त्री सहित वन चलेगये उसस्त्रीसे पांचपुत्र हुये पांचवें पुत्र परशुराम (नारायण के अवतार) थे—

एक समय रेणुका नहाने गई वहांपर मृतिकावती के राजा चित्ररथको अपनीस्त्री के साथ जलक्रीड़ा करते देख आसक्त हुई जब आश्रमपर आई तब मुनि उसका रूप बिगड़ा देखक्रोधितहुये और उसकेपुत्र (जो वनमें फल तोड़ने गयेथे क्योंकि फलाहारही करतेथे) वनसे लौटे मुनिने कहा तुम्हारी माताने पापकियाहै उसको मारडालो चारपुत्रोंने प्रेम वश नहीं मारा और पिता के शापसे मूर्खहोगये परन्तु परशुरामने मारडाला और मुनिने परशुराम की प्रार्थनासे रेणुकाको जिला दिया और चारोंपुत्रों की मूर्खताको मिटादिया—और परशुरामको अजय किया—

किसी समय कार्तवीर्य (सहस्रार्जुन) ऋषिके यहां गये उस समय ऋषि और उनके पुत्र न थे—रेणुकाने उनका बड़ा सन्मान किया कार्तवीर्य मुनिकी कामधेनु चुरालेगये परशुरामने जाकर कार्तवीर्य को मारकर कामधेनुको छीनलिया इस कारण कार्तवीर्य के पुत्रोंने जमदग्नि को मारा और फिर परशुरामने कार्तवीर्य के पुत्रोंको मारा और इसी विरोध से पृथ्वी को २१ बार क्षत्रियों से हीनकरादिया परन्तु परशुराम की आशिषसे कार्तवीर्य की विधवा बहुओं से पुत्रहुये जिनसे फिर क्षत्रियों का वंशचला—

जब रामचन्द्रने जनकपुर में शंकरका धनुष तोड़ाथा तो परशुरामने बड़ा कोप कियाथा और बड़ी वार्तालाप के उपरान्त परशुरामने कहा कि मेरा धनुष (विष्णु

का दियाहुआ) झुकादो तो मैं जानूं कि रामावतार होगया रामचन्द्रने उसी धनुष पर बाण रखकर मारा कि परशुराम का आश्रम नाश होगया और परशुराम तप हेतु वनको चलेगये-

प्रचेता ॥

पिता-प्राचीन बर्हिष- माता-सत्यवती- स्त्री-निम्लोचा (विश्वामित्र की कन्या मेनका अप्सरा से)-

प्रचेता दश भाईथे और दशो एकही रूपके थे इस कारण इनका एकही नाम प्रचेता रक्खागया प्रचेताने अपने पिताकी आज्ञासे तपकिया शिवने आकर इनको हंसगुह्य मंत्र सिखाया और नारायण की आज्ञासे इन्होंने निम्लोचा के साथ विवाह किया-दक्षको राज्यदे योगाग्नि से तन त्यागकिया-

हिरण्याक्ष ॥

दूसरेनाम-कनकलोचन, दितिसुत, हिरण्यकशिपु-

पिता-कश्यप- माता-दिति- मामा-दुंदुभि-पूर्वजन्म-विजय (विष्णु का द्वारपाल), दूसरा जन्म-कुंभकर्ण, यह एकसौ वर्षतक अपनी माताके गर्भमें रहा-जन्म लेतेही वरुण को जीता-और कुबेर,इन्द्र और यमराजादिसे भेंटलिया- नारदजीके कहनेसे यह वाराहजी (भगवान् का अवतार) से लड़कर मारागया-

गरुड़ ॥

दूसरेनाम-उरगाद, उरगारि, खगकेतु, नभगेश, सुपर्ण-

मूर्त्ति-आधामनुष्य और आधा पक्षीका रूप-

स्वामी-विष्णु क्योंकि गरुड़ उनका वाहनहैं-

भक्ष्य-सर्प- पिता-कश्यप- माता-विनता (दक्षकी कन्या)

पुत्र-जटायु और सम्पाति-

एक समय इनकी माता और इनकी सौतेली मातासे होड़ लगीथी जिसकी की कथा कश्यप की कथामें देखो-

एक समय गरुड़ चन्द्रमा को चुरालाये और युद्धमें देवतों को परास्त किया परन्तु जब नारायणने गरुड़को अपना वाहन बनाया तो युद्ध निवारण होगया-

जब लक्ष्मणजीको मेघनादने और रावणने रामचन्द्रको नागफांस में बांधा था तो गरुड़ने उस बंधन से छुड़ाया और इस कारण सन्देह किया कि रामचन्द्र जो नारायण के अवतार होते तो बंधन में न आते यह सन्देह उस समय निवृत्त हुआ जब गरुड़ नारद के उपदेश से काकभुशुण्डि के पासगये और उनसे ज्ञान सीखा-इसप्रकार गरुड़ के उस अभिमानका भंगहुआ जो उस समय में हुआथा कि जब रामचन्द्र बाल्यावस्था में पूरीखाते थे और काकभुशुण्डि पूरी छीनकर भगेथे और रामचन्द्र की आज्ञानुसार गरुड़ने उनका पीछाकरके हरायाथा-

अम्बरीष ॥

यह राजा श्राद्धदेव के पुत्र सर्य्याति के वंशमें था-यह और इनकी स्त्री परमेश्वर के बड़े भक्तथे यह राजा एकादशी व्रतका प्रचारक था एकादशीव्रत करके द्वादशी में ब्राह्मणको भोजन कराकर तब आप पारण करताथा एक समय द्वादशी के दिन दुर्वासा अट्ठासी सहस्र ऋषियों को साथलेकर परीक्षा हेतु राजाके पास आये राजाने ऋषि से कहा कि भोजन करलीजिये दुर्वासाने कहा कि स्नानकर आवें तो भोजन करें वहांपर जानबूझकर देरी की जब द्वादशी व्यतीत होनेलगी तो राजाने ब्राह्मणों की आज्ञासे चरणामृत लेकर पारणकिया और दुर्वासा लौटे तो राजासे कहा कि तुमने विना हमारे भोजनकिये पारण क्यों करलिया यह कहकर अपनी जटासे एक बालतोड़ा उससे कृत्या नाम राक्षसी उत्पन्न हुई और राजाको मारनेदौड़ी परन्तु सुदर्शनचक्रने राजाको बचाया जब वह भागगई तो

चक्रने दुर्वासा का पीछाकिया अन्तमें नारायण के उपदेश से दुर्वासामुनि राजाके पास गये तो चक्रने उनका पीछा छोड़ा—दुर्वासा का पीछा एक वर्षतक चक्रने कियाथा जब लौटे तो वही भोजन खाया और तबतक राजा वैसही खड़ेथे और भोजन बिगड़ा नहीं इसके पीछे राजा अपने छोटे पुत्र को राज्यदे विरक्तहोगये—

वरुण ॥

दूसरेनाम-प्रचेता, जलपति, यादपति, अम्बुराज, पाशी— पिता—कश्यप— माता—अदिति— स्त्री—वारुणी, भार्गवी और चर्षणी (जिससे बाल्मीक्यादि ऋषीश्वर उत्पन्न हुये—

वर्ण—श्वेत— वाहन—मकर (राक्षस जिसका रूप ऐसाहै कि शिर और टाँग मृग की भांति और शरीर वा पूंछ मछली की भांति) अस्त्र— फाँसी (दाहिने हाथमें)—

पुत्र—अगस्त्य मुनि (एक उर्वशी से) और वशिष्ठ—

सम्भालिद—समुद्र, गंगाजी, झील और तालावआदि—इनको सूर्यका अवतार भी कहते हैं इनका वास पवन और जलमेंहै और जलके देवताभीहैं अर्थात् दिक्पालहैं—

राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र न होतेथे तो राजाने वरुणकी सेवाकी जिससे पुत्रहुआ परन्तु राजाने यह वचनदिया था कि हम पुत्रको बलि करदेंगे जब नहीं किया तो राजा के जलोदररोग होगया पश्चात् एक ब्राह्मण के लड़के को मोललेकर बलि कियाचाहा तो वह लड़काभी बचालिया गया और राजाका रोगभीगया—

एक समय रावण हिमालय से महादेव के दोलिंग लंकाको लिये जाताथा देवताओंने विचार किया जो लंकामें शिवकी पूजा होगी तो राक्षस अजित होजायँगे और उन लिंगोंमें यह गुणथा कि पहिले पहिल जहाँपर पृथ्वीमें छूजायँ वहां से

फिर न हटे वरुण आकर रावण के शरीर में घुसगये और क्लेश उत्पन्न किया कि रावण व्याकुल होगया और इन्द्रने लिंगोंको पकड़लिया और वहींपर रखदिया लिंग वहींपर घुसगया और वैजनाथके नाम प्रसिद्ध हुआ जो वीरभूमि (चिता-भूमि) में है जब वरुण रावणके शरीरसे निकले तब एक नदी खुरसू नामी उत्पन्नहुई उसका जल हिन्दू नहीं पीते–

शिवपुराण में लिखाहै कि जब रावण लिंगोंको काँवरि में लिये जाताथा उसको मूत्रकी वेगहुई उसने काँवरि वैजू अहीर नामी चरवाहे के कंधेपर रखदी परन्तु वह भार न सहसका और काँवरि को पृथ्वीपर रखदिया जिससे एकलिंग गोकर्णक्षेत्र में स्थापित हुआ जिसको चन्द्रभाल लिंग कहते हैं और पीछेवाला लिंग वीरभूमि में स्थापित होगया जिसको वैद्यनाथ कहते हैं पीछे वैजूने बड़ी सेवा की जिससे नाम पलटकर वैजनाथ होगया–

कपिलमुनि वा देव ॥

एकमुनिकानामहै–शांख्यशास्त्रके बनानेवाले और विष्णु के अवतार हैं–
पिता–कर्दमऋषि– माता–देवहूती (प्रियव्रत की कन्या)—

जन्म होने उपरान्त इनके पितर बनको चलेगये और इन्होंने अपनी माताको सांख्यशास्त्र सिखाया और आप गंगासागर को चलेगये और वहांपर मुनियोंको ज्ञानसिखाया उनका दर्शनकरने अबभी लोग गंगासागर को जातेहैं–इन्हींके शाप से सगर के पुत्र भस्म होगये–

कर्दमऋषि ॥

ब्रह्माके पुत्र इन्होंने दश सहस्र वर्ष तपस्या की तो नारायणने दर्शनदियां और कहा कि आजके तीसरे दिन राजा स्वायम्भुवमनु अपनी कन्या देवहूती तुम को देंगे तुम उसके साथ विवाह करलेना जब नारायणने सोचा कि इन्होंने वि-

वाह के हेतु इतना तपकिया तो रोदिया और जो आँसू गिरा उसीसे विन्दुसर तीर्थ कुरुक्षेत्र के पासहुआ-

पुत्र-कपिलदेव-

पुत्री-१ कला (पति-मरीचि), २ अनुसूया (पति-अत्रि), ३ श्रद्धा (पति-अंगिरा), ४ हवि (पति-पुलस्त्य), ५ गति (पति-पुलह), ६ योग्य (पति-क्रतु), ७ ख्याति (पति-भृगु), ८ अरुंधती (पति-वशिष्ठ), ९ शान्ति (पति-अथर्वण), पश्चात् वनमें तपकरके तन त्यागकिया-

कश्यपमुनि ॥

पिता-ब्रह्मा-वंशावली-ब्रह्माकी कथामें देखो-

स्त्री-१७ थीं जो दक्षकी कन्याथीं और उनके नाम दक्षकी कथा में देखो उनमें मुख्ययह थीं-

१ आदिति-(जिससे वारह आदित्य उत्पन्नहुये जिनके नाम विष्णु, शक्र, अर्यमा, धृति, त्वष्टा, पूषा, विवस्वत, सविता, मित्र, वरुण, अंश, भग)—

२ दिति-(जिस्से दो पुत्र हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष)-

३ पुलोमा-(जिससे पुलोमादि दानवहुये)-

४ कालिका-(जिससे काले दैत्यहुये)-

५ विनता-(जिससे गरुड़ अथवा अरुण हुये)-

एक समय कश्यप और आदिति ने बड़ातप करके विष्णु से वरमांगा कि जब जब अवतार लेवो तब तब हमहीं आपके माता पिताहोवें-

एकपुत्र वज्रेत था जिसकी वरांगीस्त्री से तारक असुर पैदा हुआ जिसने देवतों को परास्त किया (तारककी कथा देखो)-

एक समय दोनोंस्त्रियां कद्रू और विनताने आपस में कहा कि जो सूर्य्य के घोड़ोंकी पूंछका रंग न बतलासके वह दासी होकररहे कद्रूने श्यामरंग कहा और विनताने कहा कि श्वेत रंग है पश्चात् दोनों देखने चलीं तो कद्रूके पुत्र सांप घोड़ोंकी पूंछमें लिपट कर श्याम बनादिया और विनता दासीबन रहने लगीं कुछदिन उपरान्त जब गरुड़को यह जान पड़ा तब सब सर्पों को खानेलगे तभी से गरुड़ और सर्पों में वैरचला—

सूर्य्य ॥

दूसरेनाम—दिनेश, दिनकर, सविता, रवि, दिवाकर, भास्कर, मिहिर, ग्रह-पति, कर्मसाक्षी, मार्त्तण्ड, पूषण—

जब अस्तरहते हैं तो सविता कहलाते हैं और जब उदयरहते हैं तो सूर्य्य कहलाते हैं—

पिता, कश्यप, माता—अदिति, स्त्री—प्रभा या उषा, अस्त्र—किरण, वर्ण—लाल, नेत्र—तीनहैं—

भुजा—चार हैं (दोहाथों में कमलके फूल एक हाथ से फलदेते हैं और एक हाथसे अपने उपासकको बढ़ातेहैं), आसन—लाल कमल—

स्त्री—संज्ञा अथवा सवर्णा (विश्वकर्मा की कन्या) जिससे तीनपुत्र हुये पीछे सूर्य्यका तेज न सहकर अपना रूप छाया में बदलकर बनको चलीगई— छायाने एक समय संज्ञा के पुत्र यमको शापदिया इस शापके लगने से सूर्य्यको आश्चर्य्य हुआ कि माताका शाप पुत्र को क्योंकर लगसक्ता है पीछे तपोबल से जानलिया कि संज्ञा बनमें घोड़ी का रूप धारण किया इससे आपने भी घोड़े का रूप धारण करके संज्ञा के साथ रहने लगे और सूर्यका तेज कमकरने के हेतु विश्वकर्मा ने उनको पत्थर पर रगड़ा जिससे सूर्य्यका तेज अष्टांश रहगया और जो तेज रगड़ने से निकल गया

उससे यह वस्तु उत्पन्नहुई विष्णुका चक्र, हरका त्रिशूल, कार्त्तिकेयकी सांगी और कुवेरका अस्त्र–

सारथी–अरुण (कश्यप और अदितिका पुत्र)–

पुत्र–सुग्रीव (एक वन्दरमातासे), कर्ण (पृथा पांडुकी स्त्री से), आश्विन (अथवा विवुधवैद्य संज्ञासे जव घोड़ी के रूपमें थी जिन्हों ने च्यवनको शुद्ध तनकिया च्यवनकी कथादेखो), श्राद्धदेव, धर्मराज (संज्ञा से) शनैश्चर और सावर्णि मनु (छायासे) कन्या–यमुना (संज्ञासे)–

पत्ति–अर्कवृक्ष, मूर्त्ति–अष्टवार्ती गोल १२ अंगुल के व्यासकी होतीहै–

सूर्य्य पूषण रूप धारण करके दक्षकी यज्ञमें गये और जव महादेव ने क्रोध युक्त वाण चलाया था वह वाण वलिपशु के लगा उसी वलिपशुको पूषण ने खाया जिससे इनके दांत गिरपड़े और लपसी खातेहैं–

वाहन–चारघोड़ेका रथ–और उच्चश्रवाघोड़ा–

एक समय शिवने सुमालीदैत्यको एकरथ वहुत वेगवान् और तेजस्वी दिया उसपर चढ़कर वह सूर्य्यके पीछे पीछे चलतारहा और जहांपर रात्रिहो वहांपर उसरथके प्रकाश से दिनहोजाय–इसकारण सूर्य्य ने उस दैत्य को मारगिराया इसपर महादेव सूर्य्यके पीछे दौड़े और रथकाटडाला वह रथ काशी में गिरा वहीं पर लोलार्क तीर्थहुआ–

अवतार १२ हैं–सूर्य्य, वरुण, वेदान्त, रवि, भानु, गभस्ति, विष्णु, दिवाकर, मित्र, यम, निर्ऋति, आदित्य–

शिवजी की आज्ञानुसार जो रूप धारण करके दिवोदासका धर्म नष्ट किया वह यह हैं–

१ लोलार्क–असिसंगमपर, २ उत्तरार्क–प्रियव्रताभक्तिन के स्थानपर जहां पर एक वकरी राजाकी कन्या होकर मुक्तिपाई, ३ आदित्य–

शाम्बपुरमें जहांपर शाम्बका कुष्ठ दूरहुआ, ४ मयूखादित्य-जो शिवके नेत्रहुये, ५ खखोलादित्य-विनताने उत्पन्न किया, ६ अरुणादित्य-विनताके पुत्र, ७ वृद्धादित्य-इनकी सेवासे हारीतमुनि युवावस्थाको प्राप्तहुये, ८ केशवादित्य-९ विमलादित्य-हरिकेशने वनमें स्थापितकिया, १० कनकादित्य-११ यमादित्य-जहांपर यमराजने तपकिया था-

जानकी अथवा सीता॥

पिता-जनक राजा, भाई-लक्ष्मीनिधि, बहिन-उर्मिला (सुनैनासे), माता-पृथ्वी-

एक समय जनकपुरमें अकाल पड़ा और अनावृष्टि हुई तो मुनियों ने कहा कि राजा हल जोतें तो वृष्टिहो राजाने ऐसाही किया हलका फाल एक घड़े में (जो रावणने गाड़ा था उसमें मुनियों का मांसथा और मुनियोंने यह मांस रावणको कर दिया था और कहाथा कि हे रावण! इसी मांससे तुम्हारा नाश होगा इससे रावण ने उस घड़ेको दूरदेश में गाड़ा था) लगा और उसमें जानकी उत्पन्नहुई-

एक समय जानकीजी गिरिजापूजन जातीथीं नारद मिले उन्होंने कहा कि तेरा पति इसी वाटिका में मिलेगा जब उस पुरुष को देखकर इस वाटिका में तेरा मन मोहितहो तो जानलेना कि यही मेरा पति है-

एक समय अयोध्याजी में एक राक्षस उत्पन्न होकर महाउपद्रव करनेलगा वशिष्ठजी ने कहा कि जो जानकी अपने हाथसे दीपककी बत्ती उसका देवें तो इस राक्षस का नाशहो परन्तु ऐसे समयमें भी कौशल्याने बत्ती उसकाने नहीं दिया-

लक्ष्मणजी ॥

दूसरेनाम-लषण, सौमित्रि-
पिता-दशरथ, माता-सुमित्रा-
भाई-रामचन्द्र, भरत (सौतेले) और शत्रुहन (सगे)-
स्त्री-उर्मिला (जनककी कन्या सुनैना से), पुत्र-अंगद और चित्रकेतु-

यह शेषनाग के अवतार हैं और द्वापरमें वलरामजी इन्हीं के अवतार हैं जब रामचन्द्र वनकोगये तो रामचन्द्र के साथ साथ रहे-जब जनकपुर गये तो परशुरामसे और लक्ष्मणसे वहुत कठोर वार्त्ता हुई-पम्पापुर में रामकी आज्ञासे शर्पणखाकी नाक काटी और लंकामें मेघनाद से वड़ा युद्धहुआ प्रथम मेघनाद की शक्ति लगनेसे व्याकुल हुये परन्तु रावण के वैद्य सुषेण करके अच्छेहुये और दूसरी लड़ाई में मेघनादको मारा-रामचन्द्र की आज्ञानुसार सीताको वनमें निकाल आये थे-रामचन्द्रकी आज्ञा से पश्चिम के देश जीतकर अपने दोनों पुत्रोंको दिया-

राजा हरिश्चन्द्र ॥

पिता-त्रिशंकु, पुत्र-रोहित (रोहिताश्व)-

राजाहरिश्चन्द्रके पुत्र नहीं था इस कारण वरुणसे प्रण किया कि जो मेरे पुत्र होगा तो उसे आपके वलि करदूंगा-परन्तु पुत्र होने पर वचन नहीं पूरा किया इससे राजाको जलंधररोग होगया-जब रोहितको कारण जानपड़ा तो विश्वामित्र के भांजे शुनःशेफको वलिहेतु मोलले आये परन्तु विश्वामित्र ने वरुणको प्रसन्न करलिया और रोहित और अपने भांजेको वचालिया और राजा का रोगभी जातारहा और ऐसा ज्ञान सिखाया कि उसी समय से राजा वड़ा दानी हुआ-

एक समय बड़ा अकाल पड़ा राजाने अपना धन अपनी प्रजाको खिलादिया और विश्वामित्र परीक्षा लेने आये और कहा कि मुझे धन देकर कन्यादान का फल लीजिये राजाके पास जो कुछ था सब देदिया परन्तु विश्वामित्र को सन्तोष न हुआ तो अपनेको काशीमें एक डोमके यहां बंधक करके विश्वामित्र को धनदिलाया—उस डोम ने राजाको श्मशान पर चौकीदार किया और कहा कि श्मशान का कर लियाकरो दैवयोग से राजाका पुत्र मरगया रानी उसको दग्ध करने के लिये लाई राजाने कर मांगा रानीके पास कुछ देनेको न था ज्योंही चाहा कि अपना वस्त्र उतार करदें त्योंही ईश्वरविमान आया और राजा रानी को काशीसहित वैकुण्ठको ले चलागया—

भरतजी ॥

पिता—राजादशरथ, माता—केकयी, माम्रू—युधाजित—
स्त्री—माण्डवी (राजाजनकके भाई कुशकेतुकी कन्या) पुत्र—पुष्कर और तक्ष—
सौतेलेभाई—राम, लक्ष्मण, शत्रुहन—

यह नारायण के शंखके अवतार हैं और महाबलीथे जब लक्ष्मण के शक्ति लगीथी और महावीर धवलगिरि को लिये लंका जाते थे उस समय महावीर को राक्षस समझ कर बाणमारा और जब महावीर के मुखसे रामनामोच्चार सुना तो भरत उनके पासगये और सब वृत्तान्त सुनकर महावीरसे कहा कि मेरे बाणपर बैठकर शीघ्र चले जाव जब महावीर बाणपर बैठे और इस भांति उनके बलकी परीक्षा लेलिया तो कहा कि मैं आपकी कृपासे अब चलाजाऊंगा—

भरतजी रामचन्द्र के बड़े भक्तथे जब रामचन्द्र बनको जाने लगेथे तो उस समय यह अपने ननिहालमें थे वहांसे आकर अयोध्यामें अपने पिताका मृतकर्म किया और रामचन्द्र के दर्शन हेतु चित्रकूट गये परन्तु रामचन्द्र की आज्ञानुसार

लौटआये और अयोध्या की गद्दीपर रामचन्द्र की पादुकाको स्थापित करके आप नन्दिग्राम अर्थात् भरतकुण्ड में विरक्त होकर रहे और रामचन्द्रके वनसे लौटने पर अयोध्याजी को गये–रामचन्द्रकी आज्ञानुसार कश्मीर देशको जीता और पुष्करावती का राज्य पुष्करको और तक्षशिला का राज्य तक्षको दिया–

गालव ॥

पिता–विश्वामित्र–

जब राजा गालव विश्वामित्र से विद्या पढ़चुके तो कहा कि मुझसे दक्षिणा लीजिये विश्वामित्र ने न अंगीकार किया परन्तु जब गालव बहुत हठवश हुये तो विश्वामित्र ने १००० श्यामकर्ण घोड़े मांगे गालवने तीन राजाओंके यहां २०० घोड़े पाये परन्तु राजाओं ने कहा कि हमको पुत्रदो तो और भी घोड़े देवें–तब ययातिकी कन्या (जिसमें इतना गुणथा कि चाहे जितने पुत्र उससे उत्पन्न कर लेव परन्तु वह क्वारीही बनीरहे) लायदिया और उन राजाओं से ६०० घोड़े और पाये और २०० घोड़ों के बदले में विश्वामित्र ने उस स्त्रीसे दो पुत्र उत्पन्न करलिये–

एक समय गालव की माता भूखसे व्यथित होकर गालव के गले में फांसी बांधकर बेंचने को निकली परन्तु राजा सत्यव्रत ने प्रतिदिन भोजन देनेका बंधान किया तब लड़के की फांसी छोड़ा तभीसे इस पुत्रका नाम गालव और गालवगोत्र इन्हींसे चला–

अत्रिमुनि ॥

पिता–ब्रह्मा (कानसे) कोई कोई कहते हैं कि रुचिप्रजापति इनके पिताहैं–

स्त्री–अनसूया (जिन्होंने जानकीजी को चित्रकूट में स्त्रीधर्म सिखाया)–

पुत्र–चन्द्रमामुनि (ब्रह्माके वरपूर्वक अत्रिके नेत्रसे) दत्तात्रेय (विष्णुकेवरसे), दुर्वासा (शिवके वरसे)–

एक समय अत्रिमुनि शिवका तप करते समय प्यासे हुये और अनसूया से जल मांगा परन्तु अनावृष्टि के कारण जल कहीं न था तो अनसूया कमण्डलु लेकर वनमें खड़ीहुई गंगाजीने जलदिया उसी जलको अत्रिमुनिने चित्रकूटमें स्थापित किया और पयस्विनी नाम रक्खा और वहींपर शिवने दर्शन दिया और उनको भी स्थापित किया और अत्रीश्वरनाथ नाम रक्खा–

राजाययाति ॥

राज्य–हस्तिनापुर, महाप्रपितामह–सोम–

स्त्री–देवयानी (शुक्रकी कन्या) और शर्मिष्ठा (देवयानीकी चेरी)–

पुत्र–यदु, तुरवसु, अणु (देवयानी से) और द्रुव, पुरु (शर्मिष्ठा से)

ययाति राजाने यज्ञादिकरके इन्द्रासन लेलिया और इन्द्रसे अपने धर्म्मों को वर्णनकिया जिससे सब पुण्य क्षीण होगये और देवतों ने सिंहासनसे ढकेलदिया–

जब ययाति शर्मिष्ठापर मोहितहुये तो शुक्रके शापसे उनकी युवावस्था नष्टहोगई परन्तु जब प्रार्थनाकिया तो कहागया कि यदि कोई पुत्र अपनी युवावस्था राजा को दे तो मिलसक्तीहै परन्तु केवल पुरुने अंगीकार किया इससे पुरु राज्यके अधिकारी हुये और दूसरे पुत्र राज्य के अधिकारी नहींहुये–

सम्पाती ॥

पिता–गरुड़ भाई–गीधराज जिसने रावण से युद्धकियाथा–

दोनों भाई तरुणावस्था में अपने बल का गर्व करके उड़ते २ सूर्य्य के निकट पहुँचे परन्तु तेज न सहकर गीधराज तो लौटआया और इतना निकट पहुँचगया कि उसके पंख सूर्य्य के तेजसे जलगये और वह समुद्र तटपर गिरा दैवयोग से चन्द्रमा मुनि उधरसे निकले पंखको जला देख उनके दयालगी और सम्पाती से कहा कि तू इसी स्थानपर रह जब रामचन्द्र के दूत सीताकी खोजमें इधर आवेंगे

उनके दर्शन से तेरे पंख फिर उगेंगे केवल तू उनको सीताका पता बतलादेना—

शत्रुहन अर्थात् शत्रुघ्न ॥

पिता—दशरथ, माता—सुमित्रा, भाई—रामचन्द्र, भरत(सौतेले) लक्ष्मण (सगे)
स्त्री—श्रुतिकीर्ति (राजा जनक के भाई श्रुतिकेतु की कन्या)—
पुत्र—सुबाहु और यूपकेतु—

जब रामचन्द्र वन जानेलगे उस समय शत्रुहन भरत के साथ केकयदेश गये थे वहांसे लौटनेपर यह सुना कि मंथराचेरीने केकयीको कुटिलपन सिखाकर राम को बनवास कराया उसको बहुत मारदिया परन्तु भरतजीने छुड़ादिया—भरतके साथ चित्रकूट को भी गयेथे—कृष्णावतार में अनिरुद्धका अवतार इन्हींका हुआ—

रामचन्द्रने इनको मथुरा का राज्य दियाथा जब अयोध्या धाम को जानेलगी तो यह मथुरा का राज्य सुबाहु को विदिशा का राज्य यूपकेतु को देकर रामचन्द्र के पास चलेआये—

द्विविद और मैन्द कपि ॥

पिता—आश्विन, माता—एकवंदरी—

यह दोनों भाईथे और लंकाकी चढ़ाई में रामचन्द्र के साथ गयेथे—

द्विविद के १००० हाथीका बलथा और सुग्रीवका मित्रथा—त्रेतायुगसे द्वापर तक किष्किंधा में रहा जब इसका मित्र भौमासुर मारागया तो यह द्वारकापर चढ़ आया और बलरामजीने इसको श्वेतपर्वतपर मारडाला—

सुषेणकपि ॥

कन्या—तारा (बालि की स्त्री)—

वरुणने इसको लंका में रामचन्द्र की सेना के साथ भेजाथा और पश्चिम की सेनाका सेनापतिथा—

शरभकपि ॥

पिता—पर्जन्य—

यह रामचन्द्र की सेनाके साथ लंकाको गये थे—

अंगद ॥

पिता—वालि, माता—तारा (सुषेण कपि की कन्या), चचा—सुग्रीव—

किष्किंधाका रहनेवाला—रामचन्द्रने वालिको मारकर सुग्रीव को राज्यदिया और अंगद को युवराज बनाया—अंगद हनुमानजी के साथ सीताकी खोजमें गये और जब रामचन्द्र समुद्र पारगये तो अंगद को रावण को समझाने भेजाथा लंका में पहुँचतेही इन्होंने रावण के एक पुत्रको मारा और रावण की सभामें जाकर बड़ी बातें कीं जब रावण रामचन्द्र की निन्दा करनेलगा तो क्रोधयुक्त अपना हाथ पृथ्वीपर पटकदिया जिसकी वायुसे रावण के सब मुकुट गिरपड़े कुछ तो रावणने उठालिया और कुछ अंगदने रामके पास फेंकदिया—तब भी रावण को लाज न आई तो अंगदने प्रणकिया कि यदि कोई मेरे चरणको पृथ्वी से हटादेवें तो रामचन्द्र हारकर लौटजावें परन्तु कोई नहीं हटासका—

मधु और कैटभ ॥

यह दोनोंदैत्य विष्णुके कान के मैलसे उत्पन्न हुये और देवीकी तपस्या करके वरपाया कि जबतक तुम अपने मुंहसे मृत्यु न मांगोगे तुम किसी के मारे न मरोगे—इसने देवतों को परास्त करके भगवान् से ५००० वर्षतक युद्ध करके व्याकुल कर दिया तब भगवानने देवीकी स्तुति की और उन्हीं से उसे मोहित कराया कि जिससे उसने मृत्यु मांगी और भगवान्ने सागरपर अपनी जंघा रखकर और जंघेपर उसका शिररखकर काटडाला जो मेद सागरपर गिरा उसीसे पृथ्वी हुई जिससे पृथ्वीका नाम मेदिनी हुआ—

काकभुशुण्डि ॥

पिता—चन्द्रनामी काक (अलम्बुषा देवीका वाहन)

माता—हंसिनी (ब्रह्माणी का वाहन)

भाई २१ थे जो सात हंसिनियों से उत्पन्न हुयेथे उनमें भुशुण्डि चिरंजीवीहुये और शेष समय पाकर मरगये—

स्थान इनका नीलगिरि था जहांपर गरुड़ और वशिष्ठजी को ज्ञान सिखाया था—इनका मन सगुणरूप में रचाथा परन्तु इनके गुरु लोमशऋषि इनको निर्गुण सिखानेलगे जब इन्होंने नहीं माना तो शापदिया कि तू कौवा होजाय इस कारण काक तन पाया—पूर्वजन्म में यह वैश्य थे—

विराध ॥

यह राक्षस पूर्वजन्ममें विद्याधर था और दुर्वासा के शाप से राक्षस होगयाथा—वन जाते समय रामचन्द्र को चित्रकूटके दक्षिण मिला और सीताको उठालेगया लक्ष्मणने पांचबाण चलाया जिससे उसने जानकीजी को छोड़दिया और रामचन्द्र की ओर झपटा परन्तु मारागया उसकी अस्थि को रामचन्द्रने पृथ्वी में गाड़दिया—

त्रिशिरा अर्थात् त्रिजटा ॥

यह राक्षसी बड़ी भक्ताथी और लंका में रावणकी ओर से सीताकी सेवा में रहती थी—

खरदूषण ॥

वंशावली रावण की कथा में देखो—

इनकी चौकी लंकाके फाटकपर रहतीथी और जब शूर्पणखा की नाक काटी

गई तो यह वृत्तान्त सुनकर दोनों भाई रामचन्द्र पर १४००० सेना लेकर चढ़गये और युद्धकरके परलोकको सिधारे–

मारीच ॥

माता–ताड़का, भाई–सुबाहु–

जब रामचन्द्र विश्वामित्र के यज्ञकी रक्षा करनेगये तो यह दोनों लड़नेको आये सुबाहु मारागया और मारीच बाणके लगने से समुद्र तटपर जापड़ा और कुछ दिन वहीं पर रहा जब खरदूषण मारेगये तब रावणने मारीच को कपटमृग बनाकर रामचन्द्र के सम्मुख भेजा रामचन्द्र ने उसको सुवर्णरूप देखकर पीछा किया और सीताको उसी समय में रावण हरलेगया–

कबन्ध ॥

यह राक्षस पूर्वजन्म में गंधर्व था किसी समय दुर्वासाऋषि इसके गानेपर अप्रसन्नहुये इसने हँसदिया मुनिने उसे शापदिया कि वह राक्षस होकर उपद्रव करने लगा तब इन्द्रने उसे वज्रमारा जिससे उसका शिर धड़में घुसगया इसीसे इसका नाम कबंध हुआ इसकी दोनों भुजा एक योजनकी थीं जिससे वह सब जीवों को पकड़ लेताथा जब रामचन्द्र जानकी की खोजमें चलेजातेथे यह उनको मिला और रामचन्द्रने उसका शिर काटडाला–

सुरसा ॥

यह स्वर्गलोकवासिनी राक्षसी थी जब हनुमान्जी सीताकी खोजमें लंका जातेथे तो वह खानेदौड़ी हनुमान्जीने कहा मैं रामचन्द्रका काम करआऊं तो मुझे खाना परन्तु उसने नहीं माना मुख फैलाकर दौड़ी जितना मुंह वह बढ़ाकरे उसका दूना भारी शरीर हनुमान्जी धारण करतेथे पश्चात् हनुमान्जी सूक्ष्मरूप धरकर

उसके कानकी राह निकलगये तब सुरसा प्रसन्नहो आशिषदे बोली कि तुम रामचन्द्रजीके कार्यको सिद्ध करोगे-

सिंहिका ॥

पुत्र-राहु (बृहस्पति के वीर्यसे)

यह राक्षसी पातालवासिनी समुद्र में रहती थी और जीवोंकी परछाहीं पकड़कर खींचलेतीथी जब हनुमान्जी सीताकी खोज में जातेथे तो उनसे छल किया परन्तु मारीगई-

लंकिनी ॥

यह राक्षसी भूलोकवासिनी लंकामें रहती थी जब हनुमान्जी लंकामें घुसे तो उसने रोंका हनुमान्जीने उसे एक घूंसा मारा जिससे वह व्याकुल होगई-तब उसने कहा कि मुझसे ब्रह्माने कहा था जब तू कपि के मारने से व्याकुल होजाय तो जानलेना कि राक्षसों का नाश होनेवाला है-

पुलस्त्यमुनि ॥

पिता-ब्रह्मा के कानसे,

स्त्री-पृथ्वी (दक्षकी कन्या जिसका दूसरा नाम हविर्भूथा)

वंशावली रावण की कथामें देखो-

प्रथम पुत्र वैश्रवण लंका छोड़कर ब्रह्मलोक को चलेगये तब मुनिने दूसरे पुत्र वैश्रवस को उत्पन्नकिया इसने मुनिकी सेवाके लिये अपनी तीन स्त्रियों पुष्पोट, मालिनी और राकाको करदिया-

राजासगर ॥

पिता-आहुक, स्त्री-केशिनी और सुमति-

पुत्र-असमंजस (केशिनी से) और ६०००० पुत्र (सुमति से)-

पौत्र-अंशुमान्, प्रपौत्र दिलीप, महाप्रपौत्र-भगीरथ-

राजा आहुक जब वनको गये तो उनकी गर्भिणी स्त्रीभी जिसको उसकी सवतिने विष देदियाथा उनके साथ गई वह सातवर्षतक गर्भसेरही जब राजाका देहान्त हुआ और वह सती होनेचली तो और्व्वमुनिने रोकलिया और उसके पुत्रहुआ जिसका नाम मुनिने सगर (स + गर=विष सहित) रक्खा-

राजासगर महाप्रतापी था उसने बहुत से अश्वमेध यज्ञकिये इन्द्र डरकर यज्ञ के घोड़ेको चुरालेगया और पाताल में कपिलमुनि के पीछे बांधआया राजाके ६० सहस्रपुत्र घोड़ेको ढूँढते २ वहां गये और मुनिको लातमारा जब मुनिने क्रोध युक्त आंख खोली सबके सब भस्म होगये तदनन्तर सगरने अंशुमान् को भेजा वह मुनिसे घोड़ेको लाये और मुनिने कहा कि यदि गंगाजी पृथ्वीतलमें आवें तो तुम्हारे पुरुषे तरें-राजासगरने तीनलाखवर्ष गंगाहेतु तपकिया परन्तु मनोरथ पूर्ण न हुआ-अंशुमान्ने भी वैसाही तपकिया और मरगये तब दिलीपने तपकिया और मनोरथहीन मरगये पश्चात् भगीरथ ने यह कार्य्य पूर्णकिया-जब ब्रह्मा ने अपने कमण्डलु से गंगाजी को दिया तो शिवने अपने जटामें रोकलिया बड़ी तपस्या से शिवने छोड़ा आगे बढ़ी तो रास्ते में जह्नुमुनि ने पानकरलिया बड़ी प्रार्थना से उन्होंने छोड़ा और गंगाका नाम जाह्नवी हुआ-ब्रह्माने कहाथा कि यह तेरी पुत्रीहै और भागीरथी कहलायेगी-

असमंजस पूर्व जन्म में योगी होनेके कारण प्रजा को बहुत दुःख देताथा इस से राजाने उसको देशसे निकालदियाथा-

वेन ॥

पिता-अंग, माता-सुनीथा-

ध्रुवके वंशमें कई पीढ़ीके पीछे अंग राजाहुये बड़ी तपस्या के उपरान्त पुत्र

जिसका नाम वेनथा यह महादुष्ट था जब राज्य देकर राजा वनको चलेगये तो यह बड़ा उपद्रव करनेलगा ऋषियोंने मंत्रसे उसको मारडाला उसकी माताने उसको तेलमें रखछोड़ाथा जब राजा विना देशमें अनीति होनेलगी तो ऋषियोंने वेनकी जंघा मथकर एक कालेवर्णका पुत्र उत्पन्नकिया यह ऋषियों की आज्ञासे वनको चलागया उसीकी सन्तान में कोल, निषाद (हब्शी) और मुसहरे हुये-और वेनकी दाहिनी भुजासे राजा पृथुहुये जिससे पृथ्वी प्रकट हुई और बाईं भुजा से एक कन्या प्रकटकिया जो पृथुके साथ विवाहीगई-

त्रिशंकु ॥

पिता-सत्यव्रत, पुत्र-हरिश्चन्द्र-

त्रिशंकु मान्धाता के वंशमेंथा और इस राजाने मदवश चाहा कि ऐसी यज्ञकरें कि सदेह स्वर्ग को जावें वशिष्ठजी के पास गया वशिष्ठ ने कहा कि ऐसी यज्ञ नहीं होसक्ती तब वशिष्ठ के पुत्र शक्तिसे कहा-उन्होंने उत्तर दिया कि एकतो तूने गुरुके वचन का विश्वास नहीं किया दूसरे पिता पुत्रमें विरोध कराना चाहताहै तू चांडालहोजाय इस चांडाल तनुमें इसने वशिष्ठकी कामधेनु मारडाली इन्हीं तीन पापों के कारण उसके तीन सींगहुये और त्रिशंकु नाम हुआ तब विश्वामित्र की शरणमें गया विश्वामित्र ने यज्ञ कराकर उसको स्वर्गको भेजा परन्तु देवतों ने ढकेल दिया वह उलटाहो अधड़ में लटक रहा जो लार उसके मुखसे गिरी उसीसे कर्मनाशा नदी उत्पन्न हुई जिसका पानी हिन्दू नहीं छूते और जिस देशमें उसकी छाया पड़ी उसको मगधदेश कहते हैं जहां मरने से मनुष्यों को नरक होता है-

मार्कण्डेय अथवा चिरंजीविमुनि ॥

पिता-मृकण्डऋषि-

मृकण्ड पुत्रहीन थे देवतों के वरसे उनके पुत्रहुआ परन्तु उसकी आयु १२ वर्षकी थी १२ वर्ष उपरान्त वे स्त्री पुरुष रोनेलगे यह वृत्तान्त सुनकर मार्कण्डेय ने छःमन्वन्तर तप करके अपनी आयु बढ़ाया और चिरंजीवी हुये-फिर तप किया तो नारायण ने उनको महाप्रलय दिखाया परन्तु उनको नारायण नेही-इनको व्यासजी ने वेदोंका सार पढ़ाया और उस पुराणका नाम मार्कण्डेयपुराण हुआ-

षष्ठीदेवी ॥

वाहन-बिल्ली, स्वरूप-स्वर्णका और बालक गोदमें-

विवाही स्त्री इनकी पूजाकरती हैं लड़के का बाप बालकके उत्पन्न होने के छःदिन पीछे और माता पन्द्रहवें दिन पूजतीहैं-

निमि ॥

पिता-इक्ष्वाकु-

एक समय राजाने वशिष्ठको यज्ञ करवाने के लिये बुलाया परन्तु वशिष्ठ इन्द्रके यहां यज्ञ कराने चलेगये तब राजाने गौतम से यज्ञ करालिया वशिष्ठने शापदिया कि तेरा नाश होजाय तब राजाने वशिष्ठको भी शापदिया जिससे उन्होंने मित्रावरुणके यहां जन्मलिया और राजाको वरमिला कि तेरा वास मनुष्य और जीवादिके पलकपररहे-राजाके शरीरसे मुनियोंने राजा मिथिलको उत्पन्न किया जो जनक के पुरुषाओं में हैं और उन्हों ने मिथिलापुरी बसाई-

बाणासुर ॥

पिता-बलि, पितामह-विरोचन, प्रपितामह-प्रह्लाद भाई सौ थे, स्त्री-कन्दला, पुत्र-स्कंद, कन्या-ऊषा, राजधानी-शोणितपुर, मंत्री-कूष्माण्ड और कुम्भकर्ण-

वाणासुरने शिवका तपकर सहस्र भुजा पाईं तब शिवसे लड़ने चला महादेवने कहा तुझसे लड़नेवाला उत्पन्न होगा और एक शलाका देकर कहा कि इसको अपने मकान के ऊपर खड़ा करदेव जब यह गिरपड़े तो जानलेना कि तेरा वैरी उत्पन्न हुआ उसने वैसेही किया–उसकी कन्या ऊषा पार्वतीजी से विद्या पढ़ने जाया करती थी शिव पार्वती को विहार करते देख इसको भी पति की इच्छा हुई तब पार्वती ने जानलिया और कहा कि तेरापति तुझको स्वप्नमें मिलेगा उसको ढुँढ़वालेना कुछदिन उपरान्त ऐसेही हुआ और उसकी सखी चित्ररेखा ने उसको ढूँढ़ा और हरलेआई वह पुरुष श्रीकृष्ण का पोता अनिरुद्ध नामी था जब अनिरुद्ध यहां आये तो वह शिवकी दीहुई शलाका गिरगई वाणासुर ने अनिरुद्ध का पता पाकर उनको छःमहीने बांधरक्खा यह वृत्तान्त सुनकर कृष्ण और बलराम वाणासुर पर चढ़ आये और वाणासुर को हरा ऊषा सहित अनिरुद्ध को लेगये इसयुद्ध में शिवजी वाणासुर की सहायताको आये थे पश्चात् वाणासुर ने शिवकी बहुत सेवाकी जिससे वह शिवका गणराज हुआ और उसका नाम महाकाल हुआ–

मनु अथवा स्वायम्भुवमनु ॥

पिता–ब्रह्माके दाहिने हाथसे, स्त्री–शतरूपा(ब्रह्माके बायें हाथसे)–
पुत्र–उत्तानपाद, प्रियव्रत, कन्या–देवहूती (कर्दमकी स्त्री), आकूती (रुचिप्रजापतिकी स्त्री), प्रसूती (दक्षप्रजापतिकी स्त्री)–

मनु और शतरूपाने बड़ा तपकिया इससे नारायणने उनकी कन्या देवहूती के यहां जन्मलिया और कपिलदेव कहलाये–

इन्द्र ॥

पिता–आकाश, माता–पृथ्वी, स्त्री–इन्द्राणी अर्थात् शची और पुलोमा,

पुत्र—जयन्त आदि तीन पुत्र (पुलोमासे), चित्रगुप्त (गऊ से)—
पुत्री—जयन्ती (ऋषभदेवकी स्त्री), गुरु—बृहस्पति, वाहन—बादल,
चौरहर—वैजयन्त, राजधानी—अमरावती, सारथी—मातलि,
मंत्री—यमराज, कोषाध्यक्ष—कुबेर,
भुजा—चार (दोहाथों में सांगी एकमें वज्र और एक खाली)—
घोड़ा—उच्चैःश्रवा, हाथी—ऐरावत (समुद्रसे उत्पन्न हुआ)—
आश्रम—मेरुपर्वत (विश्वकर्मा का बनाया), वन—नन्दन—
दूसरेनाम—शक्र, कुशलांजन, देवपति, वृत्रहा, वज्री, मरुत्वान्, मघवा,
विडौजा, शुनासीर, पुरुहूत, पुरन्दर, मेघवाहन, महेन्द्र, शतमन्यु,
दिवस्पति, सुत्रामा, वासव, वृषा, सुरपति, बलाराति, जम्भभेदी,
नमुचिसूदन, सहस्राक्ष, ऋभुक्षा—

इन्द्रने एक समय वृत्रासुर को युद्ध में मारा—मेघनाद और इन्द्र से युद्धहुआ मेघनाद इन्द्रको पकड़ रक्खा था तब ब्रह्माने उसे वरदेकर इन्द्रको छुड़ाया—

इन्द्रने किसी समयमें गौतमकी स्त्री अहल्यासे भोगकिया और मुनिके शापसे इन्द्र के सहस्र भगहोगये परन्तु बृहस्पति की कृपासे वे भग नेत्र होगये और तभी से इन्द्र सहस्रनयन कहलाये—

एक समय देवताओं और असुरों में संग्राम हुआ ब्रह्माने कहा कि राजा रजि जिसकी सहायता करेंगे उसकी विजय होगी प्रथम असुर रजिके पासगये रजिने कहा कि यदि इन्द्रासन हमको देव तो हम तुम्हारी सहायता करें असुरों ने नहीं माना पश्चात् देवतोंने यह बात अंगीकार की और राजाकी सहायतासे विजयपाई इन्द्रने राजा से बड़ी प्रार्थनाकी तो राजाने फिर इन्द्रासन इन्द्रहीको दे-दिया राजाके देहान्त उपरान्त उनके पुत्रोंने देवतों से युद्धकिया परन्तु बृहस्पति ने कोई यत्न किया कि जिससे राजा के पुत्र अबलहोकर इन्द्र करके मारेगये—

इन्द्रासन पाने के हेतु जब२ राजाओंने यज्ञादिकी तभी २ इन्द्र उनके यज्ञादि भ्रष्ट करने का उपाय करताथा—

जब मोहिनी भगवान्ने अमृत देवतों को पिलादिया तो बड़ाभारी देवासुर संग्रामहुआ जिसमें बलिकी, सहायता को नमुचि और पाकराक्षस आये और मारेगये इसी से इन्द्रका पाकरिपु भी नामहै—

वृहस्पति ॥

पिता-अंगिरसऋषि, वर्ण-ब्राह्मण, मूर्त्ति-कमलाकार,
बलि-अश्वत्थ- स्त्री-तारा—

पुत्र१-कच (शुक्रका चेला और शुक्रकी कन्या देवयानी इनसे विवाह करना चाहा परन्तु कचने गुरुभगिनी जानकर नहीं अंगीकार किया और उसके शापसे इनकी सब विद्या भूलगई और इनके शापसे देवयानीका विवाह ब्राह्मण से नहीं हुआ किन्तु राजा ययाति के साथहुआ)—

पुत्र२-राहु (सिंहिका राक्षसी से)—

भाई—उतथ्य (जिसकी स्त्री ममता से वृहस्पतिने भोगकिया और ममताने उस गर्भको गिरवाया जिससे भरद्वाजहुये और भरद्वाज को राजा भरत (दुष्यन्तके पुत्र) के यहां पहुँचाया उन्होंने इसका नाम वितथ रक्खा—

एक समय चन्द्रमा वृहस्पति की स्त्री तारको हरलेगये इस कारण देवताओं (वृहस्पति की ओरसे) और राक्षसों (चन्द्रमा की ओरसे) में संग्रामहुआ चन्द्रमाने हारमानकर ताराको देदिया परन्तु वृहस्पतिने उसको गर्भिणी जानकर नहीं अंगीकार किया जब पुत्र उत्पन्नहुआ उसने माता से अपने पिताका नाम पूंछा लज्जावश उसने नहीं बतलाया तो पुत्रने शापदिया कि स्त्रियां झूंठ बोलाकरें—ब्रह्माके पूंछने से उसने बतलाया कि चन्द्रमाका पुत्रहै यह सुनकर वह

चन्द्रमा के पास चलागया और चन्द्रमाने उसकी तीव्रबुद्धि देखकर उसका नाम बुध रक्खा-बृहस्पति देवताओं के गुरुहैं और नवग्रहों में एक ग्रहहै-

विश्वकर्म्मा (त्वष्टृ)॥

पिता-कश्यप, माता-अदिति, कोई कोई कहते हैं कि इनके पिता ब्रह्माहैं- स्त्री-जया (एक दैत्यकी कन्या) पुत्र-विश्वरूप और नल (मन्दरी से)- वर्ण-श्वेत, नेत्र-तीन, अस्त्र-लकुट, भूषण-सोनेका हार और कंकण-

विश्वकर्म्मा देवतों के राजहैं इन्होंने अनेक प्रकार के शस्त्र और वाहन और देवलोक और जगन्नाथ की मूर्ति और मन्दिर बनाया-पहिले कारीगर इनका पूजन करते थे परन्तु अब उनके बदले अपने २ अस्त्रोंकी पूजा करते हैं-

नल और नील भाईथे बाल्यावस्था में समुद्र तटपर खेलाकरें और किसी मुनिकी मूर्तियोंको समुद्रमें फेंक दियाकरें मुनिने शापदिया कि तुम्हारा फेंकाहुआ पत्थर पानीमें नहीं डूबेगा-इसी कारण समुद्र में सेतु इन्होंने बांधा-

विश्वरूप को इन्द्रने अपना पुरोहित बनाया परन्तु यह दैत्यों से मिलगया तब इन्द्रने इसको मारडाला तब विश्वकर्मा ने मंत्र पढ़कर वृत्रासुर को उत्पन्नकिया जब उसको भी इन्द्रने मारा तो विश्वकर्मा ने युद्धकिया और इन्द्रने विश्वकर्म्मा को वध किया-विश्वरूप के तीन शिर थे जब इन्द्रने इसके शिरकाटे तो एक शिरसे कबूतर, दूसरे से भँवरा और तीतर तीसरे शिरसे उत्पन्नहुये-

भृगुमुनि॥

पिता-ब्रह्माकी त्वचासे, पुत्र-शुक्र, ऋचीका, कन्या-धाता, विधाता, श्री, स्त्री-ख्याति-

एकसमय देवासुरसंग्राम हुआ परन्तु शुक्रकी माताके कारण देवतों की विजय

नहीं होतीथी तब विष्णुने अपने चक्रसे उस स्त्रीका शिरकाटलिया इस अनीतिपर मुनिके शापसे विष्णुको ७ वार पृथ्वीपर अवतार लेनापड़ा—

एक समय सरस्वती के तीर मुनिमंडली में यह बातचली कि तीन देवों अ- र्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश में कौन श्रेष्ठहै इस बातकी परीक्षा को भृगुजी पहिले ब्रह्माके पासगये और विना प्रणामकिये बैठगये तो ब्रह्मा बहुत क्रोधितहुये भृगुने जानलिया कि ब्रह्मा रजोगुणीहैं फिर महादेव के पासगये जब वे मिलने को उठे तो मुनिने अपना मुंह फेरलिया महादेव त्रिशूललेकर मारने दौड़े पार्वतीने रोक लिया भृगुमुनिने उनको तमोगुणीजाना फिर वहांसे नारायण के पासगये और उनको शयन करतेदेख उनकी छातीमें एक लातमारी नारायण जागपड़े और भृगुसे प्रार्थनाकी कि मेरी छाती की चोट आपके चरणों में लगीहोगी भृगुने उनको सतोगुणी समझा—वही भृगुलता का चिह्न नारायण की छाती में सदाके लिये बनगया—

जब दक्षने अपने यज्ञ में महादेव का भाग नहीं लगाया उस समय भृगुमुनि उनके पुरोहितथे इसकारण इनकी दाढ़ी उखाड़ीगई—

जब राजा नहुषको इन्द्रासन मिलाथा उस समय भृगुने अगस्त्य मुनिकी जटा में घुसकर राजाको शाप दियाथा जिससे राजा सर्प होगयाथा—

एक समय पुलोमा नामी स्त्री के साथ जो एक असुरकी मांगी थी भृगुने विवाहकरलिया वह असुर उस स्त्रीको छीनलेगया और अग्निने उस असुर की सहायता कीथी इस कारण मुनिने अग्नि को शापदिया कि तू सर्वभक्षीहो परन्तु पीछेसे दयाकरके कहा कि जो वस्तु तू खायगा अर्थात् जो वस्तु तुझमें जलेगी वह पवित्र होजायगी—

एक समय काशीके राजादिवोदासने वीतहव्य से पराजितहो भरद्वाजके यहां यज्ञकिया तो राजाके प्रतर्दन नामी पुत्रहुआ उसके डरसे वीतहव्य भृगुमुनिके पास

भागगया मतर्दनने वहांभी पीछाकिया भृगुमुनिने कहा कि यहां कोई क्षत्रिय नहीं है यह तो ब्राह्मणहै इससे वीतहव्य वेदोच्चारण करनेवाला ब्राह्मणऋषिहुआ–

भृगुमुनि की आशिष से सगर की एक स्त्रीके एक पुत्र और दूसरी स्त्रीके साठ सहस्र पुत्रहुये–

वामन अवतार ॥

पिता–कश्यप– माता–अदिति–

स्त्री–कमला (जो कमलसे उत्पन्न हुईथी) और कीर्त्ति–

पुत्र–सुभग (कीर्तिसे)—

यह अवतार त्रेतायुगमें हुआथा–जब समुद्र मथागया था और विष्णुने मोहनी रूप धारणकर अमृत देवतों को पिलादिया तो बलिने देवतों को भगादिया और इन्द्रासन जीतलिया–इन्द्रने मयूरका रूप धारण करके और कुबेर गिरगिटकारूप धारण करके रहे पश्चात् अदितिने तपकिया जिससे नारायण ने वामनरूप होकर उनके यहां जन्मलिया और राजाबलि को छलकर सब लेलिया (बलि की कथा देखो)–

मत्स्य अवतार ॥

यह भगवान् का अवतार सत्ययुग में हुआ–महाप्रलयके अन्तमें जब ब्रह्मा सोनेलगे तो हयग्रीव नामी राक्षस वेदों को चुरालेगया–इस कारण नारायणने मत्स्यरूप (शफरी मछली का रूप) धारणकिया–

द्राविड़ देशके राजा सत्यव्रत (जिसको नारायणने पीछेसे मनुका अधिकार देकर श्राद्धदेव नाम रक्खा) एक समय कीर्तिमाला नदी में अर्घ देनेगया ज्योंही जल हाथमें लिया त्योंही वह मछली हाथमें आई राजाने फिर उसको जलही में डालदिया मछली बोली हे राजन्! मुझको इस जलसे निकालले नहीं तो मुझे

दैत्य मारडालेंगे-राजाने उसको लाकर एक घड़े में रक्खा जब वह मछली उस घड़ेसे बड़ी होगई तो उसको एक तालाब में डालदिया जब तालाब से भी बड़ी हुई तो झीलमें डाला अन्त को समुद्र में डालदिया और कुछ सन्देह युक्त स्तुति करनेलगे तो मत्स्यभगवान् ने राजासे कहा कि आजके सातवें दिन महाप्रलय होगा तुम मुझे एक सांपसे एक नावमें बांधदेना और तुम और सप्तऋषीश्वर उसपर बैठजाना तो बचजावोगे-राजाने वैसाहीकिया और बचगये इस भेद को राजाने छिपारक्खा था इस महाप्रलयके पीछे ब्रह्मा और हरिने इस दैत्यको मारा और वेदों को उद्धार किया-

वाराह अवतार ॥

महाप्रलय के अन्त में सर्वजलमयी था उसी में नारायणने एक कमल वृक्षको देखा तो निश्चय किया कि इसके नीचे कोई वस्तु है जिसपर यह स्थितहै इस कारण वाराहरूप धारण करके समुद्र के नीचेगये और पृथ्वीपाई उसके एक टुकड़े को अपने दांतोंपर रखकर ऊपर उठाया और समुद्र के ऊपर रखदिया और जो शब्द उस समय उनके मुखसे निकला वही सामवेदहुआ-और पृथ्वी उठाते समय हिरण्याक्षने रोंका और वाराह भगवान्ने उसको मारा-

जन्मकथा इस प्रकार है कि जब ब्रह्माको कमलसे उत्पन्नकिया और उनको सृष्टि उत्पन्न करनेकी आज्ञाकी ब्रह्माने पूंछा कि सृष्टिको इस कमलपर रहनेकी जगह न मिलेगी और जीवोंको दुःख होगा उसी समय ब्रह्माको छींक आई और नाकसे वाराह भगवान् निकलपड़े यह अवतार सत्ययुग में हुआ-और चौड़ाई। उनकी दशयोजन और ऊँचाई एक सहस्र योजन लिखते हैं-

कूर्म अथवा कच्छप अवतार ॥

यह अवतार सत्ययुग में हुआ-जब दैत्य अधिक बलवान् होगये तो नारायण

ने देवतों से कहा कि मन्दराचल को मथनी और वासुकी की रस्सी बना समुद्र मथो तो जो १४ रत्न उसमें निकलेंगे (दे० रत्न) उनमें से अमृत तुमको पिलाऊंगा जिससे तुम अमर होकर अजय होजावोगे (देखो मोहनी अवतार) मन्दराचलका भार सँभालने के हेतु उस समय भगवानने कच्छप अवतार लिया और उनकी पीठपर पर्वत को रखकर समुद्र को मथा–

जरासंध ॥

वंशावली–चन्द्रवंशावली में देखो–

पिता–बृहद्रथ– माता–दो थीं, भाई–सत्यजित् (सौतेली माता से)–

पुत्र–सहदेव जिसके वंशमें देवापी राजा हुआ जो उत्तराखंड में तप करते हैं और कलियुग के अन्त में उनसे चन्द्रवंशी राजा उत्पन्न होंगे–

कन्या–अस्ति और प्राप्ति जो कंसको व्याही थीं–

बृहद्रथ की बड़ी रानीके पुत्र न होतेथे एकमुनिने एक आम देकर कहा कि इसके खानेसे पुत्र होगा दोनों रानियोंने आधा २ करके खालिया जिससे उनके आधा २ पुत्र पैदाहुआ जरा नामी राक्षसीने उन दो भागों को जोड़कर एक बालक करदिया–इस कारण उसका नाम जरासंध हुआ–

जब श्रीकृष्णने कंसको वधकिया तब जरासंध तेईस २ अक्षौहिणी दल लेकर १७ बार लड़ने को आया परन्तु हारगया अठारहवींबार काबुल के राजा कालयवन को साथ लेकर लड़नेआया तब श्रीकृष्ण गंधमादन पर्वतपर भागगये जहां पर राजामुचुकुन्द (मुचुकुन्द की कथा देखो) सोते थे कालयवन भी चलागया राजा जागपड़े और उनकी दृष्टि कालयवनपर पड़ी और वह भस्म होगया–और जरासंध यदुवंशियों से लड़तारहा श्रीकृष्ण और बलराम पर्वतपर भागगये उसने आग लगादिया श्रीकृष्णने उस अग्नि को बुझाया और द्वारकाजी को चलेगये–

बुद्ध अवतार ॥

एक समय छःवर्षतक अकालपड़ा तो ब्रह्माने रिपुंजय राजासे कहा कि तुम दिवोदासके नामसे पृथ्वीमें राज्यकरो तो यह अकालजावे परन्तु यह ठहरी थी कि देवतालोग पृथ्वीको छोड़देवें इस कारण महादेव को काशी छोड़नापड़ा और दिवोदास (जिसकी स्त्री अनंगमोहिनी वासुकि नागकी कन्याथी) काशी में राज्य करनेलगा इसपर महादेव और देवता विष्णु के पासगये तब विष्णुजी बौद्ध अवतार धारणकर काशी के उत्तरदिशा में जिसको धर्मक्षेत्र कहते हैं ठहरे वहांपर गरुड़ जी पान्यकीर्ति के नामसे प्रसिद्ध होकर बुद्धदेवके शिष्यहुये और बौद्धमत सिखलानेलगे लक्ष्मी और गरुड़ने इस मतका प्रचार इस प्रकारकिया कि दिवो-दास को बड़ा खेदहुआ तब बौद्धजी ब्राह्मणका रूपधरकर राजासे कहा कि महादेव काशीमें फिरआवें तो तेरा क्लेश जाय तब दिवोदासने महादेव का मन्दिर बनवाया और राज्य अपने पुत्रको देकर गंगातीरपर किसी कुयेंमें डूबगया—

गौतमबुद्ध ॥

पिता—शुद्धौदन, माता—मायादेवी, नाना-सुप्रबुद्ध, राजधानी—कपिलवस्तु-
वंश—शाक्यक्षत्रिय, स्त्री—गोपा (दंडपाणि की कन्या)—

बुद्धके जन्मके सातवें दिन उसकी माता मरगई उनका पोषण उसकी मौसीने किया—

एक समय गौतमबुद्ध की सवारी निकली तो रास्ते में वृद्ध पुरुष और रोगी मनुष्य और मृतक शरीरकी गति देखकर वैराग्य धारणकिया और राज्यछोड़ काशी में अपना नया मत चलाया—वैसलीमें जाकर एक ब्राह्मणके शिष्यहुये और मुक्ति मार्ग न पाकर राजमहल में जाकर एक दूसरे ब्राह्मणके शिष्यहुये परन्तु मुक्तिमार्ग को न पाकर फिर अपना पंथ चलाया और इनके तीन शिष्यहुये तिनके नाम

सरिपुत्र कात्यायन और मौदगल्यायन हैं बिहारके राजाको उसके पुत्रने मार-डाला तब बौद्धजी वहां से सरावस्ती को चलेगये-वहांके राजाप्रसेनने बौद्धमत को अंगीकारकिया वहांसे लौटते समय राजमहल और वैसली होतेहुये कुशि-नगढ़ में पहुँचकर प्राण त्याग किया-

कल्की अवतार ॥

अब मगधदेश में विश्वासफाटिक राजा होगा वह सब क्षत्रियों को नाशकर और २ जातियों को राज्यदेगा तब नारायण संभल में एक ब्राह्मण के यहां कल्की नाम से अवतारलेंगे और सब म्लेच्छों का नाशकरेंगे-

रूप-श्वेतवर्ण, वाहन-अश्व, अस्त्र-खड्ग-

जगन्नाथ ॥

राजा इन्द्रद्युम्न (सूर्यका पुत्र) को तपकरने की इच्छाहुई तो मुनियोंने कहा कि जो श्रीकृष्ण को जड़ व्याधने माराहै उनकी अस्थि जो पड़ीहै उसकी मूर्ति बनवाकर उड़ीसा में स्थापित कराइये तो आपको मुक्ति होगी इन्द्रद्युम्न के प्रार्थना करनेपर विश्वकर्माने मन्दिर और मूर्ति बनाना अंगीकारकिया परन्तु यह कहा कि मेरा भेद न खुलनेपावे राजाने कहा कि मैं चौकसी करूंगा-विश्वकर्माने एक रात्रिमें तो मन्दिर बनाया फिर उसी मन्दिर में बैठकर मूर्ति बनानेलगे जब पन्द्रह दिन व्यतीत होगये तो राजाको सन्देह हुआ और विश्वकर्मा को देखनेगये यह जानकर विश्वकर्मा चलेगये और मूर्ति अध बनी रहगई इसपर राजाको खेद हुआ और ब्रह्माके पास गये और कहा कि महाराज इस मूर्तिको विख्यात कीजिये ब्रह्मा सब देवताओं को अपने साथ लेकर पुरीमें आये इस स्थापन में ब्रह्मा पुजारीबने, और मूर्तिका नाम जगन्नाथजी प्रसिद्धकिया-

दूसरी कथा इसप्रकार है कि नारायण लक्ष्मी सहित उड़ीसा के नीलगिरि

पर्वतपर रहतेथे और नीलमाधवके नामसे प्रसिद्धथे और इस भूमिको मोक्षक्षेत्र कहतेथे इन्द्रद्युम्नने दर्शन की अभिलाषा की और अपने पुरोहित के भाई विद्यापति को राह देखने के लिये भेजा जब वह रास्ता देखआये तो राजाने कुटुम्ब समेत नीलमाधवके दर्शनको प्रस्थान किया परन्तु नीलमाधव अन्तर्द्धान होगये राजा निराश होगया तब आकाशवाणी हुई कि तुमको नीलमाधव का दर्शन नहीं होगा लकड़ी की मूर्ति स्थापित करो—नारायणने आपही विश्वकर्मा का रूप धारणकर उस मन्दिर और मूर्तिको बनाया और जगन्नाथ नाम रक्खा—

मरीचिऋषि ॥

पिता—ब्रह्माके मनसे, स्त्री—कला (कर्दममुनिकी कन्या)—
पुत्र—कश्यप, कला—

परीक्षित ॥

दादा—अर्जुन, पिता—अभिमन्यु (सुभद्रासे)
माता—उत्तरा (राजा विराट्की कन्या)—
स्त्री—राजाविराट् की पौत्री, पुत्र—जनमेजय आदि ४ पुत्र—

जब राजा परीक्षित गर्भमें थे और युधिष्ठिर गद्दीपरबैठे तो अश्वत्थामाने युधिष्ठिर आदि पांचों भाइयोंपर ब्रह्मास्त्र चलाया उसीमें से एक अग्नि निकली और उत्तराके उदर में घुसगई परन्तु श्रीकृष्णने गर्भकी रक्षाकी—महाभारत के अन्तमें जब कौरव पांडव का नाशहोगया तो गद्दीपर राजा परीक्षित बैठे जिनके समयमें कलियुग आया राजा कलियुगको मारनेलगे परन्तु उसने राजाको समझालिया तब राजाने उसको कहा कि तू हिंसा, वेश्याके घर, जुआ, चोरी, झूंठ और सोने में रह—एक समय राजा अहेर खेलनेगये और हिंसाकिया कलियुग को घात मिली राजा प्यासेहुये और शमीक अथवा भिंडीऋषि के निकट पानी मांगनेगये

परन्तु उस समय मुनि ध्यान में थे इस कारण सुध न हुई राजा मुनिके गले में मरा सांप डालकर चलेगये मुनिके पुत्र शृंगीऋषिने राजाको शापदिया कि आज के सातवें दिन यही सांप तुझको डसेगा—तब शमीकमुनिने अपने शिष्य कुम्भक को राजाके पास भेजा उसने राजासे शापका वृत्तान्त कहा राजा विरक्त होकर गंगातीरपर शुकदेवजी से श्रीमद्भागवत सुनकर मुक्तहुये उनके पीछे उनका पुत्र राजाहुआ—

परीक्षितने एक सारस्वत ब्राह्मण को गुरु बनाकर अश्वमेधयज्ञ कियाथा—

धृतराष्ट्र ॥

पिता—व्यासजी, माता—अम्बिका—

स्त्री—गांधारी अथवा सौबाली (गंधारदेशके राजा सुबल की कन्या)—

उत्पत्ति की कथा शन्तनु राजाकी कथामें देखो—किन्तु धृतराष्ट्र के पिता अपनी स्त्रीसे आंख मूंदकर भोगकिया इस कारण धृतराष्ट्र अंधे उत्पन्न हुये—

जब पांडु (धृतराष्ट्र के भाई) अहेर खेलनेगये तब व्यासजी आये और गांधारीने उनसे सौ पुत्र मांगा व्यासने मांस मंगाया उसके १०१ टुकड़े किया और रानीको दिया जिससे दुर्योधन आदि १०० पुत्र और एक कन्या दुसहल हुई इन्हीं बालकों का नाम कौरवहुआ—

जब युधिष्ठिर पांचों भाई वनसे लौटे तो दुर्योधन आदिने राज्य न छोड़ा इस से उनमें विरोध हुआ परन्तु धृतराष्ट्रने हस्तिनापुर का राज्य अपने पुत्रोंको दिया और खांडवप्रस्थका राज्य पांडवको दिया—वहींपर उन्होंने इन्द्रप्रस्थ बसाया और रहनेलगे—

दक्षप्रजापति ॥

प्रथम जन्म की कथा— पिता—ब्रह्माके दाहने अंगूठे से—

स्त्री–१ मयना (मेरुपर्वत की कन्या) २ सवर्णा (समुद्र की कन्या और जिससे दशपुत्र प्रचेता नामी उत्पन्नहुये इन प्रचेतों की स्त्री मरिषार्थी–प्रचेता और कंडुमुनि की कथा देखो) ३ वीरनी (वीर प्रजापति की कन्या और जिससे सती अर्थात् उमाका जन्म हुआ)–

दक्षने उमाका विवाह महादेव के साथ करदिया एक समय सभामें दक्ष गये इनको देखकर आदरपूर्वक सब कोई उठे परन्तु महादेव नहीं उठे इस कारण दक्षने बड़ा क्रोधकिया और अपने यहां शिवका भाग यज्ञमें बन्द करदिया सती शिवका निरादर देख यज्ञानलमें भस्म होगई शिवके गणोंने यज्ञविध्वंस किया और वीरभद्रने दक्षका शिर काटलिया परन्तु पीछे शिवने कृपाकरके एक बकरे का शिर जोड़कर दक्षको जिलादिया तब से दक्ष बड़े शिवसेवी हुये तभी से मनुष्य शिवकी पूजा बकरे की भांति बोलकर करतेहैं–

दूसरे जन्म की कथा– पिता–प्रचेता, माता–निम्लोचा–

स्त्री–असिक्नी अर्थात् प्रसूती (पंचजन्य प्रजापति की कन्या)

इसी स्त्रीसे हर्यश्व आदि दशसहस्र पुत्रहुये उनको नारदमुनिने ज्ञानसिखाया कि वह विरक्त होकर घरसे चलेगये और फिर घर नहीं आये तब दक्षने नारद को शापदिया कि तुम एक स्थान पर दो घड़ीसे अधिक न ठहरसकोगे–

तदनन्तर दक्षने उसी स्त्री से ६० कन्या उत्पन्न किया उनमें से दशकन्या धर्म्मको विवाह दिया–

दशोंकन्याओंके नाम–	उनकीसन्तान–	इनकीसन्तान–
१ भानू	ऋषभ	इन्द्रसेन
२ लम्बा	विद्युत्	मेघ
३ ककुत्र	संकट	विकट
४ जामी	स्वर्ग	नन्दप.

५ विश्वा	विश्वेदेव	०
६ साध्या	साध्यगण	अर्थसिद्ध
७ मृतव्रती	इन्द्र, उपेन्द्र	०
८ वसु	अष्टवसु	०
९ मुहूर्ता	मुहूर्ताके देवता	०
१० संकल्पा	संकल्प	काम

दो कन्या भूतको विवाह दिया उसमें एक का नाम था स्वरूपा जिससे गरुड़ और ११ रुद्रहुये-

दो कन्या अंगिराको विवाह दिया उसमें एकका नाम स्वधा था जिससे पितरहुये-

दो कन्या कृशाश्वप्रजापति को विवाह दिया उसमें एक का नाम अरुचि था जिससे धूमकेश हुये-

सत्ताईस कन्या जिनको नक्षत्र कहते हैं (दे० नक्षत्र) चन्द्रमा को विवाह दिया चन्द्रमाने कृत्तिका का निरादर किया इससे दक्षने चन्द्रमाको शापदिया जिससे चन्द्रमाको क्षयीरोग होगया और सब नक्षत्र निस्सन्तान रहीं-

सोलह कन्या कश्यपको विवाहदिया-

उनकेनाम-	उनकी सन्तान-
१ विनता	गरुड़, अरुण
२ कद्रू	सर्पादि
३ पतंगी	पक्षीआदि
४ यामिनी	टिड्डीआदि
५ नेमी	जलचर
६ सरमा	कुत्तेआदि पांच नखके जीव

७ ताम्रा	गृध्र वा बाज आदि
८ क्रोधवशा	बिच्छूआदि
९ मनी	अप्सरा
१० इला	वृक्षादि
११ सुरसा	राक्षस
१२ अरिष्टा	गंधर्वादि
१३ काष्टा	घोड़े आदि खुरवाले जीव
१४ दनु	दानवादि
१५ दिति	हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष
१६ अदिति	सूर्य और त्वष्टा आदि देवता

वशिष्ठ ॥

पिता—ब्रह्माकी श्वाससे, कोई कोई कहते हैं कि मित्रावरुणसे(एकउर्वशीकेपेटसे)—
स्त्री—अरुंधती, पुत्र—शक्ति, प्रपौत्र—पराशर (शुकदेव कथादे०)—

एक समय राजा सौदास अहेरको गया वहां पर दो सिंह (जो राक्षस थे) मिले एकको राजाने मारा दूसरा बचरहा और राजाके पुरोहित अर्थात् वशिष्ठ का रूप धार रसोई में मनुष्यमांस बनाया वही भोजन वशिष्ठ को मिला और मनुष्यका मांस जानकर राजाको शापदिया कि तूभी १२ वर्षतक राक्षस होकर मनुष्य खाया कर इसी राजाको शक्तिने भी शापदिया था कि उसने राक्षस हो शक्ति को भक्षलिया—

एक समय राजानिमि ने गौतम को पुरोहित मान यज्ञ कराया इससे वशिष्ठ ने राजाको शापदिया (निमि क०दे०)—

जब वशिष्ठ राजा सौदासके पुरोहित हुये तो विश्वामित्र ने भी उसी राजा का पुरोहित होना चाहा जिससे दोनोंमें विरोध हुआ वशिष्ठके शापसे विश्वा-

मित्र हंसहुये और विश्वामित्र के शापसे वशिष्ठ भी पक्षीहुये और दोनों युद्ध करने लगे परन्तु ब्रह्माने निवारण किया-विश्वामित्र क्षत्रियसे ब्राह्मण होगये इस कारण और भी विरोध था-

वशिष्ठ राजादशरथके भी पुरोहित थे-राजा श्राद्धदेवको वशिष्ठने पुत्रहेतु यज्ञ कराया था परन्तु रानीकी इच्छानुसार उसके कन्या हुई तब राजाने कहा कि मेरी वाञ्छा तो पुत्रकी थी तब वशिष्ठने उस कन्याको पुत्र कर दिया-

वालि ॥

पिता-इन्द्र, राजधानी-किष्किंधा, स्त्री-तारा, पुत्र-अङ्गद, भाई-सुग्रीव-

ब्रह्माकी आंसूसे एक वानर उत्पन्न हुआ पीछे वह वानर स्त्री होगया उसपर इन्द्र मोहितहुये और उनका वीर्य्य उस स्त्रीके वालपर पड़ा इसीसे वालिहुये और सूर्य मोहितहुये और उनका वीर्य्य उस स्त्री के कंठपर पड़ा उससे सुग्रीव हुये-

वालिके दशसहस्र हाथीका वलथा और इसको ब्रह्माने वरदियाथा कि जो तेरे सम्मुख लड़ने आवे उसका आधा वल तुझमें आजायगा इसीसे रामचन्द्र ने वालिको वृक्षके ओटसे माराथा-

मवर्षणपर्वतपर मतंगऋषिका आश्रम था वालिने दुंदुभि राक्षस को उसी पर्वतपर पटककर मारा और उसका रुधिर मुनिके ऊपरपड़ा तब मुनिने शापदिया कि जो तू इसपर्वत पर फिर आवेगा तो भस्म होजायगा इसी कारण वालि उस पर्व्वत पर नहीं जाता था और सुग्रीव वहांपर वालिके डरसे छिपे थे-

एक समय मायावी राक्षस किष्किंधा नगर में आया रात्रि में बड़ा शब्द किया वालिने उसको खेदा वह भागकर एक कन्दरा में घुसगया वालिभी उस कन्दरा में घुसे और सुग्रीवको कन्दरा के द्वारपर बैठाल दिया और कहा कि जो पन्द्रह दिनमें मैं फिर न आऊं तो जानलेना कि असुरने मुझे मारडाला

सुग्रीव एक मास तक उस कन्दरा पर रहे जब रुधिर की धारा निकली तो निराशहोकर उस गुफाको एक पत्थरसे बन्दकरदिया और नगरको आये मंत्रियोंने सुग्रीव को गद्दीपर बैठालदिया जब वालि उस राक्षसको मारकर आया और सुग्रीवको गद्दीपर देखा तो सुग्रीवको निकालदिया और राज्य और उनकी स्त्री को हरलिया जब सुग्रीव और रामचन्द्र से मित्रताहुई तो रामने वालिको मारा और राज्य सुग्रीव को दे अंगदको युवराज किया–

वालिने एक राक्षस दुंदुभिको मारा (दुंदुभि क० दे०) जिसकी हड्डी कई कोसमें पड़ीथीं–

एक समय वालि स्नान करने लगे और सात तालके फल भोजनार्थ रख दिया उसको एक सर्पने खालिया वालिके शापसे उस सर्पके तनसे सात ताल के वृक्ष बने और रामचन्द्रने उन वृक्षोंको एकही बाणसे छेदा–

जड़भरत ॥

पिता–ऋषभदेव, माता–जयन्ती (इन्द्रकी कन्या)–
स्त्री–पंचजनी (विश्वरूपकी कन्या) पुत्र–सुमंत और धूम्रकेतुआदि ५ पुत्र–

राजाभरत दशसहस्र वर्ष राज्य करके तप हेतु पुलहाश्रम नदी पर जाबैठे अचानक एक सिंहने एक गर्भवती स्त्री का पीछा किया नदी पार होते समय उसके पेट से बच्चा गिरपड़ा तब राजाने उसको पाला एक दिन वह बालक भागकर वन को चलागया उसके शोक में राजाने तन त्याग किया और दूसरे जन्ममें हरिणहुये और उनको पिछले जन्मका वृत्तान्त नहीं भूला उसके पश्चात् एक ब्राह्मणके यहां जन्मलिया और वहां भी भरत नाम रक्खागया और औघड़ रूपमें रहनेलगे उनके भाइयों ने उनको खेतकी रखवाली पर करदिया वहां से एक भील उनको भद्रकाली के बलि हेतु लेगया भद्रकाली ने हरिभक्त जान उस भीलका शिर काटडाला–

एक समय राजा रहूगण ने इनको अपनी शिबिका में लगाया कुछ दूरजाने उपरान्त इन्हों ने रहूगण को ऐसा ज्ञान सिखाया कि वह वनको चलेगये-तदनन्तर भरतका अन्तकाल हुआ-उनके पीछे उनका पुत्र सुमन्त गद्दीपर बैठा और जैनमतका प्रचार किया-इनके पीछे प्रतिहार आदि राजाहुये-

राजा शन्तनु ॥

पिता-प्रतीप (राजाभरतकी बाईसवीं सन्तान हैं और राजाभरत पुरुकी सोलहवीं सन्तान हैं) स्त्री-१ गंगा, २ सत्यवती (मत्स्योदरी)-पुत्र-भीष्मपितामह (गंगासे) विचित्रवीर्य्य और चित्रांगद (सत्यवती से)-

जब सत्यवती कारी थी तब पराशरमुनि के संयोग से व्यासजी हुये-सत्यवती की माता अद्रिका अप्सरा थी-एक समय अद्रिका मछली के रूपमें थी उसी समयमें सत्यवती का जन्म हुआ जिससे उसका नाम मत्स्योदरी हुआ-

इन पुत्रों में भीष्म तो ब्रह्मचारी होगये और चित्रांगद को इसी नाम के एक गन्धर्व ने मारडाला और व्यासजी तप करनेलगे जब विचित्रवीर्य्य निस्सन्तान मरे तो व्यास ने अपनी माताकी आज्ञानुसार उसकी विधवा स्त्रियों (काशी नरेशकी कन्यायों) से विवाह किया तो अम्बिका से धृतराष्ट्र (अंधे) और अम्बालिका से पांडु (रोगी) पुत्रहुये तब सत्यवती ने आज्ञादी कि अच्छे पुत्र उत्पन्न करो-अम्बिका ने अपनी चेरी विलरा को अपने रूपमें व्यासके पास भेजा जिससे विदुर हुये पश्चात् व्यास वन को चलेगये-

तदनन्तर भीष्म इन लड़कों के नामसे राज्यको संभाला जब सयाने हुये तो धृतराष्ट्र तो अंधे थे और विदुर चेरीपुत्र थे इनको राज्य नहीं दिया पांडु को राज्य दियागया-

पाण्डु ॥

दादा-शन्तनु, पिता-व्यासजी, माता-अम्बालिका,

स्त्री–पृथा (कुन्ती) और माद्री–

पृथा कुन्तिभोजके रासवेटी इससे उसका नाम कुन्ती हुआ उसको दुर्वासा ने वरदिया था कि वह चाहे जिस देवता से पुत्र उत्पन्न कराले उसने सूर्य्यको स्मरणकिया और पुत्र हुआ उस पुत्रको नदी में फेंकदिया अधीरत सारथी की स्त्री राधाने उसका पालन किया और उस लड़के का नाम वासुसेन वा राधेय हुआ परन्तु उसको महाबली करके उसका नाम कर्ण रक्खा दूसरानाम वैकर्तन अर्त्थात् विकर्तन (सूर्य्य) के पुत्र कर्णने भीमसेन के पुत्रको मारा परन्तु पश्चात् इस को अर्जुनने मारडाला–

माद्री माद्रदेश के राजा शल्यकी कन्याथी एक समय पांडु अपना राज्य अपने भाई भीष्म और धृतराष्ट्र को सौंप स्त्री सहित वनमें अहेर खेलने गये वहांपर एक हरिण के जोड़ेको (जो मुनिथे) मारा उनका शापहुआ कि तुमभी अपनी स्त्रीकी गोदमें मारेजावोगे–इस कारण पांडु ब्रह्मचारी होगये तब पृथाने धर्मराज को स्मरण किया जिससे युधिष्ठिरहुये और वायुको स्मरण किया जिससे भीम और इन्द्रसे अर्जुनहुये–और माद्रीके अश्विनीकुमारों से दो युगलपुत्र नकुल और सहदेवहुये तदनन्तर पांडु मुनिके शापको भूलकर माद्रीकेपासगये और उसकीगोद में मरगये–तब पांचों भाइयों ने वनसे आकर अपना राज्य धृतराष्ट्र से लेलिया–इसीसे धृतराष्ट्रके सौ पुत्रोंसे शत्रुताहुई और अन्तमें महाभारतका महायुद्धहुआ–

पुत्र–१ युधिष्ठिर (जिसका पुत्र देवक पौरवीसे) २ भीमसेन (जिसका पुत्र घटोत्कच हिडिम्बा स्त्री से) ३ सहदेव (जिसका पुत्र विजय सहोत्रासे)– ४ नकुल (जिसका पुत्र निरमित्र कर्णमतीसे) ५ अर्जुन (जिसका पुत्र अभिमन्यु सुभद्रासे और बभ्रुवाहन और ईरावत उलोपासे)–

अभिमन्युके परीक्षित हुये और ईरावत को उनके नाना (मनीपुरके राजा) ने गोदलिया था–

द्रोणाचार्य्य ॥

स्त्री–कृपी, पुत्र–अश्वत्थामा–

एक ब्राह्मण थे इन्होंने कौरव और पांडवको युद्धविद्या सिखाई महाभारतमें द्रुपदके पुत्र धृष्टद्युम्न के हाथसे मारेगये–

जब सब कौरव मारेगये और दुर्योधन भागगये तो अश्वत्थामा ने कृपाचार्य और कृतवर्माको फाटक पर छोड़ा और पाण्डवदल में घुसकर सबको मारा केवल पांचोंभाई पाण्डव और श्रीकृष्णबचे अश्वत्थामा शिवके अवतार हैं द्रोणाचार्य ने तप करके यह अमर और पाण्डवों का मारनेवाला पुत्र पाया था महाभारत के अन्तमें अश्वत्थामा ने उत्तरा (अर्जुन की बहू) के गर्भमें अस्त्र चलाया परन्तु श्रीकृष्णके चक्रने निवारण किया–

भीम अथवा भीमसेन ॥

माता–पृथा (पाण्डुकी स्त्री) पिता–वायुदेवता (पाण्डुक० दे०)

स्त्री–द्रौपदी (द्रुपदकी कन्या) और हिडिम्बा (हिडिम्बराक्षसकी कन्या)–

भीमसेन महाबली थे इनके मारने को अनेक यत्न कौरवने किया–एकसमय विषदेकर समुद्र में फेंकदिया–वह विष नागोंने हरलिया और नागोंने उसको दश सहस्र हाथी का बलदिया–

एक समय कौरव ने उस घर में जिसमें यह रहते थे आग लगादिया परन्तु अपने भाइयों और माता सहित भाग बचे और वनको चलेगये–वहांपर हिडिम्ब राक्षसको मार उसकी कन्या से विवाह किया–वहांसे व्यास की आज्ञानुसार अभ्यागत का रूपधर एकचक्रनगरको गये और वहांपर बकराक्षसको मारा–

अर्जुन ॥

माता–पृथा (पाण्डुकी स्त्री) पिता–इन्द्र (पाण्डुक० दे०)

स्त्री–१ सुभद्रा (कृष्णकी बहिन) २ उलूपी (अप्सरा) ३ चित्रांगदा (मनी-पुरकी राजकन्या) ४ द्रौपदी (द्रुपदकी कन्या)–

अस्त्र–अग्निका दियाहुआ गांडीवधनुष और शिवका दियाहुआ पाशुपत अस्त्र जिससे अर्जुन कुरु और कर्णको महाभारत में मारा–

अर्जुन विद्यामें महानिपुण थे और नारायण के भक्तथे–एक समय रुक्मिणी के हेतु कदली का फूल लेने कदलीवनमें गये जहांपर हनुमान्‌जी की रखवाली थी दोनों में बड़ा युद्धहुआ पश्चात् यह ठहरी कि अर्जुन बाणोंका पुल बांधें और उसपर हनुमान्‌जी चढ़कर चलेजावें जो वह पुल न टूटे तो अर्जुनकी जीतहो–जब पुल बनगया और हनुमान् जी उसपर चढ़े तो नारायण ने कच्छप बन पुलके नीचे होगये और उनके मुखसे रुधिर निकला पानीमें रुधिर देख हनुमान् जी उतरपड़े और इस भांति नारायण ने दोनोंभक्तों का प्रण बराबर रक्खा–

द्रौपदी के स्वयंवर में बड़े बड़े राजा आयेथे परन्तु अर्जुननेही उस मत्स्य को जो कड़ाहके ऊपर टांगी थी अपने बाणसे नाथा और द्रौपदीको उस स्वयंवर में जीता–जब द्रौपदीको घर ले आये अपनी माताकी आज्ञानुसार अपने पांचों भाइयों की स्त्री बनाया और वह पांचों भाइयोंके यहां बारी बारी में रहतीथी–परन्तु प्रण यह था कि जब एक भाईकी बारीहो तो दूसराभाई द्रौपदी के गेहमें न जावे कदाचित् जावे तो १२ वर्ष वन में रहे–दैवयोगसे एक समय अर्जुनका धनुष द्रौपदीके घर छूटगया और एक दैत्य नगरमें उपद्रव करता था इसकारण अर्जुनको धनुष हेतु उसके घर जाना पड़ा और प्रणके अनुसार वनवासलेना पड़ा और उससमयमें साधुका रूपधर श्रीकृष्णकी बहिन सुभद्राको हर लेआये और उसके साथ विवाह किया–

मंगलग्रह ॥

दूसरानाम–भौम, वर्ण–लाल, भुजा–चार, वाहन–मेष,

भूषण-लालमाला, वस्त्र-लाल, पिता-महादेव, माता-पृथ्वी-

जब सतीजी के देहान्त होने उपरान्त महादेव कैलास को जातेथे तो उनके माथे से पसीना पृथ्वीपर टपक पड़ा उसीसे मंगल उत्पन्नहुये-

बुधग्रह ॥

दूसरेनाम-सर्वज्ञ,धर्मराज,सुगत,भगवान्, वाहन-शशा, पिता-चन्द्रमा, माता-तारा (बृहस्पतिकी स्त्री) स्त्री-इला (मनुकी कन्या) बलि-अपामार्ग, मूर्त्ति-सुवर्णकी धनुष सदृश दो अंगुल चौड़ी, पुत्र-पुरूरवस, जन्मकथा (बृहस्पति की क० दे०)-

पुरूरवस एक उर्वशी पर मोहित हुये उस उर्वशीने कहा था कि मेरे गृहमें नंगे न आना नहीं तो मैं न रहूंगी-उस उर्वशी के पास दो मेंढ़े थे उनको एक गंधर्व चुराये जाता था पुरूरवस उन मेंढ़ोंको छीननेहेतु उर्वशीके घरमें नंगेचले गये इस कारण वह चलीगई परन्तु पुरूरवस उससे सालमें एकबार भेंटकरतेथे और एक पुत्र उत्पन्नहोता था पांचवर्ष उपरान्त पुरूरवसने एक यज्ञ ऐसा किया कि गंधर्व होकर उसके पतिहुये-

शनिग्रह ॥

पिता-सूर्य्य, माता-छाया (सूर्यकी स्त्री,सवर्णाकी चेरी) वर्ण-काला, वस्त्र-काला, वाहन-गृध्र, भुजा-चार, श्वशुर-चित्ररथ-

एक समय शनि शिवके पूजन में लीन थे उसीसमय उनकी स्त्री कामासक्त आई इन्होंने उसकी ओर नहीं देखा-तब उस स्त्रीने शापदिया कि अब जिसकी ओर देखोगे वह भस्म होजायगा-

जब गणेशजी का जन्म हुआ तो शनि उनको देखने गये इनके देखते ही उनका शिर कटकर गिरपड़ा तब शनिने गणेशको जिलादिया (गणेशक० दे०)-

जब विष्णुने शालिग्रामरूप धारण किया तो शनिने वज्रकीट (कीड़) का रूप धारण कर शालिग्रामको बारह वर्षतक दुःख दिया–

समुद्र ॥

पिता–सगरके पुत्र, उत्पत्ति–सगर क० दे०

पुत्र–जलंधर (गंगा के संयोगसे), कमल, चन्द्रमा, शंख, धन्वन्तरि, वाजि, ऐरावत, धनुष, कल्पद्रुम, मूंगा (दे०रत्न)–।

पुत्री–लक्ष्मी, वारुणी, अप्सरा, सीप (दे० रत्न)–

जलंधरराक्षस ॥

पिता–समुद्र, माता–गंगाजी, स्थान–जम्बूद्वीप, (जालंधरनगर), स्त्री–वृन्दा (स्वर्ण अप्सराकी कन्या)–

इन्द्रने शिवका तप किया शिवने उसको महाबली करदिया तब वह शिवसे लड़ने चला–शिवने समुद्र को आज्ञादी कि तू गंगासे संयोगकर उनदोनों के योगसे जलंधर (शिवअवतार) का जन्महुआ कुछदिन उपरान्त जलंधरने इन्द्र को सन्देशा भेजा कि तुम अपना राज्यआदि छोड़ दो जब इन्द्रने राज्य नहीं छोड़ा तो दोनों में युद्धहुआ और देवतों की सहायता को विष्णु आये बड़ा युद्धहोने उपरान्त दैत्योंने रुद्र को बन्दि में कर लिया कुबेर गदाके लगने से व्याकुलहुये–इन्द्रने बलिको मार उसके शरीरको टुकड़े २ करडाला–

जलंधर ने राहु को शिव के पास भेजा कि उनसे कहे कि अपनी स्त्री हम को देदें शिवने नहीं दिया और युद्ध होनेलगा जलंधर ने शिवका रूप धर पार्वतीजी को छलना चाहा परन्तु निराशहुआ–उसी समय में विष्णुने ब्राह्मण का रूप धर वृन्दाको स्वप्न दिखाया कि जलंधर मारागया जब उसको विश्वास न हुआ तो विष्णु ने जलंधर का रूप धारण किया और कुछ दिन वृन्दा के

साथ रहे यह बात ज्ञात होनेपर वृन्दा ने विष्णुको शाप दिया और आप वनमें जाकर भस्म होगई तबसे उस वन का नाम वृन्दावन हुआ—यह वृत्तान्त सुन कर जलंधर ने शिव से युद्ध किया परन्तु शिवने उसका शिर काटडाला—

और्व मुनि ॥

कार्तवीर्य भृगुवंशियों पर इतनी कृपा करता था कि कुछ दिनमें भृगुलोग धनी होगये और राजा की सन्तान कंगाल होगई—एक समय राजाने भृगुवंशियों से सहायता चाही उन्होंने कुछ न किया तब कार्तवीर्य्य क्रोधयुक्त भृगुवंशियोंको ढूंढ़२ मरवानेलगा एक स्त्रीने अपने बालक को अपनी जांघ (ऊरू) में छिपा लिया था—कार्तवीर्य्य इसका पता पागया और उस बालक को मारनेगया तब बालक अपनी माताकी जांघसे निकलपड़ा उसके तेजसे कार्तवीर्य अंधा होगया किंतु वह बालक ऊरू अर्थात् जांघसे उत्पन्न हुआ था उसका नाम और्व रक्खागया—

मनसा देवी ॥

भाई—वासुकि (नागोंका राजा) पति—जरत्कारुमुनि, पुत्र—असित—

जरत्कारुमुनि घूमते २ वहां पहुँचे जहांपर उनके पुरुषे टंगे हुये थे अपने मन में विचार किया कि इनको किसी भांति छुड़ाना चाहिये परन्तु सन्तान विना यह कार्य्य नहीं होसक्ता इस कारण मुनि ने मनसाके साथ विवाहकिया जिससे असित उत्पन्न हुये इन्होंने नागों को राजा जनमेजयसे बचाया क्यों कि यह नागों को ढूंढ़ २ नाश कररहे थे— इस देवीकी पूजा करने से सांपका विष नहीं लगता एक चान्द साहूकार के छः पुत्र सांप के काटने से मरगये तो उसने अपने बड़े लड़के को लोहेके पींजरे में बन्द कर दिया उसके विवाह के दिन उसको सांपने काटा और वह मरगया तब साहूकार ने मनसाकी पूजा की और वह पुत्र जीउठा—

खट्वांग ॥

वंशावली सूर्यवंशकी देखो—

यह अयोध्या का राजा त्रेता के आदि में महाप्रतापी था उन्हीं दिनों में दैत्यों ने देवतों को इन्द्रलोक से निकाल दिया तब खट्वांग की सहायता से देवतों की विजय हुई—देवतोंने वर देना चाहा राजाने कहा हमारी आयु बतला दीजिये देवतों ने बतलाया की चार घड़ी है राजाने कहा हमको शीघ्र अयोध्या में पहुँचादो देवतों ने वैसाही किया—राजाने अपने पुत्रको राज्यदिया और सरयू तट पर बैठ योगाभ्यास से दो घड़ी में वैकुण्ठ को गये—

विदुर ॥

पिता—व्यास, माता—विलरा अम्बालिकाकी चेरी जो पूर्वजन्ममें अप्सराथी—
स्त्री—पारशवी (राजा देवककी कन्या)   भाई—धृतराष्ट्र और पाण्डु—

जब कौरवने पांडवका राज्य लेलिया तो विदुरने धृतराष्ट्रको समझाया परन्तु न माना और दुर्योधनने विदुर को दासीपुत्र कहकर सभासे निकाल दिया तब तीर्थयात्रा को चले गये और लौटकर यमुना किनारे मैत्रेय ऋषि के आश्रम पर बहुत दिन तक रहे—जब उद्धवजी बदरिकाश्रम को जाते थे उन्होंने विदुरसे कृष्णके अन्तर्द्धान होने और कौरवों के नाश होने का वृत्तान्त कहा उसको सुनकर विदुर को बड़ादुःख हुआ—और घर आकर धृतराष्ट्र और गांधारीको ज्ञान सिखा बनको लेगये और जब सब पांडव हिमालयमें गल गये तो विदुरने अपना शरीर प्रभासतीर्थ में त्याग किया—

श्रवण ॥

इनकी स्त्री बड़ी कुटिलथी और इनके अंधे अंधे माता पिता को बड़ा दुःख देतीथी—श्रवणने अपनी स्त्री को मायके भेजदिया और अपने माता पिता को ले

वनको चलेगये श्रवण अपने मातापिता के हेतु एक तालाव में जल लेनेगये ज्योंही तोंवे को पानी में डुवोया उसका शब्द राजा दशरथ ने (जो अहेर खेलते थे) सुना और मृगा समझ बाण संधान किया और श्रवण को बाण लगा जब राजा दशरथ श्रवण पास गये बड़ा शोच किया श्रवणने कहा तुम जाकर मेरे मातापिता को जलपिलादो यह कहकर श्रवण ने तनत्याग किया जब राजा अन्धी अन्धे के पास गये उन्होंने राजा के शब्द से जानलिया कि यह हमारा पुत्र नहीं है पानी को नहीं पिया और राजा को शापदिया कि तुम भी अपने पुत्र के शोक में तन त्याग करोगे और तन त्याग किया--

दुर्वासाऋषि ॥

पिता—अत्रिमुनि, माता—अनसूया,
भाई—विधु (ब्रह्मा के अंशसे) दत्त (विष्णु के अंशसे)-

दुर्वासा ने राजा अम्बरीप को शाप देकर कृत्या को उत्पन्न किया और आज्ञा दी कि वह राजा को मारे (अम्बरीप क०दे०)

परीक्षा हेतु दुर्वासा ने काल को रामचन्द्र के पास भेजा उस ने जाकर रामचन्द्र से कहा कि मैं आपसे एकान्तमें बात चीत करना चाहताहूं परन्तु बात करते समय कोई दूसरा न आवे यदि आवे तो मारा जावे जब बात करनेका समय आया तो दुर्वासा पहुंचे और लक्ष्मण से कहा कि रामचन्द्र से कहाजावे कि दुर्वासा आये हैं जब लक्ष्मण गये तो रामचन्द्रकी प्रतिज्ञानुसार लक्ष्मण को घर छोड़ना पड़ा और सरयू तटपर जा तन त्याग किया-

दुर्वासा ने परीक्षा हेतु श्रीकृष्ण और रुक्मिणी से रथ खिचवाया-

एक समय द्रौपदी तालाव में स्नान करतीथी और कुछ दूरपर दुर्वासा खड़ेथे उनका कोपीन गिरपड़ा और वहगया द्रौपदी ने यह देख अपना वस्त्र फाड़कर

उनको दिया दुर्वासा ने आशिष दिया कि जैसे तूने मेरी लज्जा रक्खी वैसेही तेरी लज्जा ईश्वर रक्खेगा--

एक समय दुर्वासा स्नान करते थे इनको मैला कुचैला देख. गंधर्वों की तीन स्त्रियां हँसीं और मुनि के शापसे चांडाल होगईं--

दुर्वासा के शापसे यदुवंशियों का नाशहुआ-

देवांगना भक्तिन ॥

देवांगनाने वदरीवनमें तप करके ब्रह्मासे वर पाया कि तुझको रामचन्द्र का दर्शन होगा तबसे आकर दक्षिण में एक पहाड़ की गुफामें रहने लगी जब हनुमान्जी सीताके खोजमें जाते थे तो पियासे होकर उस गुफा में गये देवांगना सब वृत्तान्त सुनकर रामचन्द्र के पास प्रवर्षण पर्वत को गईं और दर्शन पाय वहां से फिर वदरीवन को गई-

आत्मदेव ब्राह्मण ॥

यह ब्राह्मण दक्षिण देश में तुंगभद्रा नदी के किनारे रहताथा इसकी स्त्री कर्कशाथी और सन्तान कोई न थी किसी साधु ने एक फलदेकर कहा कि यदि तुम्हारी स्त्री इस फलको खाय तो पुत्रहोगा गर्भ का दुःखसमझ उस स्त्रीने फल अपनी वहिन को दिया परन्तु वह गर्भवती थी उसने फल गायको दिया और अपनी वहिनसे कहा कि यदि मेरे पुत्र होगा तो अपने पति को दिखा देना- उसके धुंधकारी नाम पुत्रहुआ जब आत्मदेव वनको चलेगये तो धुंधकारी ने सबधन वेश्याको देदिया और आप उसी वेश्याकेहाथ मारागया और प्रेतयोनि में पड़गया-उस फल के प्रभाव से उस गाय के पुत्र हुआ और उसके कान गायकेसे थे इस कारण उसका नाम गोकर्ण हुआ-इसने तपकिया और धुंधकारी को श्रीमद्भागवत सुनाकर प्रेतयोनि से उद्धार किया-

वज्रनाभ ॥

महाभारत के अन्त में वज्रनाभ राजा अकेले वचे थे जिसको युधिष्ठिर ने इन्द्रप्रस्थ और मथुराका राज्य सौंपाथा–

मरुतराजा ॥

इस राजा ने बहुत यज्ञकिया और प्रतिदिन ब्राह्मणों को नये वर्तनों में भोजन कराता था और पुराने वर्तनों को गढ़े में गड़वा देताथा–

उद्धव ॥

पिता–स्वफल्क, वंश–यदु–

उद्धव बड़े ज्ञानी और निर्गुण उपासक साधु और श्रीकृष्ण के परममित्र थे और बहुधा उनके साथ २ रहते थे श्रीकृष्ण ने इनको मथुरा से गोकुल में गोपियों को ज्ञान सिखाने भेजाथा गोपियां सगुण उपासक क्योंकर निर्गुण सीखें पश्चात् उद्धव लज्जितहो मथुरा को लौटगये और उनके ज्ञान का गर्व दूरहुआ–

जब महाभारत के अन्तमें श्रीकृष्ण अन्तर्द्धान हुये तो उद्धव वदरिकाश्रम को चलेगये और योगाभ्यास से तन त्याग किया–

सृष्टि ॥

महाप्रलयके अन्त में नारायण ने शेषनाग की छातीपर सोते २ इच्छाकिया तो उनकी नाभि से कमल उत्पन्नहुआ–कमल से ब्रह्मा–ब्रह्मा से सनक सनन्दन सनत्कुमार और सनातन हुये–(ब्रह्मा क० दे०)–

सनकादि ॥

ब्रह्माने सनक, सनन्दन, सनत्कुमार और सनातन को उत्पन्न करके कहा

कि सृष्टि उत्पन्न करो उन्हों ने नहीं अंगीकार किया और चारों भाइयोंने ब्रह्मा से वर मांगा कि हमारी अवस्था सदा पांचवर्ष की बनीरहै और सदा जितेन्द्रिय रहैं इसप्रकार बाल्यावस्था होकर सब जगह इनका गमन था एक समय नारायण के अन्तःपुर में जाते थे जय विजय द्वारपालों ने रोंका और शापित होकर तीन जन्मतक राक्षस हुये (जय विजय क० दे०)–

मृत्यु ॥

पिता–ब्रह्मा–

ब्रह्मा ने मृत्युको उत्पन्नकर उससे कहा कि तू जा जगत् के प्राणियों को मार उसने नहीं अंगीकार किया और तपहेतु वन में चलीगई वनमें नारायणने जा उससे कहा कि तू संसार में जीवों को रोग आदि के मिस से मार परन्तु उन जीवों कि जिनकी आयु पूर्णहुईहो तब उसने अंगीकार करलिया–

राजा विजिताश्व ॥

पिता–पृथु, माता–अरुचि, स्त्री–शिखण्डिनी और प्रसूती–
पुत्र–पवमान, पावक, शुचि (ये तीन शिखण्डिनी से अग्नि के अवतार) और हविर्द्धान (प्रसूती से–हविर्द्धान की स्त्री हविर्द्धानी अग्निकी कन्या)–
पौत्र–प्राचीनबर्हिष आदि छः (हविर्द्धान से और प्राचीनबर्हिष की स्त्री सत्यवती)–
प्रपौत्र–प्रचेता (क० दे०) राज्य–माहिष्मती–

पृथु के पीछे विजिताश्व के राज्य में बड़ा सुखरहा और राज्य अपने चार भाइयोंको बांटदिया–उनके पीछे प्राचीनबर्हिष राजाहुये बहुतदिन राज्य करके नारद के उपदेश से प्रचेता को राज्यदे आप बदरिकाश्रम को चलेगये–

प्रियव्रत ॥

पिता-स्वायम्भुव मनु, माता-शतरूपा-
स्त्री-वर्हिष्मती (विश्वकर्मा की कन्या)-और शान्तिनी (देवतों ने दिया)-
पुत्र-अग्नीध्र आदि १० पुत्र (वर्हिष्मती से) और उत्तम, तामस, रैवत (शान्तिनी से)-
कन्या-यशवती-(वर्हिष्मती से जो शुक्राचार्य को विवाही गई जिससे देवयानी हुई)

राजा प्रियव्रत पहिले राज्य छोड़ तपको गये थे परन्तु ब्रह्मादि के उपदेश से फिर राज्य करने लगे ये चक्रवर्ती राजाथे इन्होंने एक रथ बनवायाथा जिसका प्रकाश सूर्य के समानथा जिससे जहां २ ये जातेथे रात्रिका दिन होजाताथा-

इसी रथपरचढ़ पृथ्वीकी ७ वार परिक्रमा की जिसके पहिया से ७ द्वीप और ७ समुद्र उत्पन्नहुये (जिनके नाम द्वीप और समुद्रों में देखो)-

पश्चात् पिताके समझाने से रथ का चलाना बन्द करदिया और अग्नीध्र को जम्बूद्वीपका राज्यदे स्त्री सहित तपको चलेगये-

अग्नीध्र ॥

पिता-प्रियव्रत, माता-वर्हिष्मती, स्त्री-पूर्वचित्ती अप्सरा-
पुत्र- उत्कल, हिरण्मय, भद्राश्व, केतुमाल, इलावृत, नाभि, किम्पुरुष, भरत, नरहरि-

अग्नीध्र प्रथम राज्य छोड़ तपको गये और ऐसा तपकिया कि इन्द्रने पूर्वचित्ती अप्सराको राजाका तप भंग करने के हेतु भेजा राजा उसपर मोहित होगये और अपने राज्य में आय उसके साथ विवाह करलिया- १० सहस्र वर्ष राज्य करने उपरान्त जम्बूद्वीप का राज्य अपने ९ पुत्रोंको बांटदिया और उन्हीं पुत्रों के नाम से जम्बूद्वीप के उत्कलखण्डआदि ९ खण्ड प्रसिद्ध हुये-और

उनकी स्त्री देवलोक को गई उसी के शोच में अग्नीध्रने प्राण त्यागकिया और उसी अप्सरा से जा मिले-

ऋषभदेव ॥

पिता-नाभि, दादा-अग्नीध्र, माता-मेरुदेवी, स्त्री-जयन्ती(इन्द्रकीकन्या) पुत्र-१०० थे जिनमें नौपुत्र योगीश्वर होगये जिन्होंने राजा जनकको ज्ञान सिखाया और नौपुत्रों ने राज्यकिया और शेषपुत्र तप करनेलगे-

पौत्र-सुमन्त-

ऋषभदेव नारायण का अवतार हैं ये कुछ दिन राज्य करके तप करनेलगे जब इन्द्रने इनके राज्य में पानी नहीं बरसाया तब ऋषभदेव ने अपने तपोबल से मुहँ मांगा जल बरसाया-जिससे इन्द्रने हारमान और इनको नारायणका अवतार समझ अपनी कन्या का विवाह इनके साथ करदिया-

कुछ दिन उपरान्त ऋषभदेवने औघड़ रूप धारण किया और जड़भरत के नामसे प्रसिद्धहुये इन्हींको देख लोगोंने सरावगी (शवाल) मत और जैनमत प्रचलित किया-पीछे ऋषभदेव अग्नि में जलकर वैकुंठको गये और जैनमतका प्रचार उनके पौत्र सुमन्तने अच्छेप्रकार से किया-

भूलोक ॥

राजा प्रियव्रतने भूलोकको सातद्वीप और सात समुद्रों में विभाजित किया है- जिनके नाम नीचे लिखे हैं-

१ जम्बूद्वीप-एक लाख योजनका है इसमें जामुनका वृक्ष है जिस वृक्षसे सोना उत्पन्नहोताहै इसी द्वीपको सगरकेपुत्रोंने खोदा (सगरक०दे०)जिससे सिंहल द्वीप आदि ७ उपद्वीपहुये और इसीद्वीपको अग्नीध्रने अपने ९ पुत्रोंमें बांटदिया जिससे इसखंडके नवखण्डहुये (अग्नीध्र क०दे०)-

जिनके नाम यहहैं-उत्कल, हिरण्मय, भद्राश्व, केतुमाल, इलावृत, नाभि, किम्पुरुष, नरहरि और रमणकखण्ड-

२ पाकरद्वीप-दो लाख योजनका है इसमें पाकरका वृक्ष है उसमें अमृत आदि ७ खण्ड हैं-

३ शाल्मलिद्वीप-४ लाख योजन का है इस में सेमरका वृक्ष और आठ पर्व्वत हैं और इसमें सूर्य नाम आदि ७ खण्ड हैं-

४ कुशद्वीप-आठ लाख योजनका है इसमें कुशका वृक्षहै और सकत आदि सात खण्ड हैं-

५ क्रौंचद्वीप-सोलह लाख योजनका है इसमें क्रौंच पर्वत है और व्यास नाम आदि सात खण्ड हैं-

६ शाकद्वीप-३२ लाख योजन का है इसमें शाकका वृक्षहै और देवद्विज नाम आदि ७ खण्ड हैं-

७ पुष्करद्वीप-६४ लाख योजन का है इसमें कमलका वृक्ष है और कुमरात् आदि ७ खण्ड हैं-

सात समुद्रों के नाम यहहैं ॥

१ क्षारसमुद्र-जम्बूद्वीप में
२ इक्षुरोदधि-पाकरद्वीप में
३ सुरोदधि-शाल्मलिद्वीप में
४ घृतोदधि-कुशद्वीप में
५ क्षीरोदधि-क्रौंचद्वीप में
६ खण्डोदधि-शाकद्वीप में
७ शुद्धोदकोदधि-पुष्करद्वीप में

पर्वतों के नाम ॥

१ सुमेरुपर्व्वत-सोनेका इलावृत खण्डमें है जिसकी ऊँचाई ६४ सहस्रकोश, लम्बाई ३२ सहस्रकोश, चौड़ाई १२८ सहस्रकोशहै-इस पर्वत के चारों

और ४ पहाड़ मन्दर, मेरु, कुमुद औ सुपार्श्व हैं और ४ कुण्ड दूध, शहद, पानी और रसके हैं और ४ वाटिका कुबेर, इन्द्र, वरुण और महादेवकी हैं-पर्वतके शिखरपर ब्रह्मपुरी ४० सहस्रकोश लम्बी और उतनीही चौड़ी है और चारपुरी अर्थात् वरुणपुरी, यमपुरी, इन्द्रपुरी और कुबेरपुरी हैं-रातोदिनमें छः २ घंटेके पीछे सूर्य्यका रथ इन पुरियों में पहुंचताहै-पार्वतीजी के शापसे देवतों को गर्भ रहा जिससे सुमेरु हुआ-

२ लोकालोकपर्व्वत-सातों द्वीपके वाहर है जहांपर सूर्य्य और चन्द्रमा नहीं पहुंचते-५० सहस्रकोश पृथ्वी इसके नीचे दबीहै-

३ गंगोत्तरी-ब्रह्मपुरी से गंगाजी निकलकर सुमेरु पर्वतके नीचे गंगोत्तरी पर गिरती हैं-

४ मन्दराचल-सुमेरु पर्वत के नीचे है-

५ नरनारायण-मन्दराचल और गंगोत्तरी के बीचमें है-

६ चित्रकूट-ज़िला बांदामें है जहांपर वनजाते समय रामचन्द्र ठहरेथे इसको कामतानाथभी कहते हैं जिसकी लोग परिक्रमा करते हैं यहां पवित्र स्थान भरतकूप, पयस्विनी और अनसूयाश्रम हैं-

७ गोवर्द्धन-मथुरा में जिसको श्रीकृष्णजी ने अपनी अंगुलीपर रखलिया था और ग्वालों से उसकी पूजा करवाई थी (कृष्ण क० दे०)-

८ त्रिकूट-लंकामें है इसकी तीन चोटी सोनेकी हैं प्रकाश इसका सूर्य्य के समान है-यह १० सहस्र योजनका क्षीरसागरमें है-

९ मैनाक-समुद्र में छिपाथा समुद्र ने इसको आज्ञा दी कि तू हनुमान्जी को (जब जानकी के खोज में जाते थे) विश्राम दे हनुमान् ने केवल स्पर्श करदिया था-

१० गन्धमादन—जहांपर मुचुकुन्द सोते थे (मुचुकुन्द क० दे०)—

११ प्रवर्षण—जरासंधके डरसे श्रीकृष्ण और बलराम इसपर चढ़गये और जरासंध ने आग लगादी (जरासंध क० दे०)—इसीपर्वत पर वनजाते समय रामचन्द्र ठहरे थे यह किष्किंधानगरके निकट है—

१२ विंध्याचलअर्थात् विंध्य—भारतखण्डके मध्यमें पूर्व पश्चिम चलागयाहै—

१३ द्रोणाचल—क्षीरसागरमें है—

१४ देवकूट—मेरुके पूर्व व दक्षिण में कैलास और करवीर आदि—उत्तर में त्रिशृंग और मकर—

१५ अर्व्बुद अर्थात् आबू—अजमेर में है—

१६ मेकलाचल—अर्थात् सतपुरा जिससे नर्मदा निकलती है—

१७ नीलगिरि—दक्षिणदेशमें है जहां पर काकभुशुण्डि रहतेथे और दूसरा नील-गिरि उड़ीसामें जहाँपर नीलमाधव भगवान् का स्थान है—

नदियों के नाम ॥

जब नरनारायणने विराटरूप धारण किया तो जो उन का एक चरण ब्रह्म-लोक में पहुंचा उस को ब्रह्मा ने विरजानदी के जल से कमंडलु में धोलिया जो जल कमंडलु से गिरा उस से चार नदी निकलीं—

१ धारा—सुमेरुके पश्चिम से निकल समुद्र में मिल गई—

२ धारा—सुमेरु के दक्षिण से निकल समुद्रमें गिरी—

३ धारा—सुमेरु के उत्तर से निकल समुद्र से मिली—

४ धारा—(गंगा) सुमेरु के पूर्वसे निकल समुद्र में मिली जिसको भागीरथी भी कहते हैं (गंगा क०दे०)

५ विरजा—सुमेरु पर्वत पर है—

६ कौशिकी अर्थात् कोसी—जहां पर राजा परीक्षित को शाप हुआ था (परीक्षित क०दे०)
७ सरस्वती—एक सरस्वती तो राजपूतानामें है और दूसरी प्रयाग में गंगा यमुना के संगम में है—
८ तमसा अर्थात् बिसुही—फैजाबाद और सुल्तांपुर के बीचमें है यहां पर वन जाते समय रामचन्द्र का प्रथम वासहुआ—
९ कर्मनाशा—काशी के पूर्व में है (त्रिशंकु क०दे०)
१० कीर्त्तिमाला—द्रविड़देश में है (मत्स्य क०दे०)
११ गंडकी—तुलसी का अवतार है जिसमें शालिग्रामकी मूर्तिपाईजातीहै—
१२ मणिकर्णिका—काशी में जहांपर विश्वनाथ का स्थान है—
१३ वरुणा—काशीमें है जिसपर गिरीश्वरनाथहैं वारुणी का न्हान होताहै—
१४ रेवा अर्थात् नर्मदा—दक्षिणमें है जहांपर शिव के बहुत से लिंग हैं— और इसके सब पत्थर शिवलिंग के तुल्यहैं इसको मेकलसुता भी कहते हैं—
१५ मंदाकिनी अर्थात् पयस्विनी—चित्रकूट में है (अत्रि क०दे०)

नगरऔर देशोंकेनाम ॥

१ पंचवटी—दक्षिण देशमें है जिस में दंडकवनहै वहींपर वन जाते समय रामचन्द्र और जटायु से भेंट हुई—
२ पंपापुर—इसीको नासिक कहते हैं यहीं पर शूर्पणखा की नाक काटीगई—
३ बदरीनाथ अथवा बदरिकाश्रम—हिमालयपर्वतपर है—
४ शृंगवेरपुर—अर्थात् रामचौरा और सिंगरवर गंगातीरपर प्रयागकेपश्चिमहै—
५ कनखल—हरद्वार के पास है यहां पर दक्षने यज्ञ कियाथा—
६ हरद्वार—यहांपर गंगाजी पर्वत से नीचे आई हैं—

७ थानेश्वर अर्थात् हरपुर—यहांपर विष्णु और दधीचि से छुवराजा के हेतु युद्धहुआ—महादेवका स्थानभी है——

८ काशी—दूसरेनाम—वाराणसी,आनन्दवन और मशानक्षेत्र हैं—यह महादेव का मुख्य स्थान है—

९ द्रुपदपुरी—पश्चिम में है (द्रुपद क०दे०)

१० प्रतिष्ठानपुर—प्रयाग के निकट गंगातीरपर झूंसी के निकट है—

११ विदर्भनगर—द्रविड़देशमें है—

१२ अवन्तीपुर—अर्थात् उज्जैन मालवदेशमें है—

१३ जनकपुर—नेपाल में है दूसरा नाम मिथिला (जनक क०दे०)

१४ पाटलीपुत्र—अर्थात् पटना—

१५ मृतिकावती—

१६ नन्दीग्राम अर्थात् भरतकुंड—फैजाबाद और सुलतांपुरके बीचमें है—(भरत क०दे०)

१७ मगधदेश—दूसरा नाम बिहार है—

१८ पाञ्चालदेश—जिसको अब पंजाब कहते हैं—

वनोंके नाम ॥

१ दंडकवन—पंचवटीके निकट—

२ आनन्दवन—काशी के निकट—

३ दारुकवन—जिसको अरब कहते हैं (दारुक क०दे०)

४ मधुवन—चित्रकूट में अत्रिके आश्रमके निकट—

५ कदलीवन—बंगाले में—

६ वृन्दावन—मथुराके निकट है (जलंधर क०दे०)

७ चीरकानिकवन—मन्दराचलपर्वत पर जहां पर मन्दार पुष्प होते हैं—

८ वदरीवन—हिमालय के उत्तर में जहां वदरीनाथ का स्थान है—

९ खाण्डववन—जहांपर मयदानव रहताथा और अर्जुन ने उसको अग्नि से बचाया—

१० द्वैतवन—जिस में पांडव देशनिकाला के पीछे रहे—

स्वर्लोक अथवा खगोल ॥

स्वर्लोक भी भूलोक के वरावर लम्बा चौड़ा है और जैसे भूलोक में द्वीप उपद्वीप और समुद्रादि भाग हैं उसीप्रकार स्वर्लोक में ग्रह,नक्षत्रादि हैं—

नवग्रहों के नाम ॥

१ सूर्य्य—सूर्य्य का रथ सुमेरुपर्वतपर तीन रास्तों से चलता है ऊपर के रास्ते जव रथ जाताहै तो उत्तरायण होताहै और इस अयन में मकर से मिथुन तक अर्थात् छः महीने सूर्यरहते हैं और दिन वड़ा होता है और जव नीचे के अयनसे रथ जाताहै तो दक्षिणायन होताहै और इस अयन में कर्क से धन तक अर्थात् छः महीने रहताहै और दिन छोटाहोताहै—इसप्रकार सूर्य्य का रथ सुमेरुपर्वत के चारोंओर एक दिनरात में ६ करोड़लाख योजन इन्द्रपुरी (पूर्व में) यमपुरी (दक्षिणमें) वरुणपुरी (पश्चिम में) और कुवेरपुरी (उत्तर में) होकर चलता है अरुण सारथी है और साठसहस्र ऋषीश्वर उनके आगे २ पिछले पैरों स्तुतिकरते चलते हैं ऋषीश्वरों के शरीर अंगुष्ठ प्रमाण हैं और रथ का विस्तार २६ लाख योजनहै—

२ चन्द्रमा—चन्द्रमा का रथ ११ लाख योजनहै और सूर्य्य के रथ से ऊंचे २ एकदिन रात में १०८ लाख करोड़ योजन चलताहै—

३ मंगल—मंगल का रथ चन्द्रमाके रथसे एकलाख योजन ऊंचे रहताहै—

४ बुध—बुध का रथ मंगल के रथ से एकलाख योजन ऊंचे रहताहै—

५ बृहस्पति-इनका रथ बुधके रथसे एकलाख योजन ऊपर रहताहै—

६ शुक्र—इनका रथ बृहस्पति के रथसे एकलाख योजन ऊपर चलताहै—

७ शनैश्चर-इनका रथ शुक्रके रथ से एकलाख योजन ऊपर चलताहै—

८ राहु—इनका रथ शनैश्चर के रथ से एकलाख योजन ऊपर चलताहै, रथ का विस्तार १७ लाखयोजनहै और जब सूर्य्य और चन्द्रमा के वरावर आजाता है तो ग्रहणहोताहै—

९ केतु—

राशि वा लग्न बारहहैं—उनके नाम यहहैं—

मेप, वृप, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या तुला, वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन—

ध्रुवतारा—ध्रुव भक्तको अचल स्थान मिला (ध्रुवक०दे०) और सदा उत्तर में दिखाई देताहै—इस तारेका आकार सुइसकासा है इससे दूसरा नाम शिशुमार है—

सप्तऋषीश्वर—तारारूप हैं और ध्रुवके आसपास घूमते हैं—उनके नाम यह हैं—वशिष्ठ, भृगु, कश्यप, अंगिरा, अगस्त्य, अत्रि, पुलह—

नक्षत्र—२७ हैं, और विना आश्रय वायु के सहारे से ध्रुवके आसपास घूमते हैं—चन्द्रमा की स्त्री हैं और दक्ष की कन्या हैं (दक्षक०दे०)—उनके नाम यह हैं—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेपा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा, मूल, पूर्वापाढ, उत्तरापाढ, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिप, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभाद्रपद, रेवती—

लोक ॥

लोक—१४ हैं उनमें सात ऊपर और सात नीचे हैं ऊपर के सात लोकों में

हरएक लोक ५० कोटि योजन है और उनके नाम यह हैं--

१ भूलोक-जिसमें मनुष्यों का राज्य है-(भूलोक दे०)

२ भुवर्लोक-जिसमें ७ उपलोक हैं-पिशाचपुर, गुह्यकलोक, गन्धर्व्वलोक, विद्याधरलोक, सिद्धलोक, अप्सरालोक, राहुलोक-

३ स्वर्लोक-जिसमें यह उपलोक हैं-सूर्यलोक, चन्द्रलोक, ग्रहलोक, नक्षत्रलोक, ऋषिलोक, ध्रुवलोक-

४ महर्लोक-देवतों का राज्य है-

५ जनलोक-भृगुआदि मुनि वहां रहते हैं-

६ तपलोक-तपस्वियों को तप उपरान्त यहां रहना होताहै-

७ सत्यलोक-ब्रह्मा और वेदपाठी और मकरस्नानकरनेवाले इसलोकमें रहतेहैं-

नीचे के सातलोक जिनमें हरएक का विस्तार १० सहस्र योजन है यहहैं-

१ अतल-इसमें मयदानवका राज्य है विद्या इसमें इन्द्रजाल है-

२ वितल-मयके बेटेका राज्य है विद्या इसमें भानमती है-वहींपर हाटकेश्वर हैं जिनके वीर्य से देवतों के लिये सोना उत्पन्न हुआ-

३ सुतल-राजाबलिका राज्यहै-

४ तलातल-त्रिपुर दानव राज्य करता है-

५ महातल-काली वा तक्षक वा कद्रू आदि सर्पों का राज्य है-

६ रसातल विराट् दानवका राज्य है-

७ पाताल-शेषनाग और वासुकिआदि नागोंका राज्य है-

नरक॥

नरक सुमेरुपर्वत से ९९ योजन दक्षिणओर धरती के नीचे पानी के ऊपर हैं

धृत, पुष्टि आदि चारों वर्णके पितर (क०दे०) उनके द्वारेपर बैठकर अपने २ परिवार के लोगोंको बुरेकर्मों से रोका करते हैं–नरक २८ हैं परन्तु कोई २ कहते हैं कि इक्कीसही हैं अर्थात् अन्तके सात छोड़कर उनके नाम यहहैं–तामिस्र, लोहदण्ड, महारौरव, शाल्मल, रौरव, कुड्मल, पूतिक, भयंकर, प्राणरोध, कालसूत्र, संघात, तापन, ककोल, संजीवन, महापथ, विशसन, अवीचि, कुम्भीपाक, असिपत्र, पतन, अग्निमंथन, क्षारकर्दम, राक्षसभोजन, शूलप्रोत, दन्दशूक, घोर, अवनिरोधन, सूचीमुख–

सविता देवता ॥

स्त्री–पृथ्वी, पुत्र–अग्निहोत्रादि तीन, कन्या–सावित्री आदि तीन–

गजेन्द्र ॥

पूर्व जन्ममें यह इन्द्रद्युम्ननामी राजाथा इसके यहां अगस्त्यमुनि आये और इसनें निरादर किया और उनके शापसे राजा हाथी होगया–

बल इसके एक सहस्र हाथीकाथा–स्थान रहने का त्रिकूटपर्वत है–

एक समय किसी तालाब में कुटुम्बसमेत जल पीनेगया एक ग्राह ने पकड़ लिया बहुत यत्नकिया परन्तु उसकी टांग नहीं छूटी तब उसके कुटुम्बवाले भागगये तो इसने परमेश्वर का ध्यानकिया परमेश्वर ने हरिरूप धारणकर ग्राह को मार इसका उद्धार किया–ग्राह बोला कि मैं पूर्वजन्ममें गन्धर्वथा देवलऋषिको स्नान करते समय मैंने ग्राहरूप धरकर खींचा और मुनिके शापसे मैं ग्राह होगया पीछे मुनिने दयाकरके आशिष दिया कि तू नारायणका दर्शन पाय फिर गन्धर्व तन पावेगा–

मोहिनी अवतार ॥

जब देवासुरके समुद्रमथन से अमृतआदि १४ रत्न निकले (कच्छप क०दे०)

तो अमृतका घड़ा दैत्यों ने लेलिया और देवतों को न देना चाहा—नारायण ने मोहिनी अवतार धारणकर और असुरोंको अपने रूपसे मोहितकर उनसे अमृत लेलिया और कहा कि तुम सब बैठजाव हम अमृत सबको बांट देवें पहिले देवतोंकी ओरसे बांटने लगे तब राहुने देवताका रूपधर अमृतपीलिया चन्द्रमा ने बतलादिया तब मोहिनी ने उसका शिर काटडाला उसके शिरसे राहु और धड़से केतु होकर दोग्रह कहलाये—पीछे कालनेमि माली और सुमाली दैत्य लड़ने आये उनको भी मोहिनी ने मारा तत्पश्चात् अन्तर्धान होगये—

श्राद्धदेव अर्थात् वैवस्वतमनु ॥

सूर्य्यवंशावली देखो—

पिता—सूर्य्य, स्त्री—श्रद्धा—

इनके सन्तान न होती थी वशिष्ठने यज्ञ कराया तो उसकी स्त्री की इच्छानुसार उसके कन्या हुई परन्तु पीछे राजाकी इच्छानुसार वशिष्ठ ने उस कन्याको पुत्र बनादिया और नाम उसका सुद्युम्न रक्खा गया—

एकसमय सुद्युम्न अपने साथियों समेत इलावृतखण्ड के अम्बिकावन में अहेर खेलने गया वहां सबके सब स्त्री होगये क्योंकि वह वन शिवका विहारस्थलथा और शिवकी आज्ञाथी किजो कोई इस वनमें आवेगा वह स्त्री होजायगा—जो स्त्री होगये उनको गन्धर्व लेगये अकेला सुद्युम्न रहगया वह घूमते घूमते बुध के पास गया और उनसे गन्धर्वविवाह हुआ जिससे पुरूरवा पुत्र हुआ (बुध क० दे०)—वशिष्ठजी के कहने से शिवने दयाकरके सुद्युम्न को आशिषदिया कि सुद्युम्न १५ दिन स्त्रीरहै और १५ दिन पुरुष रहै—पश्चात् सुद्युम्न पुरूरवा को ले राज्य में आया १५ दिन राज्य करता था और १५ दिन रोगके मिस घरसे नहीं निकलता था—इससमय में उसकी रानी से तीन पुत्रहुये इन्हीं पुत्रोंको

दक्षिण का राज्य में जिससे सूर्य्यवंशी राजाहुये--सुद्युम्न ने अपनी गद्दी पर पुरूरवाको बैठाला जिससे चन्द्रवंशी राजाहुये और आप विरक्तहो मुक्त हुआ श्राद्धदेवने कुछ दिन तप करके फिर १० पुत्र उत्पन्नकिये उनमें से–१ इक्ष्वाकु–२ पृषन्धर जो वशिष्ठ की गौवें चराता था एक दिन गायको बाघने पकड़ा इसने बाघको तलवार से मारा उस बाघका कान कटगया और उसी तलवार के लगने से वह गाय मरगई तब वशिष्ठ के शापसे वह अहीर के यहां जन्मे और वन में हरिभजन करके भस्महोगये–३ कवि यह परमहंसहोगये–४ करूष इनसे कारूषी क्षत्रिय हुये–५ दृष्टिधृक् जिससे धार्ष्ट क्षत्रीहुये और पीछे से वे लोग ब्राह्मण होगये–६ नृग इनके वंश में सुमन्तसे लेकर अग्नि तक क्षत्रियरहे पीछे अग्निकी सन्तान ब्राह्मण होगई–७ नभग इनसे धर्म्मात्मा सन्तानहुई इसके वंश में तृणविन्दु की अलम्बुषा अप्सरा से इड़विड़ा कन्याहुई जो विश्रवा को व्याही गई जिससे कुबेरहुये और नभग के शाल पुत्रसे हेमचन्द्र, सोम आदिराजाहुये–८ शर्याति जिससे सुकन्या हुई और च्यवनमुनिको व्याही गई–९ वह्निक ये विद्या पढ़ने चलेगये उसी समय में उनके भाइयों ने राज्य आपस में बांटलिया और वह्निकका भाग न लगाया तब पिताने कहा कि अंगिरस की यज्ञ कराकर जो शेषधन बचे वह वह्निक को दियाजाय वह्निक चक्रवर्त्ती राजाहुआ–

जल ॥

दूसरेनाम–वारि, पंक, नीर, तोय, पय–

जलज–कमलको कहते हैं–

जलसुत–जोंक (जिसका भक्ष्य रुधिर है)–

दिक्पाल ॥

दिशा	दिग्गज	दिग्गजों की स्त्री	दिक्पाल
पूर्व	ऐरावत	अभ्रमु	इन्द्र
आग्नेयकोण	पुण्डरीक	कपिला	अग्नि
दक्षिण	वामन	पिंगला	यमराज
नैर्ऋत्यकोण	कुमुद	अनुपमा	नैर्ऋत्य
पश्चिम	अंजन	ताम्रकर्णी	वरुण
वायव्यकोण	पुष्पदन्त	शुभ्रदन्ती	पवन
उत्तर	सार्वभौम	अंगना	कुबेर
ईशानकोण	सुप्रतीक	अंजनावती	ईश

इन्द्रिय ॥

इन्द्रिय दशहैं पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रिय और १ अन्तर इन्द्रिय है पांचों ज्ञानेन्द्रियों के नाम यह हैं और क्रमसे उनके स्वामी भी लिखे हैं–

इन्द्रिय–१ चक्षु, २ श्रोत्र, ३ त्वचा, ४ रसना, ५ घ्राण–

स्वामी–१ सूर्य्य, २ दिशा, ३ पवन, ४ वरुण, ५ अश्विनी कुमार–

पांचकर्मेन्द्रिय के नाम और क्रमसे उनके देवता यह हैं–

इन्द्रिय–१मुख, २ हाथ, ३ पांव, ४ गुदा, ५ लिंग–

देवता–१ अग्नि, २ इन्द्र, ३ विष्णु, ४ मित्र, ५ ब्रह्मा–

अन्तरइन्द्रिय–मनहै जिसका देवता चन्द्रमा है–

अवस्था ॥

अवस्था ४ हैं–१ जाग्रत्, २ स्वप्न, ३ सुषुप्ति, ४ तुरीय–

अवस्था ३ हैं-बाल्यावस्था, युवावस्था और वृद्धावस्था-

दुर्गा ॥

दुर्गा नव हैं-काली, कात्यायनी, ईशानी, चामुण्डा, मुंडीरमर्दनी, भद्रकालिका, भद्रा, त्वरिता और वैष्णवी-

दुर्गा-नाम इसकारण हुआ कि इन्हों ने दुरदानव के पुत्र दुर्गको मारा जिसने ब्रह्माके वरसे इन्द्र और सूर्य्य आदि देवतों को जीतलियाथा-

दशभुजा-रूपधारणकरके शुम्भराक्षस और उसके सेनापति धूम्रलोचनको हना-

सिंहवाहिनी-(भुजा-चार, वाहन-सिंह) रूपधारण करके चण्ड और मुण्ड राक्षसों को भक्षण करलिया-

महिषमर्दनी-रूपसे महिषासुरको वधकिया-

जगधात्रिनि-रूपसे असुरदल संहार किया (भुजा-चार, वाहन-सिंह, अस्त्र-गदा और धनुषबाण)—

काली-रूपसे (चंडीदेवी की सहायता से) रक्तबीज असुरको मारा जब रक्त-बीजका रक्त पृथ्वीपर गिरताथा तो अनेक असुर उससे उत्पन्न होतेथे-इसकारण काली ने उसका रक्त अपने मुखमें लेलिया और चण्डी ने उसको मारडाला-

मुक्तकेशी-रूपधारणकर असुर वधकिया- (भुजा-चार, अस्त्र-खड्ग, और शिवकी छातीपरखड़ी)-

तारा-रूपधर शुंभ दैत्यको मारा-

छिन्नमस्तका-रूप से निशुम्भराक्षसकोमारा (वर्ण उनका गोरा और नंगी, वेशिर, मुंडोंकीमाला पहिनेहुये शिवकी छातीपर सवार हैं)-

जगद्गौरी-जब राक्षसों को मारचुकीं तो शंख, चक्र, गदा और पद्म लियेहुये यह रूपधारणकिया और देवताओं ने उनकी स्तुतिकी-

प्रत्यङ्गिरा–रूपधारकर बलि और दानलेती हैं–

अन्नपूर्णा–जब महादेव गंजेड़ी भंगेड़ी होगये तो पार्वतीजी ने उनको भोजनदेना बन्द करदिया और महादेव भीखमांगने निकले परन्तु कहीं भिक्षा न पाकर लौट आये और पार्वती ने भोजनदिया महादेव मारे प्रेमके पार्वती से मिले और पार्वती उसीसमय से अर्द्धांगी होगईं–

गणेशजननी–इनकी पूजा दक्षिणवाली स्त्रियांकरती हैं–

कृष्णक्रोना– रूपधर नागनाथते समय श्रीकृष्ण को सहायहुई–

कात्यायनी–जब महिषासुर ने सब देवताओं को पराजयकिया तब ब्रह्मा विष्णु और महेश आदि देवतों ने अपने २ नेत्रों से ज्वाला उत्पन्नकिया और उसका नाम कात्यायनी रक्खा और सब देवतों ने उनको अस्त्रदिये– शिवने त्रिशूल, विष्णुने चक्र, वरुणने शंख, अग्निने सांगी, वायुने धनुष, सूर्यने वाण और तरकश, इन्द्रने वज्र, कुबेरने गदा, ब्रह्माने माला और कमण्डलु, कालने खड्ग और ढाल, विश्वकर्म्मा ने फरसा आदि अस्त्र दिये यह अस्त्रले कात्यायनी विंध्याचलको चलीगईं और राक्षसों से युद्धकर विजयपाई–

तीर्थोंकेनाम ॥

१ नेत्रसरोवर–यह सरोवर गंगा के किनारे पर है जब सतीजी भस्महोगईं (दक्षक०दे०) तो शिवके आंसू इसी सरोवरमें गिरे–

२ स्कन्दतीर्थ–इस स्थानपर तारक असुर और स्वामिकार्तिक से युद्ध हुआ था (तारक क०दे०)–

३ कपालमोचन–यह काशी में है यहां पर भैरवनें ब्रह्माका शिरकाटकर गिरा दिया था–

४ दंडपाणि—काशी में हरिकेशभक्त का स्थानहै—

५ शिवगयाख्य—एकसमय शिव विष्णुके पास गये और वहांपर शिवकी कृपासे गोलोक की गौवों के थनों से दूध टपका उससे कपिलाह्रद कुंड उत्पन्नहुआ—

६ काशीमें तीर्थों के नाम—दंडाघाट, मन्दाकिनी, हंसक्षेत्र, ऋणमोचन, दुर्वासा, कपालमोचन, ऐरावतह्रद, मैनकुंड, गंधर्वाप्सरासाख्य, वृषपति, वैतरणी, ध्रुवतीर्थ, पितृकुंड, उर्वशीह्रद, मथोदकतीर्थ, दक्षिणीह्रद, पिशाचमोचनकुंड, मानसर, वासुकिह्रद, सीताह्रद, गौतमह्रद, दुर्गतिहर—

७ सरमवतीर्थ—भुवनेश्वरनाथ के पास है—

८ हत्याहरणातीर्थ—नैमिपारण्य में है जहांपर रामचन्द्रकी हत्या (जो रावण के मारनेसे हुईथी) नाशहुई—

९ ब्रह्महत्याहरतीर्थ—रेवा अर्थात् नर्मदाके तटपर नन्दिकेश्वरके पासहै जहां पर युधिष्ठिरकी हत्या नाशहुई क्योंकि उन्होंने अपने कुटुम्बको माराथा—

१० नीलशैलपरतीर्थ—रक्तजलतीर्थ, शिवतीर्थ, कौमुदीतीर्थ, कुब्जाम्रतीर्थ, पूर्णतीर्थ, अग्नितीर्थ, वापीतीर्थ—

११ शूकर खेत अर्थात् वाराहक्षेत्र—

१२ प्रयागजी में मुख्य स्थान—वेणीमाधव संगम पर, अक्षयवट, भारद्वाज आश्रम—

१३ चित्रकूटमें मुख्य स्थान—कामतानाथ, लक्ष्मणपहाड़ी, हनुमान्धारा, पयस्विनी, अनसूया, भरतकूप—

१४ मथुरा में—वृन्दावन, गोकुल, बरसाने, गोवर्द्धन, नन्दगांव—

१५ द्वारकाजी—(काठियावारमें)—गोमती—

१६ रामेश्वर-(दक्षिणमें)-
१७ जगन्नाथजी-(उड़ीसामें)-
१८ अयोध्याजी-हनुमान् गढ़ी, सुग्रीवटीला, जन्मस्थान, नागेश्वरनाथ, लक्ष्मणकिला-

सूर्यवंश

नारायणकी नाभिसे-
|
कमल
|
ब्रह्मा
|
मनु
|
मरीचि
|
कश्यप
|
सूर्य्य
|
श्राद्धदेव (क्र० दे०)
|

पुत्र-इक्ष्वाकु, नभग, धृष्टि, शर्याति, नरिष्यन्त, अंशु, नृग, दिष्ट, करूष, पृषध्र-
कन्या-इला जो वशिष्ठकी आशिष से पुत्रहोगया उसका नाम सुद्युम्न हुआ-
(श्राद्धदेव क्र० दे०)-

इक्ष्वाकु (क० दे०)-

पुरंजय, गलयत्तादि १०० पुत्र (अयोध्याके राजा)-

पृथु आरस्वत (शावस्त)

नभग (श्राद्धदेव क० दे०)-

अम्बरीष इनके वंश में सुमंत

तृणबिन्दु

शालकेतंशां इडविडा (विश्रवाकी स्त्री कुबेर क० दे०)-

हेमचन्द्र शामद आदि

धृष्ट (श्राद्धदेव क० दे०)-

धार्ष्टक

शर्याति (श्राद्धदेव क० दे०)-

आनर्त

सुकन्या (च्यवनकी स्त्री)-

नृग (श्राद्धदेव क० दे०)-

सुमन्त

कपिल (कुवलयाश्व वा धुन्धमार) अयोध्याका राजा
|
दृढ़ाश्व
|
निकुम्भ
|
युवनाश्व इनके कुक्षिसे
|
मांधाता (त्रसदस्यु)—
|
अम्बरीष | पुरुकुत्स | मुचकुन्द (क० दे०)—

सगर
|
पंचजन्य (असमंजस)
|
अंशुमान
|
दिलीप
|
भगीरथ
|
ऋतुपर्ण (सुदास)

- अश्मक
  - भौलक
    - खट्वांग
- कल्माषपाद
  - अनुपर्ण
    - मित्रसह
      - सर्वविशर्म
        - अनरण्य
          - मंडिद्रुम
            - निगघ (खट्वांग)
              - दिलीप (दीर्घबाहु)
                - रघु
                  - अज
                    - दशरथ

दशरथ

- राम (क० दे०)
- लक्ष्मण (क० दे०)
- भरत (क० दे०)
- शत्रुघ्न (क० दे०)

चन्द्रवंश

ब्रह्माके नेत्रसे
|
अत्रि
|
चन्द्रमा
|
बुध
|
पुरूरवा
|
आयुआदि छःपुत्र
|
जह्नु
|
गाधि
|
सत्यवती (ऋचीककी स्त्री) — विश्वामित्र (क० दे०)

सत्यवती
|
जमदग्नि
|
परशुराम आदि ४ पुत्र

विश्वामित्र
|
१००पुत्र (विश्वामित्र क० दे०)

पुरूरवा के वंशमें नहुष
|
ययाति
|
यदु — तुरवसु — अनु — द्रुह्य — पुरु

यदुके वंशमें वृष्णिहुआ (अमूर क० दे०)—

पुरुके कई पीढ़ी पीछे

दुष्यन्त

भरत

वितथ के कई पीढ़ी पीछे

रन्तिदेव

गर्ग (इनके वंशवाले ब्राह्मणहोगये)

पुरुके वंशमें हस्ती

- अजमीढ (इनके वंशवाले ब्राह्मण होगये)
  - मुद्गल
    - दिवोदास
      - द्रुपद
        - धृष्टद्युम्न
    - अहल्या (गौतमकी स्त्री)
      - शतानन्द
        - सत्यव्रती
          - कृपा
          - कृपी (इसको राजा शन्तनु उठालेगये)
  - वृहद्रथ
    - सजित
    - जरासंध
      - सहदेव
        - देवापी (कलियुगके अन्त में इससे चन्द्रवंश फिर होंगे)
      - अस्ति
      - प्राप्ति (कंसकी स्त्री दोनों कन्या)
- पुर्मीढ
- दुर्मीढ

शन्तनु (क० दे०)

चित्रांगद विचित्रवीर्य व्यास भीष्म सल

धृतराष्ट्र पाण्डु विदुर दिवोदास (कौरव)

दुर्योधन आदि १०० पुत्र दिलीप

युधिष्ठिर अर्जुन भीम नकुल सहदेव

देवक अभिमन्यु घटोत्कच निर्मित्र विजय

परीक्षित वभ्रुवाहन इरावत

जनमेजय आदि ४ पुत्र

यह मनीपुर की गद्दीपर बैठा अर्थात् अपने नानाकी गद्दीपर

कई पीढ़ी पीछे निमिराजाहुआ और गद्दी छूटगई—

इति ॥

श्रीमद्वाल्मीकीयरामायण सटीक
पत्रानुमा क़ीमत १५)

विदित हो कि यह पत्रानुमा वाल्मीकीयरामायण जो कि अब की वार मालिक मतवाने छपाकर मुद्रित की है वह बहुतही अनुपम होकर संदर्शनीयहै कि जिसका भाषानुवाद धनावली ग्रामनिवासि रामचरणोपासि पण्डित महेशदत्त ने किया व जिस का संशोधन भी संस्कृत प्रतिसे उन्नाम प्रदेशान्तर्गत गुण्डाग्राम निवासि पण्डित सूर्यदीनजी ने किया है इसमें प्रत्येक श्लोकों का अर्थ अन्वयरीति से कहागया व प्रत्येक पदों व अक्षरों का जैसा अर्थ होना चाहिये था वैसाही छपाहै यद्यपि मुम्बई आदि नगरों में इसके बहुत से अनुवादहुए हैं तो भी वह इसके समान नहीं होसक्ते हैं क्योंकि उक्तनगरों के छपेहुए अनुवादों में कहीं २ अन्वय रीति से अर्थ मिलता व कहीं २ मनमाना देख पड़ता है इस भेदको विद्वान् लोगही समझसक्ते हैं इस हमारे अनुवाद में शुद्धता, छपाई, रोशनाई, काग़ज़ आदि बड़ी सफ़ाई के साथमें हैं इसकी सरल हिन्दी भाषा सर्वदेशवासियों के समझ में आसक्ती है जिसकी भूमिका सकलजनतोषिका बनी है व जिसके प्रत्येक सर्गों का सूचीपत्र भी बहुत ही उत्तम रचाया है केवल इसीसेही सर्वसाधारण जन रामायण की पारायण बांचसक्ते हैं-इसकी उत्तमता लेखनी से बाहर है अहो ग्राहकगणो ! इसके ख़रीदने में विलम्ब मत करो क्योंकि विलम्ब होने में सिवाय पछिताने के

और कुछ हाथ नहीं लगता है आशा है कि सर्व महाशयजन अवश्यही इसको देखेंगे और इसकी एक २ प्रति खरीदकर अपने घरको सुशोभित करेंगे अथेकिमधिकं वहुज्ञेष्विनत्यलम् ॥

श्रीमद्भागवत भाषाटीका संयुक्त क़ी० ७) पु०

इस ग्रन्थ के उत्तम होने में कदापि सन्देह नहीं है—इसका भाषा तिलक ब्रज बोली में वहुतही प्याराहै आशाय प्रत्येक श्लोकों का है क्यों न हो इसके तिलककार महात्मा ब्रजवासी अङ्गदजी शास्त्री हैं--यह तिलक ऐसा सरलहै कि इसके द्वारा अल्पसंस्कृतज्ञ पुरुषों का पूरा कार्य निकल सक्ता है--संस्कृतपाठक भी इससे श्लोकों का पूरा आशय समझ सक्ते हैं इसवार यह ग्रन्थ टैपके अक्षरों में उम्दा काग़ज़ सफ़ेद चिकना में छपा गया है और विशेष विद्वान् शास्त्रियों के द्वारा शुद्ध कराया गया है जिससे वम्बई की छपीहुई पुस्तक से किसी काम में न्यून नहीं है उम्दा तसावीर भी प्रत्येक स्कन्ध में युक्त हैं—आशाहै कि इस अमूल्यरत्न के लेने में महाशय लोग विलम्ब न करेंगे मूल्य भी इसका स्वल्प रक्खा गया है ॥